

आर.एन.आई. नं. 3653/57  
मुद्रण तिथि 5 से 8 जून, 2023  
डाक प्रेषण तिथि 10 जून, 2023

वर्ष : 81 अंक : 06  
आषाढ़, 2080 मूल्य : ₹ 10  
पृष्ठ संख्या 104

डाक पंजीयन संख्या Jaipur City/413/2021-23  
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2021-23  
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

# जिनवानी

जून, 2023



Website : [www.jinwani.in](http://www.jinwani.in)

स्वयं की गन्दी आदतों को बदले बिना  
सुख एवं शान्ति की आशा रखना भूल है ।

**अंक सौजन्य**

॥ जय गुरु हीरा ॥

श्री महावीराय नमः  
श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिम्यो नमः  
॥ जय गुरु महेन्द्र ॥

॥ जय गुरु मान ॥

बाहरी विषमता दूर करने मात्र से ही शान्ति नहीं होगी, उससे कुछ समस्याएँ हल हो सकती हैं, परन्तु शान्ति के लिए भीतरी समता आवश्यक है।

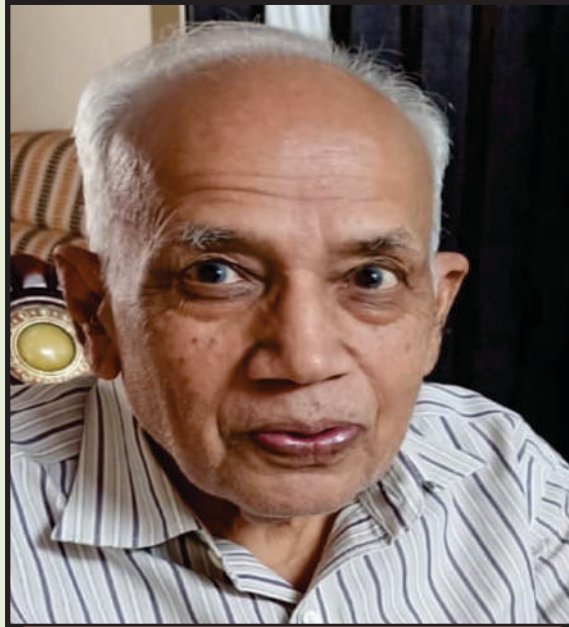
**दूसरों को बदलने की अपेक्षा स्वयं को बदलें, यही श्रेष्ठ है।**

-आचार्यश्री हस्ती

-आचार्यश्री हीरा

**सरलहृदय, अनन्य गुरुभक्त श्रावक श्रेष्ठ**

**श्री भागचन्द्रजी सेठ**



जन्म : शरद पूर्णिमा सम्वत् 2000, 14 अक्टूबर, 1943  
स्वर्गवास : अक्षय तृतीया सम्वत् 2080, 23 अप्रैल, 2023

**:: श्रद्धावन्त ::**

धर्मसहायिका : श्रीमती राजदुलारी सेठ  
सुपुत्र : हेमेश सेठ (हाँगकाँग)  
अनन्त सेठ (जयपुर)  
उपनीश सेठ (जयपुर)  
एवं समस्त सेठ परिवार

## आचार्य हस्ती-स्मृति-सम्मान 2023 तथा संघ द्वारा प्रदत्त अन्य सम्मान हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

### (1) आचार्य हस्ती-स्मृति सम्मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा प्रतिवर्ष जैन आगम, जैन धर्म-दर्शन, कला एवं संस्कृति तथा जैन जीवन-पद्धति के क्षेत्र में लेखन, शोध तथा जैन सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट योगदान करने वाले विद्वान् को 'आचार्य हस्ती-स्मृति-सम्मान' से सम्मानित किया जाता है। इस सम्मान हेतु लेखकों से सम्मान योग्य कृति की चार प्रतियाँ 31 जुलाई 2023 तक आमन्त्रित हैं। उक्त तिथि के पश्चात् प्राप्त प्रविष्टियाँ सम्मिलित नहीं की जायेंगी। सम्मान हेतु नियम इस प्रकार हैं-

- (A) विद्वान् की एक कृति अथवा उनके सम्पूर्ण योगदान के आधार पर भी सम्मानित किया जा सकेगा।
- (B) सम्मान हेतु प्रकाशित अथवा अप्रकाशित (टंकित) कृति की चार प्रतियाँ प्रेषित की जानी चाहिए।
- (C) प्रकाशित कृति सन् 2019 से पूर्व की नहीं होनी चाहिए।
- (D) पूर्व में किसी भी संस्था से पूर्व में पुरस्कृत कृति पर यह सम्मान नहीं दिया जाएगा।
- (E) कृति का विशेषज्ञ विद्वानों से मूल्यांकन कराया जाएगा।
- (F) कृति के मौलिक एवं पूर्व में पुरस्कृत न होने का प्रमाण-पत्र संलग्न करना होगा।
- (G) सम्मान के रूप में 1 लाख रुपये की राशि प्रशस्ति-पत्र के साथ प्रदान की जाती है।

आवदेन-पत्र कृति की चार प्रतियों के साथ अपने बायोडेटा एवं सम्पर्क सूत्र सहित संघ कार्यालय के पते पर प्रेषित करें।

### (2) युवा प्रतिभा- शोध साधना-सेवा-सम्मान (45 वर्ष की आयु तक)-

- (A) प्रशासनिक चयन- राज्यस्तरीय एवं केन्द्रीय प्रशासनिक सेवा, न्यायाधिपति आदि विशिष्ट पदों पर चयन।
- (B) प्रोफेशनल विशिष्ट- डॉक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट, कम्पनी सचिव एवं अन्य प्रोफेशनल पाठ्यक्रम में योग्यता सूची में स्थान पाने पर।
- (C) शोध- वैज्ञानिक खोज (अहिंसा और जैन सिद्धान्तों को पुष्ट करने वाली)

### (3) विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान (एक श्राविका, एक युवा, एक वरिष्ठ स्वाध्यायी)-

कम से कम 10 वर्ष स्वाध्याय संघ, जोधपुर से स्वाध्यायी (पर्युषण पर्वाराधन) के रूप में सक्रिय सेवा। (युवा स्वाध्यायी के लिए आवश्यक होने पर सेवा वर्ष में छूट दी जा सकेगी।)

### (4) न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा स्मृति युवा-शिक्षा-प्रतिभा सम्मान

संघ द्वारा प्रदत्त न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा स्मृति युवा शिक्षा-प्रतिभा सम्मान हेतु प्रविष्टियाँ

आमन्त्रित हैं। इसके अन्तर्गत उन छात्र-छात्राओं की प्रविष्टियाँ स्वीकार की जायेंगी, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त की हो। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, विश्वविद्यालय आदि की परीक्षाओं में वरीयता सूची में विशिष्ट स्थान प्राप्त करने वाले श्रेष्ठ छात्र को 21 हजार रुपये की राशि से सम्मानित किया जाएगा। प्रतियोगी एवं प्रोफेशनल पाठ्यक्रमों में उच्च वरीयता प्राप्त छात्र-छात्रा को भी सम्मानित किया जा सकता है।

इच्छुक अभ्यर्थी आवेदन करते समय अंकतालिका की सत्यापित प्रतिलिपि संलग्न करें।

### (5) डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान

जैन धर्म-दर्शन से सम्बद्ध विषय पर पी-एच्.डी एवं डी.लिट् उपाधि प्राप्त करने वाले शोधकर्ताओं को 'डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान' से सम्मानित किया जाएगा। इस हेतु आवश्यक बिन्दु इस प्रकार हैं-

- जिन शोधकर्ताओं ने 18 फरवरी 2022 से 17 फरवरी 2023 की अवधि में पी-एच्.डी/डी.लिट् उपाधि प्राप्त की है (प्रोविजनल डिग्री भी हो सकती है), उनमें से 5 पी-एच्.डी. उपाधिधारक तथा 1 डी.लिट् उपाधिधारक को क्रमशः 11 हजार रुपये एवं 15 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि से सम्मानित किया जाएगा।
- 5 पी-एच्.डी. उपाधिधारकों में जैन दर्शन (दर्शन-शास्त्र) विषय पर 3, जैनेलॉजी विषय पर-1 तथा संस्कृत अथवा मानविकी (HUMANITIES) विषय पर 1 शोधार्थी को सम्मानित किया जायेगा। डी.लिट् का सम्मान दर्शनशास्त्र विषय पर ही दिया जायेगा।
- 18 फरवरी 2022 से 17 फरवरी 2023 के मध्य जो भी पी-एच्.डी. एवं डी.लिट् उपाधि प्राप्तकर्ता होंगे, वे इस सम्मान हेतु आवेदन कर सकते हैं। आवेदन-पत्र के साथ पी-एच्.डी./डी. लिट् उपाधि के समुचित सर्टिफिकेट एवं शोधकार्य का सारांश संलग्न करना होगा। साथ ही शोध विषय से जैन धर्म को क्या लाभ होगा, उसकी संक्षिप्त जानकारी भी प्रेषित करें।
- सम्मान राशि 'श्री सरदारमल भण्डारी चेरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर' (भण्डारी परिवार)के सौजन्य से प्रदान की जाएगी।

उक्त सभी सम्मानों हेतु अपनी प्रविष्टियाँ संघ के निम्नांकित पते पर सम्बन्धित सम्मान का नाम लिखते हुए 31 जुलाई 2023 से पूर्व प्रेषित करें।

धनपत सेठिया-महामन्त्री,

अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,

सामायिक-स्वाध्याय भवन,

प्लॉट नं. 2, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.),

फोन नं. 0291-2636763

# जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।  
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ॥

## ✚ संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ  
प्लॉट नं. 2, नेहरूपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763  
E-mail : absjrhssangh@gmail.com

## ✚ संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

## ✚ प्रकाशक

अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल  
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)  
फोन-0141-2575997, 2705088  
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

## ✚ प्रधान सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

## ✚ सह-सम्पादक

नौरतनमल मेहता, जोधपुर  
त्रिलोकचन्द जैन, जयपुर  
मनोज कुमार जैन, जयपुर

## ✚ सम्पादकीय कार्यालय

ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)  
फोन : 0141-2705088

E-mail : editorjinwani@gmail.com / editorjinvani@gmail.com

## ✚ भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57  
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2021-23

WPP Licence No. JaipurCity-WPP-04/2021-23  
Posted at Jaipur RMS (PSO)



अप्यं च अहिक्खिवइ,  
पबंधं च न कुव्वइ।  
मेत्तिज्जमाणो भयइ,  
सुयं लद्धं न मज्जइ॥

-उत्तराध्ययनसूत्र, 11.11

हो क्रोध अल्प करने वाला,  
रखता न टिका कर क्रोध कभी।  
होता कृतज्ञ मित्रों के प्रति,  
मद करे न जो श्रुत पाकर भी॥

जून 2023

वीर निर्वाण सम्वत्, 2549

आषाढ, 2080

वर्ष 81

अंक 6

सदस्यता शुल्क

त्रिवाषिक : 250 रु.

20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.

20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-

संरक्षक सदस्यता : 11000/-

साहित्य आजीवन सदस्यता- 8000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/सहयोग राशि "JINWANI" बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में NEFT/RTGS से जमा कराकर जमापत्रों के साथ पेन नं. भी (काउन्टर-प्रति) श्री अनिलजी जैन के व्हाट्स एप नं. 9314635755 पर भेजें।

जिनवाणी में प्रदत्त सहयोग राशि पर आयकर में 80G की छूट उपलब्ध है।

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

## विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	मैं ऐसा श्रावक बनूँ	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-डॉ. धर्मचन्द जैन	10
विचार-वारिधि-	बोधपरक वाक्य	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	12
प्रवचन-	अहिंसा के आचरण से पर्यावरण सन्तुलन सम्भव	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	13
	सुख में हर्ष और दुःख में विषाद नहीं करें	-भावीआचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.	17
	छोटी-सी आशातना भी सम्यग्दर्शन एवं मुक्ति		
	में बाधक	-मधुरव्याख्यानीश्री गौतममुनिजी म.सा.	20
	जीवन में पवित्रता होने पर ही ध्यान में		
	एकाग्रता	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	23
	संघ में निष्ठा है तो प्रतिष्ठा स्वतः बढ़ेगी	-श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.	27
	चातुर्मासिक पर्व का महत्त्व	-श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.	30
शोधालेख-	जैनदर्शन में योग के भेद	-साध्वी रुचिदर्शनाश्रीजी	34
जैनविद्या-	जैनदर्शन एवं कालचक्र	-श्री ओ. पी. चपलोट	39
English-section	Convergences and Divergences in Jain Philosophy and Modern Science	-Dr. Priyadarshana Jain	43
प्रासङ्गिक-	श्रमण जैन परम्परा में चातुर्मास की अवधारणा	-प्रो. फूलचन्द जैन 'प्रेमी'	51
	चातुर्मास के लगने से पहले....!	-श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	56
साधना-	संयम की संरक्षा : जिज्ञासा-समाधान	-संकलित	59
परिवार-स्तम्भ-	कैसे हो आपसी समायोजन ?	-श्री पारसमल चण्डालिया	61
अध्यात्म-	ज्ञान एवं सदुपयोग हैं सुख के साधन	-श्री धर्मेन्द्र कुमार जैन	63
तत्त्व-चर्चा-	आओ मिलकर कर्मों को समझें (28)	-श्री धर्मचन्द जैन	66
पर्युपासना-	गुण पूजा ही श्रेयस्कर है	-श्री मदनसिंह कूमट	68
गीत/कविता-	आत्मा का अवलोकन	-श्रीमती अंशु संजय सुराणा	11
	लघु कविताएँ	-डॉ. रमेश 'मयंक'	38
	भावी आचार्यश्री महेन्द्र गुणगान	-महासती श्री पदमप्रभाजी म.सा.	65
	साधक की अभिलाषा	-श्री जितेन्द्र चोरड़िया 'प्रेक्षक'	69
विचार/चिन्तन-	बापू का स्वप्न	-श्रीमती सुमन कोठारी	16
	ANTS	-Mrs. Minakshi Dinesh Jain	26
	तप में श्रेष्ठ ब्रह्मचर्य	-श्री अजीत भण्डारी	29
	धार्मिक संस्कार शिविर	-श्री महेश नाहटा	42
	Replacing negative thoughts with positive	-Compiled	50
	असली सुन्दरता	-श्री शुभम बोहरा	58
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-श्री गौतमचन्द जैन	70
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	71
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	90
बाल-जिनवाणी -	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	-विभिन्न लेखक	91

## मैं ऐसा श्रावक बनूँ

डॉ. धर्मचन्द जैन

मैं अपने गृहस्थ जीवन को सुन्दर बनाना चाहता हूँ। इसके लिए जैनधर्म में क्या उपाय बताये हैं? इस समस्या का समाधान स्थानांग, उपासकदशांग आदि आगमों में प्राप्त होता है। गृहस्थ जीवन में रहकर भी कोई अपने आचरण को अगार धर्म के माध्यम से सुन्दर बना सकता है। हम हमारे जीवन को सुन्दर बनाने के लिए अनेक कल्पनाएँ करते हैं, जिनमें प्रमुख हैं-

1. मेरे पास विपुल धन-सम्पदा हो तो मेरा जीवन सुन्दर बन जाएगा।
2. मुझे पद एवं समाज में प्रतिष्ठा मिल जाए तो मेरा जीवन अच्छा हो जाएगा।
3. मेरे पास बड़ा घर हो, बैंक बैलेंस हो, नौकर-चाकर हों, मेरे आदेश की पालना हो, अनेक लोग सेवा में उपस्थित हो तो मेरा जीवन अच्छा बन जाएगा।
4. मैं अपनी सभी इच्छाओं को पूरा करने में समर्थ बन जाऊँ तो मेरा जीवन सुन्दर बन जाएगा।

वस्तुतः इस प्रकार की इच्छाएँ एवं परिकल्पनाएँ सुख-सुविधाओं के होने पर भी जीवन को सुन्दर बनाने में समर्थ नहीं हैं। जीवन की सुन्दरता का सम्बन्ध अपने सुन्दर विचार, हितमित, सभ्य वचन और सुन्दर आचरण पर निर्भर करता है। प्रचुर धन-सम्पदा होने पर भी बुरी आदत एवं कुव्यसनों में जकड़े हुए व्यक्ति का जीवन सुन्दर नहीं होता। वह स्वयं दुःखी एवं अशान्त होता है तथा दूसरों को भी दुःखी करता है। उच्च पदों पर आसीन अनेक व्यक्ति अपनी पत्नी और बच्चों को समय नहीं दे पाते हैं तथा मदिरापान में मशगूल रहकर अन्य स्त्री में आसक्ति आदि गन्दी आदतों में उलझकर अपने जीवन को बर्बाद कर देते हैं।

इच्छाएँ तो आकाश के समान अनन्त होती हैं।

उनमें से कुछ इच्छाएँ पूर्ण होती हैं और कुछ शेष रह जाती हैं। कभी किसी की सभी इच्छाएँ पूर्ण नहीं होतीं। अनेक इच्छाएँ पूर्ण होने पर नई इच्छाओं को जन्म दे जाती हैं, जिससे पुनः दुःख का चक्र चलता रहता है। मनुष्य में जीवन-यापन के साथ सन्तोषवृत्ति हो, किसी प्रकार का कुव्यसन न हो, सबके प्रति मैत्री एवं प्रेम का व्यवहार हो तो उसका जीवन सुखमय बन जाता है।

प्रभु महावीर ने गृहस्थ-जीवन को सम्यक् बनाने हेतु हिंसा, झूठ, चोरी, व्यभिचार का परित्याग तथा परिग्रह या इच्छा का परिमाण करने की शिक्षा प्रदान की है। सबसे प्रथम आवश्यकता है जीवन के प्रति दृष्टिकोण का निर्मल होना। जीवन की सच्चाई को जानने पर दृष्टिकोण निर्मल अथवा सही बनता है। दृष्टिकोण सही होने पर ज्ञान भी सम्यक् हो जाता है। फिर व्यक्ति हिंसा आदि प्रवृत्तियों से स्वतः विरत होकर इच्छाओं का ही परिमाण कर लेता है। वह असद् इच्छाओं का पूरी तरह त्याग कर देता है। सही समझ आने पर एक गृहस्थ व्रतधारी श्रावक बनकर अपने जीवन को सुन्दर बना लेता है। हिंसा, झूठ आदि पाप की प्रवृत्तियाँ करके सुख की आशा रखना मिथ्या मान्यता है, जो पाप प्रवृत्तियों का जितना त्याग करता है, उतना सुख एवं शान्ति को प्राप्त करता है। श्रावक के लिए आवश्यक है कि वह सप्त-कुव्यसनों का त्यागी हो। ये कुव्यसन हैं-

1. द्यूत क्रीड़ा
2. मांस-सेवन
3. मदिरा-पान (किसी भी नशीली वस्तु का सेवन)
4. चोरी करना
5. शिकार खेलना (अपनी खुशी के लिए दूसरों की हिंसा करना)
6. परस्त्रीगमन (अपनी भार्या के अतिरिक्त स्त्री के साथ सहावास करना)
7. वेश्यागमन। ये सात बुराइयाँ

जीवन को बर्बाद करने वाली होती हैं। जैनाचार्यों ने इनका बचपन से ही त्याग करने की प्रेरणा दी है। जैनाचार्य रत्नप्रभसूरिजी ने ओसियाँ ग्राम में जब क्षत्रियों को जैन बनाया तब उन्होंने नमस्कार मन्त्र पर आस्था एवं रात्रिभोजन-त्याग की भी प्रेरणा दी थी।

जीवन को सुन्दर बनाने का सही रास्ता स्वयं को ज्ञात नहीं हो तो, प्रभु महावीर तथा हमारे जीवन के हितैषी आचार्यों एवं ज्ञानियों के द्वारा प्रस्तुत मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। ऐसा करके हम अपने जीवन को सही दिशा प्रदान कर सकते हैं। स्वयं की गन्दी आदतों को बदले बिना सुख एवं शान्ति की आशा रखना भूल है। हम हमारे दुःख एवं अशान्ति का कारण दूसरों को एवं परिस्थितियों को मानते हैं, किन्तु उनके बदल जाने पर भी हमने यदि अपने भीतर में बदलाव नहीं किये तो हम वास्तविक सुख एवं भीतर की सुन्दरता का अनुभव नहीं कर सकते हैं।

गृहस्थ के जीवन को सुन्दर बनाने के लिए उपासकदशांगसूत्र में 12 व्रतों का विधान किया गया है— (1) स्थूल प्राणातिपात विरमण (2) स्थूल मृषावाद विरमण (3) स्थूल अदत्तादान विरमण (4) स्थूल स्वदार-सन्तोष परदार विवर्जन रूप मैथुन विरमण (5) स्थूल परिग्रह विरमण (6) दिशा परिमाण (7) भोगोपभोग परिमाण (8) अनर्थदण्ड विरमण (9) सामायिक (10) देशावकाशिक (11) प्रतिपूर्ण पौषध (12) अतिथि संविभाग। ये 12 व्रत व्यक्ति को आत्म नियन्त्रित करते हैं तथा दुःख उत्पन्न होने के अनेक कारणों से मुक्त कर देते हैं। ये मनुष्य को भीतर से सशक्त बनाते हैं। इनसे आत्मबल में अभिवृद्धि होती है तथा पर से सुख-प्राप्ति की आशा तिरोहित हो जाती है।

आचार्य हरिभद्रसूरि ने श्रावक के 21 गुणों का प्रतिपादन किया है तथा उनका समावेश करके आचार्य हेमचन्द्र ने योगशास्त्र ग्रन्थ में श्रावक के 35 गुणों का उल्लेख किया है, जो एक गृहस्थ के जीवन को सुन्दर बनाने में कारगर हैं। श्रावक यदि 12 व्रतधारी न हो तो भी यदि वह इन 35 गुणों को अपने जीवन में विकसित

करता है, तो इसके मधुर फल उसे प्राप्त होते ही हैं। उन गुणों में से कुछ को संक्षेप में यहाँ समझने का प्रयत्न करते हैं—

**1. न्याय सम्पन्न विभव**—किसी को धोखा दिये बिना ईमानदारी से धन का अर्जन करने वाला प्रायः सुखी रहता है। न्याय-नीति से अर्जित धन इस लोक के लिए हितकारी होता है। सुपात्र एवं दीन-दुःखियों को प्रदान करने से वह परलोक में भी हितकारी होता है। अन्याय के द्वारा अर्जित धन से शान्ति नहीं मिलती। वह धन परिवार में किसी न किसी प्रकार की मुसीबत का कारण बन जाता है। वह धन लोक और परलोक दोनों के लिए अहितकर होता है।

**2. शिष्टाचार प्रशंसक**—शिष्टजनों के द्वारा जो आचरण किया जाता है उसकी प्रशंसा करने से प्रशंसक के व्यवहार में भी शिष्टता का प्रवेश एवं वर्धन होता है। अशिष्ट आचरण दूसरों के लिए क्लेशकारी होता है तथा उससे स्वयं को दुःख भोगना पड़ता है। इसीलिए शिष्ट ज्ञानी पुरुष का आचरण अनुकरणीय है।

**3. समान कुल-शील में विवाह**—अपने कुल एवं शील के तुल्य परिवार में ही विवाह करने से सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से ऐक्य रहता है तथा पारस्परिक व्यवहार भी सम्यक् रहता है। कुल का तात्पर्य है पिता, पितामह आदि का कुलीन व्यवहार तथा शील का तात्पर्य है सदाचार। मद्य-मांस आदि का सेवन न करने वाला व्यक्ति यदि मद्य मांस-सेवन करने वाली कन्या से विवाह करता है, तो समस्या उत्पन्न होती है। विवाह अपने गोत्र को टाल कर अन्य गोत्र में किया जाना चाहिए।

**4. निन्दा त्याग**—किसी की भी निन्दा करने से बचना चाहिए। विशेष रूप से अपने स्वामी, राजा आदि की निन्दा कभी नहीं करनी चाहिए।

**5. माता-पिता की सेवा**—परिवार में माता-पिता एवं सभी बड़ों की सेवा करने वाला व्यक्ति उनका शुभ आशीर्वाद प्राप्त करता है तथा परिवार में प्रेम एवं



मैत्री का वातावरण रहता है, जिससे सुखानुभूति होती है।

6. आय के अनुसार व्यय-आधुनिक युग में ऋण सहज मिल जाता है। अपनी आय के अनुसार ही व्यय करने वाला सुखी रहता है। ऋण भी उतना ही लेना चाहिए, जिसको चुकाया जा सके।

7. प्रतिदिन धर्मश्रवण-अपने ग्राम-नगर में यदि कोई साधु-साध्वी हैं, तो उनके सान्निध्य में नित्य प्रति धर्म सुनना चाहिए। इससे चित्त में उत्पन्न खिन्नता दूर हो जाती है तथा सुख-शान्ति का सम्यक् मार्ग-दर्शन प्राप्त होता है।

8. अजीर्ण होने पर भोजन त्यागी-सुखी जीवन के लिए स्वास्थ्य को भी सही रखना आवश्यक है। इस दृष्टि से भी कुछ आचरणीय गुणों की चर्चा आचार्य हेमचन्द्र ने की है, यथा-यदि पूर्व में किया गया आहार अभी तक पचा नहीं है तो लंघन करके पेट को आराम देने से स्वास्थ्य ठीक हो जाता है और नई बीमारी उत्पन्न नहीं होती।

9. समय पर भोजन-भोजन निर्धारित समय पर एवं भूख लगने पर किया जाना चाहिए। बिना भूख के भोजन करना रोगों को आमन्त्रण देना है।

10. अन्योन्य प्रतिबन्ध रहित त्रिवर्ग सेवन-धर्म, अर्थ एवं काम इन तीनों को मिलाकर त्रि-वर्ग कहा जाता है। जीवन में इन तीनों की आवश्यकता होती है, किन्तु इनका सेवन इस प्रकार से किया जाना चाहिए कि एक के सेवन से दूसरा बाधित न हो। काम एवं अर्थ के कारण धर्म यदि बाधित होता है, तो उस अर्थ और काम का सेवन करना उचित नहीं। धर्म से नियन्त्रित अर्थ और काम ही सेव्य हैं।

11. दान-साधु एवं दीनों के प्रति अन्न-पान आदि का यथोचित दान करना चाहिए। इससे उदारता का गुण सुरक्षित रहता है एवं चित्त प्रफुल्लित रहता है।

12. अभिनिवेश रहित-दूसरों को पराजित करने की भावना से नीतिमार्ग का त्याग करके जो आग्रहयुक्त प्रवृत्ति की जाती है, वह त्याज्य है।

13. गुणपक्षपाती-उदारता, सज्जनता, धैर्य, प्रज्ञा आदि सद्गुणों का पक्षपात रखने से अपने में सद्गुणों की वृद्धि होती है।

14. बलाबलज्ञाता-अपने एवं दूसरों के सामर्थ्य तथा कमजोरी को सम्यक् प्रकार से जानकर ही किसी कार्य का प्रारम्भ किया जाना चाहिए। जो बलाबल को जानकर कार्य करते हैं, वे अपने कार्य में सफल होते हैं।

15. आचारनिष्ठ ज्ञानवृद्धों की सेवा-अपने जीवन को उन्नत बनाने के लिए ज्ञानवान एवं आचारनिष्ठ सज्जन पुरुष की सेवा करके प्रमोद की अनुभूति करनी चाहिए।

16. पोष्यपोषकता-परिवार में भार्या, अपनी सन्तान एवं माता-पिता के पोषण का दायित्व गृहस्थ का होता है, वह उनका पोषण करने के साथ अन्य अतिथिजनों का भी पोषण करता है।

17. दीर्घदर्शी-यह भी एक बड़ा महत्त्वपूर्ण गुण है, जो प्रज्ञाशील श्रावक में पाया जाता है। उसको यह पूर्वानुमान हो जाता है कि अमुक प्रवृत्ति का क्या प्रभाव होने वाला है।

18. कृतज्ञता-यह भी एक बड़ा गुण है, जो मनुष्य के विकास में सहायक होता है तथा उसे सुन्दर बनाता है। जिसने किसी भी प्रकार का उपकार किया है उसके प्रति कृतज्ञता का भाव मनुष्य को विनम्र, शालीन एवं विभिन्न गुणों से सम्पन्न बनाता है। जो कृतघ्न होता है, वह दूसरों का अप्रिय बन जाता है तथा स्वयं भी अपने गुणों की हानि करता है।

19. दयालुता-श्रावक दयावान होता है, वह हिंसा की प्रवृत्ति नहीं करता। वह दुःखी जनों के दुःखों को दूर करने के लिए तत्पर होता है। दयाभाव अहिंसा का द्योतक है। इससे मैत्री भाव का विकास होता है तथा क्रूर भावों की उत्पत्ति से मनुष्य बच जाता है।

(शेषांश पृष्ठ 55 पर)

## आगम-वाणी

डॉ. धर्मचन्द जैन

बहुमाई पमुहरे, थद्वे लुद्वे अणिग्गहे।  
असंविभागी अचियत्ते, पावसमणि त्ति वुच्चइ।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 17, गाथा 11

**अर्थ**—जो बहु मायायुक्त है, अतिमुखर-वाचाल है, स्तब्ध अर्थात् ढीठ है, लुब्ध है, इन्द्रियों और मन पर उचित नियन्त्रण नहीं रखता, प्राप्त वस्तुओं का संविभाग नहीं करता, जिसे गुरु आदि के प्रति प्रीति नहीं है, वह पापश्रमण कहलाता है।

**विवेचन**—उत्तराध्ययनसूत्र के 17वें अध्ययन में पाप श्रमण का विवेचन किया गया है। जो श्रमण श्रमणाचार का सही रीति से निष्ठापूर्वक पालन नहीं करता है तथा सजगता को त्यागकर पापाचरण करता है वह पापश्रमण कहलाता है। इस अध्ययन में पापश्रमण को परिभाषित करने वाली अनेक गाथाएँ दी गई हैं। उनमें से यहाँ एक गाथा का विवेचन किया जा रहा है।

प्रायः श्रमण-श्रमणी क्रोध, मान, माया एवं लोभ कषायों को जीतने की साधना करते हैं। यही उनका लक्ष्य भी होता है। किन्तु जो इस लक्ष्य के प्रति सावधान नहीं रहते हैं एवं इन कषायों की वृद्धि में लग जाते हैं, वे पाप श्रमण की कोटि में आते हैं। इस गाथा में कहा गया है कि जो बहुमायी अर्थात् कुटिल आचरण करते हैं, बाहर अच्छा दिखावा करते हैं और भीतर से मलिन रहते हैं, ऐसे साधक अपनी साधना के पथ से विचलित हो सकते हैं। इसलिये यह कहा गया है कि साधक को कुटिल आचरण नहीं करना चाहिए। उसका जीवन सरलता से सम्पन्न होना चाहिए। सरल हृदय में ही धर्म निवास करता है। मायावी व्यवहार अधर्म है, धर्म नहीं। इसी प्रकार जो श्रमण-श्रमणी अधिक वाचाल होते हैं वे भी पापश्रमण की कोटि में आते हैं। साधु-साध्वी की यह विशेषता होती है कि वे मितभाषी होते हैं; सत्य एवं

हितकारी वचनों का प्रयोग करते हैं। अधिक बोलने वाला साधक कदाचित् मिथ्या एवं व्यर्थ का भाषण भी कर सकता है; जो उसे साधना की सजगता से पतित करता है।

साधक की विशेषता होती है कि वह विनयशील एवं नम्र स्वभावी होता है। जब कोई साधक ढीठ बन जाता है अर्थात् अहंकार में चूर रहता है तो वह साधना के वास्तविक लक्ष्य से दूर हो जाता है। साधक मान कषाय पर विजय प्राप्त करने की साधना करता है, किन्तु जब वह अपने अल्प गुणों का भी अभिमान करता है तब वह दूसरों का तिरस्कार करने लगता है। श्रमण सब कुछ त्याग करके भी अहंकार की पूर्ति को दोष नहीं मानता। जब वह साधना को उसकी पूर्ति हेतु समर्पित कर देता है तब यह दोष गहरी जड़ें जमा लेता है। यह दोष एक अच्छे साधक को भी पापश्रमण की कोटि में पटक देता है। अतः एक साधक को अत्यन्त सावधानी की आवश्यकता होती है, ताकि वह अपने दोषों पर नियन्त्रण करता हुआ आत्मनिर्मलता की ओर सतत बढ़ता रहे।

इस गाथा में एक श्रमण को पापी बनाने वाला चतुर्थ दोष है लुब्ध होना अर्थात् लोभी होना। जो साधक रूप, शब्द आदि किसी भी प्रकार के लोभ में पड़ जाता है तो वह भी पापश्रमण की कोटि में आता है। लोभ को समस्त पापों का पिता माना जाता है। लोभ में राग सन्निहित रहता है। जो लोभ को नहीं जीतता वह राग को भी नहीं जीत पाता है। अपनी अनुकूलता के प्रति राग एवं उस अनुकूलता को बनाये रखने की लिप्सा साधक को लोभ तक ले जाती है। इस गाथा में एक अन्य दोष की ओर भी संकेत किया गया है, वह है-अनिग्रह। जो साधक अपनी इन्द्रियों एवं मन को नियन्त्रित नहीं कर

पाता है, वह भी अपने को साधना से पतित कर लेता है। पाँच इन्द्रियों के विषय तथा भोग-वासना के संस्कार जो चित्त पर अंकित हैं उनके कारण मन चलित होता रहता है। इन पर नियन्त्रण करके ही साधक अपनी साधना में दृढ़ता ला पाता है एवं वह ही सफल साधक बनता है।

श्रमण समूह में एक नियम होता है कि जो आहार आदि सन्त लेकर आते हैं उसे वे अपने गुरु को दिखाने के पश्चात् अन्यो के लिए भी उनका विभाग करते हैं। इसे संविभाग कहा जाता है। जो साधु संविभाग नहीं करते वे

असंविभागी पापश्रमण कहलाते हैं। अपने समूह में बाँट कर सेवन करने से परस्पर प्रीति का सञ्चार होता है। आत्मीयता का विस्तार होता है। इसलिये श्रमणों का एक गुण परस्पर प्रीति भी स्वीकार किया गया है। जो गुरु, रात्निक एवं साथी श्रमणों के प्रति आत्मीयता पूर्ण व्यवहार नहीं करता वह पापश्रमण कहलाता है। इस प्रकार इस एक ही गाथा में पापश्रमण के सात दोषों का उल्लेख किया गया है। जो इन दोषों का त्याग करता है वह धर्म श्रमण होता है। ये सारे नियम श्रमणी पर भी लागू होते हैं।

### आत्मा का अवलोकन

श्रीमती अंशु संजय सुराणा  
(तर्ज :: जैनधर्म के हीरे मोती में बिखराऊँ  
गली-गली...)

बहुत किया पर का परीक्षण,  
करना है अब निज का निरीक्षण।  
आगे कितना क्रदम बढ़ाया,  
स्व का स्व से हो चिन्तन।  
क्या करना था? क्या किया?  
क्या करना मुझको शेष रहा?  
याद तुझे मेरे मनवा,  
कितना प्रभु का आदेश रहा?  
लेखा-जोखा कर ले अपना,  
कर आत्मा का अवलोकन। आगे...॥1॥

हुई कषायों में कमी या केवल पाप बढ़ाया है,  
कर्मों का भारी बोझा कहीं,  
सिर पर तो नहीं चढ़ाया है।  
गुरुवर के उपदेशों पर,  
क्या किया है मैंने कभी मनन। आगे...॥2॥

अनमोल मिला ये मानव भव,  
क्या सच में समझ में आया है।  
या फिर ना समझी मैंने,

व्यर्थ ही समय गँवाया है।  
मन को वश में किया कभी या,  
मैंने सम्भाला केवल तन। आगे...॥3॥

क्या नवतत्त्वों का किया ज्ञान,  
और श्रावक धर्म निभाया है।  
या तन-धन-परिजन,  
परिग्रह ने ही मुझे सदा लुभाया है।  
आश्रय लेकर आगम का,  
अब खत्म करूँ सारी उलझन। आगे...॥4॥

गुरु संकेतों निर्देशों पर,  
चल सका कितना जीवन।  
धर्म की फुलवारी से कितना,  
महक रहा मन का उपवन।  
गुरु चरणों में कर दूँ समर्पण,  
आयुष्य का मैं हर एक क्षण। आगे...॥5॥

नौका आके लगी किनारे,  
अब पार भव से पाना है।  
किंचित् से प्रमाद के कारण,  
डूब नहीं अब जाना है।  
एक लक्ष्य पर टिके निगाहें,  
हो सिद्ध प्रभु से मेरा मिलन। आगे...॥6॥

## बोधपरक वाक्य

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

- ॐ भला व्यक्ति भी नीच की संगति से कलंकित होता है।
- ॐ गुणशून्य बाह्य रमणीकता निस्सार है।
- ॐ श्रावक धर्म की साधना के लिए निर्व्यसनी होना प्रथम आवश्यकता है।
- ॐ ममता के चक्कर में पड़ने वाला स्वयं अशान्त होकर दूसरों को भी अशान्त करता है।
- ॐ व्यसन का अर्थ ही विपत्ति है। अतः जिससे धनहानि हो एवं जीवन दुःखमय हो वैसी कोई कुटेव नहीं रखनी चाहिए।
- ॐ एक का दिल-दिमाग बिगड़े, उस समय दूसरा सन्तुलित मन को सम्भाल ले, तब भी बिगड़ा हाल सुधर जाता है।
- ॐ मनुष्य को पर-दुःख दर्शन के समय नवनीत सा कोमल और कर्तव्य-पालन में वज्रवत् कठोर रहना चाहिए।
- ॐ गुणी ही गुण की कद्र करता है। गुणों से ही मनुष्य की पूजा होती है।
- ॐ भोग पर नियन्त्रण रखने वाला ही देश-धर्म की सेवा कर सकता है।
- ॐ ज्ञानपूर्वक मार्ग ग्रहण करने वाला कठोर परीक्षा में, उलझन के समय भी सम्भल जाता है।
- ॐ जो लोग भाई-भाई के बीच एवं सम्प्रदायों के बीच दीवार खड़ी करते हैं, वे सपूत नहीं हैं।
- ॐ स्वतन्त्रता अमृत एवं स्वच्छन्दता विष है।
- ॐ भीतरी ग्रहों का शमन करने पर बाहर के ग्रहों का कोई भय नहीं रहता।
- ॐ यदि एक बार भी क्षायिक भाव का उत्थान हो जाय तो फिर गिरने का धोखा नहीं रहता।
- ॐ विषमवृत्तियों को सम करने और कषाय की दाह का शमन करने वाली क्रिया का नाम ही सामायिक है।
- ॐ अज्ञान, मिथ्यादर्शन और कदाचार बन्ध के कारण हैं। इनको त्यागने से ही मुक्ति होती है।
- ॐ द्रव्य दया शरीर की रक्षा और भाव दया आत्मगुणों की रक्षा है।
- ॐ विभूषा, स्त्री-संसर्ग और प्रणीत भोजन ब्रह्मचारी के लिए विष है।
- ॐ राग-द्वेष की मुक्ति एवं एकान्त सुख के लिए तीन बातें आवश्यक हैं—(1) ज्ञान का पूर्ण प्रकाश, (2) अज्ञान-मोह का विवर्जन और (3) राग-द्वेष का क्षय।
- ॐ विषय-कषाय से मन को खाली करने पर भगवत्-निवास होता है।
- ॐ अहंकार से सत्कर्म जैसे ही क्षीण हो जाता है, जैसे मणों दूध भी पावरती संख्या से ज़हरीला हो जाता है।
- ॐ महापुरुष अपनी जगहितकारी प्रवृत्तियों और कल्याण-कामना से स्वयं याद आते हैं, वे याद कराये नहीं जाते।
- ॐ त्यागी होने पर भी जब तक साधु छद्मस्थ है, उस पर आहार, विहार और संग का प्रभाव होता ही है।
- ॐ गुरु और गुणिजनों की सेवा, बालजनों के संग का त्याग, स्वाध्याय और एकान्त चिन्तन भाव-निर्माण के साधन हैं।
- ॐ सद्भावों की लहरें कई बार आती हैं, परन्तु अनुकूल संग और वातावरण के बिना टिकती नहीं हैं।
- ॐ जिसने सदाचार का पालन नहीं किया, वह साहसी और निर्भय नहीं रह सकता।
- ॐ शासन एवं धर्म-रक्षण का कार्य केवल साधुओं का ही समझना भूल है, साधु की तरह श्रावक संघ का भी उतना ही दायित्व है।

## अहिंसा के आचरण से पर्यावरण सन्तुलन सम्भव

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा जयपुर में प्रदत्त प्रवचन का आशुलेखन श्री अशोककुमारजी जैन 'हरसाना', जयपुर द्वारा किया गया है। सम्पादन में सह सम्पादक श्री त्रिलोकचन्द्रजी जैन, जयपुर का सहकार रहा है।

-सम्पादक

असार संसार से आत्म-विकास का सार ग्रहण करने वाले अनन्त ज्ञान के धारक तीर्थंकर भगवन्त तथा धर्मपथ पर जीवन समर्पित करने वाले, तिष्णाणं तारयाणं का बिगुल बजाने वाले पंच परमेष्ठी के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन!

तीर्थंकर भगवान ने उत्तराध्ययनसूत्र के 28वें अध्ययन की दूसरी गाथा में मोक्षमार्ग बताते हुए चार साधनों का कथन किया है।

नाणं च दंसणं चैव, चरित्तं च तवो तथा।

एस मग्गुत्ति पण्णत्तो, जिणेहिं वरदंसिहिं।।

अर्थात् जिनेन्द्र भगवन्तों ने ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप को मोक्षमार्ग प्रतिपादित किया है। अष्टविध कर्मों के बन्धनों से सर्वथा मुक्त होना मोक्ष है और उसका मार्ग सम्यग्ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप रूप है। मोक्षमार्ग यहाँ चारों से युक्त को कहा है। संयोग से आज के दिन चारों ही मार्गों के चिन्तन और आचरण के विषय बन रहे हैं। अज्ञान अन्धकार को हटाने के लिए विद्वत्संगोष्ठी का प्रारम्भ हो रहा है। श्रद्धा में मन की मजबूती और दृढ़ता लाने के लिए नवपद आराधना का प्रारम्भ हो रहा है। ज्ञान और श्रद्धा से समझे हुए विषय को जीवन में उतारने के लिए अर्थात् चारित्र में कदम बढ़ाने के लिए शिविर का प्रारम्भ भी हो रहा है। तप में पुरुषार्थ का आदर्श आज एक बहिन मासक्षण के प्रत्याखान करके कर रही है।

मोक्ष के मार्ग में प्रथम मार्ग के रूप में ज्ञान को कहा है। तीर्थंकर भगवन्तों का ज्ञान अनन्त है। उनके द्वारा प्ररूपित जिनवाणी के एक-एक सूत्र में अर्थ-गाम्भीर्य रहा हुआ है। आज जितना पर्यावरण प्रदूषण या

असन्तुलन का चिन्तन किया जा रहा है, उतना चिन्तन अपने भीतर के प्रदूषण के बारे में नहीं हो रहा है। जैनाचार के पालन से बाहरी पर्यावरण में भी सन्तुलन और भीतरी भावों में भी पवित्रता का सञ्चार होता है। अथवा यूँ कह दूँ कि बाहरी पर्यावरण प्रदूषण का मूल कारण भी भीतर के विकार ही हैं। भीतर का असन्तुलन भीतर में तो रोग उत्पन्न करता ही है, बाहर के वातावरण को भी प्रभावित करता है। भीतर में रही कषाय और पापवृत्ति ही सम्पूर्ण पर्यावरण को प्रदूषित करने का मूल कारण है। जिसके अन्तरंग ने विशुद्धि का रूप ले लिया है, वह प्रदूषण में सहकार नहीं कर सकता। बाहर के जितने प्रदूषण और असन्तुलन हैं, वे समाप्त किए जा सकते हैं। प्रदूषण का प्रमुख कारण हिंसा है। जहाँ-जहाँ हिंसा है वहाँ वहाँ प्रदूषण है। पृथ्वीकाय का दोहन करके जितनी मात्रा में हिंसा की जा रही है, उतनी ही मात्रा में प्रदूषण बढ़ रहा है। हिंसा का प्रभाव व्यक्ति के विचारों को भी प्रदूषित कर देता है।

श्रवणकुमार के द्वारा की गई माता और पिता की सेवा जग प्रसिद्ध है। आज भी सुयोग्य और संस्कारी पुत्र को श्रवणकुमार की संज्ञा दी जाती है। लेकिन एक बार श्रवणकुमार के मन में भी अपने अन्धे माता-पिता को जंगल में छोड़ने के विचार आ गये थे। जब श्रवणकुमार अपने माता-पिता को तीर्थ यात्रा करवाने के लिए कावड़ में ले जा रहे थे। यात्रा के दौरान वे विश्राम के लिए लवाण गाँव के नदी किनारे रुके। श्रवणकुमार के मन में वहाँ अपने माता-पिता के लिए अनुचित विचार आने लगे। वे सोचने लगे कि मेरा जीवन तो पूरा ही अपने

माता-पिता की सेवा में ही बीत जायेगा। उन्हें ऐसा लगने लगा कि माता-पिता मेरे लिए बोज़ हैं, इन्हें यहाँ जंगल में ही छोड़कर अपने जीवनयापन के लिए निकल जाना चाहिए। श्रवणकुमार ने अपने अनुचित विचारों से अपने माता-पिता को अवगत करा दिया। यह सुनकर एक बार तो माता-पिता अवाक् रह गये, लेकिन फिर सम्भलकर उन्होंने कहा-“बेटा! कोई बात नहीं, अब तक तुमने हमारी खूब सेवा की है। हमारा आशीर्वाद तुम्हारे साथ हमेशा रहेगा। हमें नदी के उस पार छोड़कर तुम चले जाना, वहीं पर ही हमारा शेष जीवन हम व्यतीत कर लेंगे।” श्रवणकुमार अपने माता-पिता को नदी के पार ले जाने लगा। नदी पार होने पर श्रवणकुमार के विचार बदल गये और वे अपने अनुचित विचारों पर पश्चात्ताप करने लगा। तब उसके माता-पिता ने कहा-“बेटा! इसमें तेरा कोई दोष नहीं है, यह तो उस अपवित्र भूमि का प्रभाव था, जिसके कारण तुम्हें अनुचित विचार उत्पन्न हुए।” उस क्षेत्र में अनेक युद्ध हुए थे, हिंसात्मक प्रवृत्तियों के कारण वह क्षेत्र अशुभ विचारों का उत्पादक भी बन गया। श्रद्धा और निष्ठा भावना के साथ जो आज तक माता-पिता के प्रति समर्पित होकर चल रहा था, उसका मन भी हिंसात्मक पृथ्वी पर जाने के कारण अशुभ विचारों में चला गया।

आज तो जिधर देखो उधर ही हिंसा का ताण्डव देखने को मिल जाता है। प्रकृति के जितने प्रदूषण बढ़ रहे हैं, उन सबमें हिंसा प्रमुख कारण है। पृथ्वी का खनन, पानी और बिजली का अपव्यय और वनस्पति की कटाई के नाम से हिंसा का नृत्य चारों ओर चल ही रहा है। जब तक हिंसा पर काबू नहीं पाया जाएगा तब तक पर्यावरण के सन्तुलन की बात कहना सही सिद्ध नहीं हो सकता।

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या के बारे में कितना ही चिन्तन कर लिया जाये, कितनी ही संगोष्ठियों में विद्वान् अलग-अलग तरह से इसकी विस्तार से व्याख्या कर लें, परन्तु इस समस्या के समाधान के रूप में अन्तिम हल यही निकलेगा कि हम अहिंसक बनें। हमारा देश प्राचीन काल से ही अहिंसा प्रधान रहा

है। अहिंसा से स्वतन्त्रता मिलाने वाला यह भारत देश है। यहाँ की जीवन शैली के कण-कण में अहिंसा है, लेकिन आज उसकी जीवनशैली में अन्तर आ रहा है। अनेक तरीकों से हिंसा को बढ़ावा दिया जा रहा है। जो जन-प्रतिनिधि बनकर बैठे हैं, जिनको आप चुन करके भेज रहे हैं, वे नेता सेवक बनने के बजाय हिंसा को प्रोत्साहित करने वाले बन रहे हैं। भाई-भतीजावाद कह लो या जातिवाद की बात कर लो अधिकांश नेतागण मात्र विद्वेष और हिंसा की राजनीति में लगे हैं। जो धर्म के रास्ते पर चल रहे हैं, अहिंसा के सिद्धान्तों का पालन करने वाले हैं, उन लोगों की उपेक्षा हो रही है। न उनकी कोई क़दर है और न ही उन्हें सम्मानित किया जा रहा है। यहाँ सामाजिक क्षेत्र की और राजनैतिक क्षेत्र की बात नहीं है, यहाँ तो धार्मिक क्षेत्र की बात की जा रही है। धार्मिक व्यक्ति प्रदूषण घटाने में सहयोग करता है, बढ़ाने में नहीं।

चिन्तन करें कि हम प्रदूषण बढ़ा रहे हैं या घटा रहे हैं। भारत भूमि की बात सामने रखूँ, जहाँ गोबर के आँगन थे, मिट्टी के मकान थे। पर आज देखें तो राख से बना हुआ धोवन पानी मिलना ही मुश्किल हो रहा है। किसी को धोवन पानी बनाने के लिए राख चाहिए तो उसे भी खरीदना पड़ता है। आज लोग चमक-दमक में उलझे हैं, उन्हें चमक-दमक वाला मकान चाहिए, आँगन भी संगमरमर का चाहिए। प्रदूषण बढ़ाने वाले कार, स्कूटर, एयरकण्डिशनर आदि चाहिए। व्यक्ति पर आधुनिकता का प्रभाव इस क़दर असर दिखा रहा है कि वह हिंसात्मक प्रवृत्तियों को करने में संकोच नहीं कर रहा है। गाय के गोबर से बना आँगन नहीं चाहिए, इसलिए गाय से भी प्रेम नहीं दिखाई दे रहा है। जो गाय प्रदूषण घटाने में विशेष कारण बनती है, जिसके शरीर के प्रत्येक अंग काम आते हैं, जिसके पंचामृत से आप जीवन चला रहे हैं, उस गाय की आज कैसी दुर्दशा हो रही है। अरबपति के यहाँ चार गाड़ी मिल जाएगी, लेकिन एक गाय नहीं मिलेगी। गाय के पञ्चामृत का उपयोग सभी करना चाहते हैं, लेकिन इसको पालने का छाती-कूटा कौन

करे। बात कहूँ आगम की, तो उपासकदशांगसूत्र में आनन्द आदि श्रावकों के गायों के अनेक गोकुल थे। रियाँ के सेठ भी श्रावक व्रतों का पालन करते थे और पशु भी सैकड़ों की संख्या में पालते थे। आज के श्रावकों को तो कपड़ों में ब्राइटनेस (सफेदी) पसन्द है, जरा सी धूल भी उन्हें कपड़ों पर अच्छी नहीं लगती है। हम भले ही गायों की रक्षा की बात करें अथवा पर्यावरण प्रदूषण के निवारण की बात करें, परन्तु जब तक हम हमारी जीवन-पद्धति में इसे नहीं अपनायेंगे तब तक केवल औपचारिकता ही रहेगी। विद्वानों से पूछें कि जीवदया पर कितने वक्तव्य दिये तो उत्तर मिलेगा कि अनेक बार दे दिये और विस्तार से दे दिये, लेकिन जीवरक्षा में क्या योगदान दिया, यह भी विचार करना है। मात्र कहा ही है, सुनाया ही है, लेकिन प्रदूषण के निवारण के लिए हमारा योगदान क्या है? भाषण देना अलग बात है, कहना अलग बात है और करना अलग बात है। हिंसा और प्रदूषण के निवारण की बड़ी-बड़ी बातें करने से कुछ लाभ नहीं है, यह तो तोता रटन्त है। बिल्ली के आने पर तोता यदि उड़-उड़ रटता रहे, पर यदि वह उड़ेगा नहीं तो परिणाम क्या होगा? तोता अपनी जान ही गवाँ देगा। इसलिए हमारा सक्रिय योगदान अहिंसा के पालन में होना चाहिए।

मानव की लोभवृत्ति हिंसा को जन्म देती है। इस लोभवृत्ति के कारण मानव प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर रहा है। अर्थ की प्राप्ति हेतु वह व्यर्थ की हिंसा करने से भी नहीं चूक रहा है। प्रकृति का अन्धाधुन्ध हनन हो रहा है, जिसके कारण अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। वृक्षों की कटाई इस कदर हो रही है कि लगता है व्यक्ति अपने लिए ही कब्र खोद रहा है। पञ्चेन्द्रिय जीवों की अनेक जातियाँ विलुप्त हो रही हैं। जो मछली तालाब के पानी को स्वच्छ रखने का कार्य करती हैं, उन मछलियों को अब देखना दूभर हो रहा है। मछली जब पानी को साफ करने का कार्य करती है तब मानव को भी पर्यावरण को स्वच्छ बनाने के कार्य करना चाहिए। मैं तो कहूँ बड़े बुजुर्गों के बजाय बच्चे अच्छे हैं, इन बच्चों ने 6 दिन

शिविर में रहकर 12 व्रत ग्रहण किये हैं। जो 12 व्रतधारी श्रावक होता है, वह पर्यावरण संरक्षण में सहयोगी होता है, क्योंकि उसकी प्रत्येक प्रवृत्ति विवेकपूर्वक होती है। विद्वान् परिग्रह परिमाण व्रत का विवेचन कर देते हैं, पर वे भी असीमित परिग्रह के स्वामी बने हुए हैं और धनवान अधिक से अधिक परिग्रह का पसारा करते जा रहे हैं। वास्तव में धनवान कौन है, तो जो सन्तोषी है वह धनवान है। निर्धन कौन है तो जो असीमित इच्छाओं वाला है वह निर्धन है। यहाँ विद्वत्संगोष्ठी में आये सभी विद्वान् भी अपने दैनिक जीवन में हिंसा के त्याग रूपी मर्यादा करके जायें, अन्यथा कहावत है-

पण्डित भये मशालची, लियो पलीतो हाथ।

औरों को करे चाँदना, आप अन्धेरा माथ।।

मशालची मशाल लेकर दूसरों के लिए उजाला करते हैं और स्वयं अन्धेरे में रहते हैं। चर्चा का सार जब समझ में आये, तो हिंसा से निवृत्त होने का प्रयास किया जाये।

चर्चा ही चर्चा करना ज्ञान की पंगुता है। इस ज्ञान की पंगुता को जब तक आचरण की आँखें प्राप्त नहीं होंगी तब तक अहिंसा के लक्ष्य को नहीं पाया जा सकता है। भगवान महावीर ने व्रतों के अन्तर्गत कर्मादानों के त्याग की बात की है, जोकि हमें हिंसात्मक व्यापारों के त्याग की प्रेरणा प्रदान करते हैं। लेकिन श्रावकों को भी लोभ रूपी सर्प का दंश लगने लगा है और वे महारम्भजन्य कर्मादानों को भी करने लग गया है। अर्थ प्राप्ति की अन्धी दौड़ और होड़ में अन्धे बनते जा रहे हैं। दिखावे की भावना से कि कहीं हम जमाने से पीछे नहीं रह जाये, इस मान्यता को अपनाकर भेड़चाल चल रहे हैं। लेकिन भाइयों! जैसे भीड़ भाड़ में लेकर जाती है उसी प्रकार धन की अन्धी दौड़ भी दुर्गति में ले जाती है। यहाँ स्थानक में एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय की हिंसा के त्याग की बात करेंगे और बाहर पञ्चेन्द्रिय की हिंसा करते हुए भी नहीं संकुचाते हैं तो कैसे हम आत्म-कल्याण की बात कर सकते हैं। शिविर में 130 शिविरार्थियों ने 12 व्रत की

धारणा की है, इनसे सीख लेने की जरूरत है। ज्ञान का चिन्तन-वर्णन करने के साथ पंगु बनकर मत बैठिये और धर्म के मार्ग में, अहिंसात्मक कार्यों में क्रम बढ़ाकर पर्यावरण संरक्षा में सहयोगी बने। आप जैसे-जैसे

धर्माचरण में आगे बढ़ेंगे जिनशासन के लिए एक आदर्श उपस्थित करेंगे। आपका जीवन भी अन्यजनों को तिराने में प्रकाश स्तम्भ का कार्य करेगा।

## बापू का स्वप्न

संकल्पिता : श्रीमती सुमन कोठारी

पैगम्बर साहब के निधन के कुछ वर्षों बाद अरब और रोम के लोगों के बीच बड़ी घमासान लड़ाई हुई, जिसमें दोनों पक्षों के बहुत से लोग घायल हुए और अनेक शूरवीर मारे गये। नियम के अनुसार शाम होने पर लड़ाई बन्द हो जाया करती थी। उस समय दोनों पक्षों के लोग अपने परिजनों, मित्रों का समाचार और युद्ध में उनकी स्थिति देखने युद्ध भूमि में इधर से उधर जाते थे। एक दिन जब लड़ाई बन्द हो गई, तब अरब सेना का एक युवक अपने चाचा के लड़के को ढूँढ़ने निकला। उसका विचार था कि यदि उसकी लाश मिल जाये तो उसे दफना दे और जीवित मिल जाये तो उसकी सेवा करके उसे स्वस्थ बनाये। उसने मन में सोचा कि सम्भव है कि शायद वह घायल हो, पानी के लिए तड़फ रहा हो, अतः उसने अन्धरे में उसे ढूँढ़ने के लिए लालटेन एवं एक लोटा पानी लिया और ढूँढ़ने चल दिया।

लड़ाई के मैदान में हालत बड़ी करुणाजनक थी, अनेक घायल सिपाही तड़फ रहे थे और सिसक रहे थे। बहुत से वीर सदा के लिए इस दुनिया से विदा हो गये थे। इस वेदनापूर्ण स्थिति में उस अरब नौजवान को संयोग से अपना भाई मिल गया और वह सचमुच पानी-पानी की रट लगा रहा था। उसके शरीर के घावों से खून बह रहा था और यह कहना कठिन था कि वह बच पायेगा या नहीं। बड़े भारी दिल से उस अरबी लड़के ने लालटेन नीचे रखी और जैसे ही पानी पिलाने के लिए झुका, तभी दूसरी ओर से किसी अन्य घायल की आवाज आई, पानी।

उसके घायल भाई ने बोला, पहले उस घायल

को पानी पिलाओ, फिर मुझे पिलाना, वह अरबी नवयुवक पानी का लोटा और लालटेन लेकर उस आवाज़ की दिशा में तेजी से आगे बढ़ा। उसने देखा कि घायल एक सरदार है। जिसके शरीर से लगातार खून बह रहा है, वह नवयुवक उसे पानी पिलाने के लिए आगे बढ़ा तभी तीसरी ओर से पुकार आई-पानी! पानी! सरदार ठहरा, उसने बड़ी कठिनाई से मुँह खोला और बोला-“मेरे भाई पहले उसको पानी पिला दो, फिर मुझे पिलाना।”

अरब नौजवान फुर्ती से उस ओर दौड़कर गया, जिस तरफ से तीसरी आवाज़ आ रही थी। उसके पहुँचने से पहले उस तीसरे घायल सिपाही ने अन्तिम साँस ले ली। अरबी नवयुवक हैरान होकर सरदार के पास आया तो वह भी बिना पानी पिये इस दुनिया से सदा के लिए चला गया था, इन दोनों हादसों के पश्चात् बड़े भारी हृदय से वह युवक अपने भाई के पास पहुँचा तो उसके भी प्राण-पखेरू उड़ चुके थे, युवक फूट-फूट कर रो पड़ा।

गाँधीजी ने लिखा है-इस प्रकार तीनों घायल वीरों ने, मानवता की पराकाष्ठा और त्याग का सन्देश दिया और वे अपने जीवन को सार्थक कर सदा के लिए अमर हो गये। गाँधी जी का सन्देश है-ऐसा त्याग हममें भी आये, दूसरों के आँसू पौँछने के लिए हम हँसते-हँसते कूच कर जायें।

उपर्युक्त भावना से स्वयं गाँधीजी का जीवन पूर्णतः ओतप्रोत था और वे देश की आधारशिला, ऐसे ही त्याग और अहिंसा से रखने के अभिलाषी थे। उनकी सोच थी कि पूरा विश्व ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ की तरह एक-दूसरे का सहयोग करे।

-‘बापू के प्रेरक प्रसंग’ पुस्तक से



## सुख में हर्ष और दुःख में विषाद नहीं करें

भावी आचार्य श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.

भावी आचार्य, महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. द्वारा जैन स्कूल महामन्दिर, स्थानक, जोधपुर में 7 अक्टूबर, 2022 को फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता ने किया है।

-सम्पादक

### बन्धुओं!

दृश्यमान जगत में जितने भी द्रव्य हैं, वस्तुएँ हैं और पदार्थ हैं, उनमें कोई पदार्थ विशेष है, तो कोई सामान्य है। कोई पदार्थ श्रेष्ठ है, तो कोई न्यून है।

इस संसार में अच्छाइयाँ हैं, तो बुराइयाँ भी हैं। जीवन में सुख है, तो दुःख भी है। जहाँ साता है, वहाँ असाता भी है। जहाँ अच्छा है, वहाँ बुरा भी है। इस प्रकार संसार का स्वरूप द्वन्द्वात्मक रहा है। यह संसार परिवर्तनशील रहा है। आज सुख है, तो कल दुःख भी आएगा। इसलिए नीतिकारों ने कहा-चक्रवत् परिवर्तन्ते, सुखानि च दुःखानि च।

वाचनी में भगवतीसूत्र का वाचन चल रहा है। कल वाचना में यही आया था कि सुख-दुःख दोनों आते-जाते रहते हैं तथा चारों गतियों में दोनों का स्थान है। आपका आगमवाणी के प्रति अहोभाव कम हो रहा है, इसलिए दोपहर की वाचना में श्रावक-श्राविकाएँ कम रहते हैं। पहले श्रावकों का आगम के प्रति विशेष बहुमान रहता था, कई श्रावक तो आज भी ऐसे हैं-जो कितना भी आवश्यक कार्य आ जाए, लेकिन आगम वाचना से अवकाश नहीं लेते। कई ऐसे भी हैं, जो पूरी आगमवाचना खड़े होकर अहोभाव से सुनते हैं।

यदि आपकी उपस्थिति स्थानक में नहीं रही, तो भावी पीढ़ी को धर्मस्थान में आने की प्रेरणा कैसे मिलेगी? पहले माता-पिता अपने बच्चों को साथ में दर्शन-वन्दन करने के लिए लेकर आते थे, आज जीवनशैली बहुत बदल गई है, सुबह उठने के साथ ही बच्चे कहो या बड़े - सभी मोबाइल और टी.वी. में लग

जाते हैं। जब समझदार कहलाने वाले अभिभावकों का समय ही व्यर्थ के साधनों में व्यतीत होता है, तो नासमझ बच्चों को इन प्रवृत्तियों से कोई नहीं रोक सकता। जहाँ माता-पिता अपने बच्चों को सन्त-सतियों के दर्शन-वन्दन करने के लिये लेकर जाते हैं, वहाँ उन बच्चों में संस्कार वर्धापित होते हैं तथा महाव्रतियों के प्रति श्रद्धा के भाव नज़र आते हैं। आज कई छोटे-छोटे बच्चे भी प्रतिक्रमण, आगम आदि को कण्ठस्थ कर लेते हैं। यह सब कुछ माता-पिता के दिये हुए संस्कारों से ही सम्भव हो सकता है। बच्चों को साथ में लेकर आने से ही उनकी सीखने-समझने की क्षमता बढ़ेगी। क्योंकि बच्चों का स्वभाव देखकर सीखने का होता है, जैसा वे देखते हैं, वैसा ही करते हैं।

हाँ, हमारी बात भगवतीसूत्र की चल रही थी, वहाँ भगवान ने फरमाया कि हर क्षेत्र में, हर जाति और गति में सुख भी आता है तो दुःख भी आता है। चाहे आप नरक में हों या देवगति में। हर क्षेत्र में सुख और दुःख दोनों आते हैं और जाते हैं।

आप कहेंगे नरक तो महादुःख का घर है, वहाँ सुख कहाँ से और कैसे आता है? तीर्थंकर भगवान के जन्म कल्याणक, दीक्षा कल्याणक आदि के समय कुछ क्षणों के लिए नरक में भी जीवों को सुख की अनुभूति होती है अर्थात् नरक में भी सुख-दुःख दोनों आते हैं।

सुख-दुःख दोनों कर्मों की वजह से आते हैं और कर्मों के कारण ही चले जाते हैं, इसलिए दोनों अवस्थाओं में समभाव जरूरी है। सुख में अधिक राजी मत होवो और दुःख में अधिक चिन्तित और परेशान

होने की भी जरूरत नहीं है। व्यक्ति सुख में हर्षित होता है और दुःख में हाय त्राय करता है। इसी कारण कर्मों का बन्ध होता जाता है और यह कर्म शृंखला अनवरत चलती रहती है। ज्ञानीजन फरमाते हैं-

सुख-दुःख संसार में, सब काहू को होय।

ज्ञानी भुगते ज्ञान से, मूरख भुगते रोय॥

हम ज्ञान भाव से सुख-दुःख को स्वीकार करेंगे तो कर्मबन्धन से बच जायेंगे। कर्म के उदय के समय हम समता में रहें तो नवीन बन्ध से बच जायेंगे। इस ज्ञान भाव को ही ज्ञाता द्रष्टा भाव कहते हैं।

ज्ञानियों ने कहा है-न सुख में प्रसन्नता और न ही दुःख आने पर खिन्नता। यदि यह कथन जीवन में उतर गया तो जीवन दिव्य बनता चला जायेगा। नारकी में सुख-दुःख की बात हमने समझी। अब प्रश्न देवलोक का आता है कि देवलोक तो सुख का खजाना है, वहाँ दुःख कैसे हो सकता है? देवताओं के पास हजारों देवियाँ हैं, अटूट ऋद्धि-सम्पदा है। आपके पास तो एक ही स्त्री है, देवों के पास न तो देवियों की कमी है और न ही धनवैभव की। उनके पास तो सुख सुविधा के सभी साधन उपलब्ध हैं, फिर दुःख कैसा? लेकिन शास्त्र कहते हैं कि देवताओं में ईर्ष्या होती है, वे अहंकार के कारण दूसरों की सम्पदा देख नहीं पाते हैं। जब वे देवेन्द्र धरणेन्द्र को देखते हैं तब उनकी रिद्धि-सिद्धि देखकर उनमें ईर्ष्या का भाव आता है। इस तरह ईर्ष्या-अहंकार आदि के कारण देवलोक के देव भी दुःखानुभूति करते हैं। सुख और दुःख सर्वत्र हैं। अष्टकर्मों को नष्ट करके जिन्होंने सिद्धदशा को प्राप्त कर लिया है, वह सुख-दुःख से अतीत अवस्था है। इसलिए तो सिद्ध पद की वन्दना में कहते हैं- जन्म नहीं, जरा नहीं, मरण नहीं, भय नहीं, शोक नहीं, रोग नहीं, भोग नहीं, दुःख नहीं, दारिद्र्य नहीं है, ऐसी शाश्वत सुख अवस्था, जहाँ दुःख का तनिक भी अवकाश नहीं है, वह सिद्धावस्था ही है। इसके अलावा संसार में सभी अवस्थाओं में सुख-दुःख का चक्र चल रहा है। सुख-दुःख हमारे हाथ में नहीं हैं, क्योंकि यह तो कर्म सापेक्ष हैं, लेकिन सुखी-दुःखी होना

हमारे हाथ में है, यह हमारा सम्यक् पुरुषार्थ है। सुख में हर्ष नहीं करना और दुःख के समय विषाद नहीं करना हमारे अधीन है।

आप जानते हैं कि सिक्के के दो पहलू होते हैं। इसी तरह हर पदार्थ के दो पहलू होते हैं। वहाँ अच्छाई भी है तो वहाँ बुराई भी है।

उदाहरण के रूप में हम चन्द्रमा को देखें उसमें शीतलता का गुण है, परन्तु उसमें दाग-लाञ्छन भी है। सूर्य प्रकाश देता है, तो ताप (गर्मी) से झुलसाता भी है। चन्दन में सुगन्ध और शीतलता है, तो चन्दन का पेड़ सर्पों का स्थान भी है। कोयल की आवाज में मिठास भी होती है, तो उसका वर्ण अत्यन्त काला भी है। आप चाहे जहाँ देख लीजिए आपको प्रत्येक पदार्थ में दोनों चीजें नज़र आएँगी।

हर व्यक्ति में कोई न कोई अच्छाई होती है, तो कमियाँ भी रहती हैं। निर्दोष तो केवल भगवान ही होते हैं। भगवान केवल ज्ञानी होने से अज्ञान रूपी दोष से रहित हैं और मोहनीय कर्म के नष्ट होने से मोह दोष से भी रहित हैं। इन दोनों को ही दुःख का मूल कारण कहा है-

नाणस्स सव्वस्स पगासणाए,

अन्नाण-मोहस्स विवज्जणाए।

रागस्स दोसस्स य संखएणं,

एगंतसोक्खं, समुवेइ मोक्खं॥

-उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 32, गाथा 2

अर्थात् सम्पूर्ण ज्ञान के प्रकट होने से ज्ञान विशद एवं निर्मल होगा। मिथ्याश्रुत एवं मिथ्या दृष्टि वाले के संग के परित्याग आदि से और अज्ञान तथा मोह के परिहार से सम्यग्दर्शन प्रकट होगा, राग-द्वेष तथा उसके परिवाररूप चारित्रमोहनीय का क्षय होने से सम्यक्-चारित्र प्राप्त किया जाएगा, तो अवश्य ही एकान्त सुख रूप मोक्ष की प्राप्ति होगी, सभी दुःखों का अन्त हो जाएगा। निष्कर्ष यह है कि ज्ञान-दर्शन-चारित्र ये तीनों मिलकर मोक्ष प्राप्त कराते हैं और मोक्ष के बिना दुःखों का सर्वथा अन्त नहीं होगा, न ही एकान्त सुख प्राप्त

होगा।

जब तक कर्मों से जीव जकड़ा हुआ है, तब तक वह निर्दोष नहीं बन सकता। निर्दोष बनने के लिए हमें स्वयं के दोषों का निरीक्षण करना होगा, दूसरों के दोषों को देखने वाला जीव निर्दोष नहीं बन सकता है। आप और हम आत्मकल्याण के लक्ष्य से आगे बढ़ रहे हैं। यदि आप अच्छाइयाँ देखोगे और ग्रहण करोगे तो उत्तम पुरुष की श्रेणी में आओगे। आपका कार्य गलतियाँ देखने का और निकालने का नहीं है। गलतियाँ देखोगे तो स्वयं में गलतियाँ प्रवेश करेंगी और अच्छाइयाँ देखोगे तो स्वयं भी गुणवान बनोगे।

आप पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. को देखते हैं, उनमें गुण ग्राहकता का गुण सहज ही दिखाई देता है। पूज्य गुरुदेव का तो कथन है कि- 'गुणदर्शन ही सम्यग्दर्शन है।' इस सूत्र को गुरुदेव अपने जीवन में जी रहे हैं।

आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल्लजी म.सा. भी फरमाते थे कि सामायिक साधना से ही समत्व की प्राप्ति सम्भव है।

सामायिक साधना समत्व का अभ्यास है। उसका प्रयोग तो हमें जीवन-व्यवहार के प्रत्येक कार्य में करना है। सामायिक एक क्रिया है। साधना है-समत्वभाव।

आज हमने सामायिक को ही साध्य समझ लिया है, लेकिन ऐसा नहीं है। यह तो साधन है, साध्य तो कषाय मुक्ति है। लेकिन साधन के अभाव में साध्य की प्राप्ति सम्भव नहीं है।

अनेक लोगों को सामायिक करते-करते वर्षों व्यतीत हो गये, परन्तु उनके जीवन में कषाय की कलुषता यथावत् बनी हुई है। एक घण्टे सामायिक कर लेने पर आप यह मत मान लेना कि आपका जीवन-व्यवहार सब ठीक है। यदि आपका दिन क्रोध-मान आदि कषायों में व्यतीत हो रहा है, तो एक सामायिक की क्रिया से शान्ति कैसे सम्भव होगी? मैं क्रिया को श्रेष्ठ मानता हूँ, परन्तु क्रिया के पीछे जो उद्देश्य है, हमें उसको गौण नहीं करना है। क्रिया करते-करते अध्यात्म में रमणता को बढ़ाना है, कषायों को कम करते जाना है।

हमें क्रमिक रूप में साधना का विकास करना है। दूसरों को बदलने के बजाय अपने आपको बदलना है। सामायिक हमें आत्मनिरीक्षण का अवसर देती है। आप अपने जीवन में शुद्ध सामायिक की आराधना करते हुए समत्वभावों को बढ़ायें तो आपका जिनवचन सुनना और हमारा सुनाना सार्थक होगा।

इसी भावना के साथ.....

## जिनवाणी पर अभिमत

प्रो. (डॉ.) हेमन्त कुमार शर्मा

'जिनवाणी' का अप्रैल 2023 का अंक प्राप्त हुआ। सम्पादकीय में प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द्रजी जैन ने 'मोह-जय' शीर्षक में मोह के स्वरूप, कारणों एवं विजय प्राप्त करने हेतु कुछ वैचारिक तथा व्यावहारिक उपायों की विशद विवेचना प्रस्तुत की। बौद्ध चिन्तन में भी तृष्णा, वासना इत्यादि को आर्य सत्यों के रूप में दुःख का प्रमुख कारण बतलाया है।

डॉ. प्रियदर्शनाजी एवं नम्रताजी जैन (लेखिका द्वय) ने अपने अंग्रेजी आलेख में जैनदर्शन एवं धर्म के

विभिन्न पहलुओं पर विस्तारपूर्वक व्याख्या उदाहरण सहित प्रस्तुत की यथा इतिहास, नीतिशास्त्र, आरोग्य, पर्व, अभ्यास, प्रतीक चित्र इत्यादि। वस्तुतः जैन मत केवल धर्म ही नहीं वरन् आध्यात्मिक जीवन पद्धति है।

युवा-स्तम्भ एवं बाल जिनवाणी भी रुचिकर तथा उपयोगी रहे। धर्म, दर्शन और साहित्य-संस्कृति के सूर्य आचार्यश्री हस्ती के विचार-सूत्र जीवन में आत्मसात् करने योग्य हैं, लघुकथा तथा कविताओं को भी स्थान प्रदान किया गया है।

-पूर्व प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग,  
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

## छोटी-सी आशातना भी सम्यग्दर्शन एवं मुक्ति में बाधक

मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. द्वारा मानसरोवर, जयपुर चातुर्मास 2021 में फरमाये गये इस प्रवचन का संकलन श्री पदमचन्द्रजी गाँधी, जयपुर द्वारा किया गया है। इसके सम्पादन में श्री त्रिलोकचन्द्रजी जैन, जयपुर का सहकार रहा है।

-सम्पादक

जिनशासन जयवन्त है। हमारे इस जिनशासन में सम्यक्त्व की, व्रतों की, महाव्रतों की बहुत बड़ी महिमा है। ये जीव के उत्तरोत्तर आत्मिक विकास के चरण हैं। सिर्फ एक सम्यक्त्व की महिमा की ही बात करें तो प्रभु फरमाते हैं कि जीव एक बार सम्यक्त्व का स्पर्श कर ले तो मोक्ष का आरक्षण निश्चित हो जाता है। उसी दिन से वह परित्त संसारी कहलाता है यानी कि वह अपने जन्म-मरण की सीमा तय कर लेता है और यदि सम्यक्त्व में आयुष्य का बन्ध कर ले तो नरक, तिर्यञ्च इत्यादि 22 दण्डकों में नहीं जाता है। मात्र मनुष्य और वैमानिक दण्डक ही उसके लिए खुले रहते हैं। साथ ही वह भविष्य में 15 भव का उल्लंघन नहीं करता। तत्त्व ज्ञानियों ने इसकी महिमा के बखान में चर्चा और विस्तार बहुत किया है, हमने बहुत पढ़ा भी है लेकिन हमें अब स्वयं को देखना है। हमने समकित का स्पर्श किया अथवा नहीं, यह हमें नहीं पता, लेकिन हम अपना जीवन, आचार और विचार देखें। क्योंकि समकितधारी के व्यवहार में तो शम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा और आस्था ये पाँचों लक्षण झलकने चाहिए।

समकित्ती कौन होता है? ज्ञानी फरमाते हैं—दर्शन सप्तक के क्षय, उपशम या क्षयोपशम से प्राप्त होने वाला गुण है सम्यक्त्व। सामान्य रूप से कहें तो संवेग झलकना चाहिए, मोक्ष की तीव्र उत्कण्ठा हो और तदनुसार ही प्रवृत्ति हो यानी संसार का हर कार्य हमें मजबूरी लगे। झाँकना भीतर है तोलना स्वयं को है। क्या मुझमें यह गुण है? यदि नहीं है तो सम्यक्त्व अभी मुझसे

दूर है। धर्म के श्रद्दालुओं को सहज ही प्रश्न होता है—समकित हमसे दूर क्यों है? इसका मूल कारण क्या है? मूल कारण है—मैं स्वयं। मैं स्वयं जिम्मेदार हूँ क्योंकि यदि मैं ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय आदि कर्मों को नहीं कमाता तो सम्यग्दर्शन से दूर नहीं होता। ज्ञानियों ने वर्तमान में सम्यक्त्व की प्राप्ति केवलज्ञान के बराबर दुर्लभ मानी है। जीव जब तक आयु कर्म को छोड़कर शेष कर्मों की स्थिति को अन्तःकोटाकोटि सागरोपम के भीतर नहीं करता तब तक सम्यक्त्व का स्पर्श नहीं कर सकता है।

अनादि से अनन्त जीव संसार में भ्रमण कर रहे हैं, भटक रहे हैं, दुर्गति की ठोकें खा रहे हैं, आर्तध्यान, रौद्रध्यान के शिकार बने हुए हैं, नाड़ी के एक खटके में साढ़े 17 बार तक के जन्म-मरण कर रहे हैं और कर्मों के पहाड़ को कम करने की बजाय बढ़ाते जा रहे हैं। क्यों? क्या हैं इसके कारण? कहीं पढ़ने को मिला कि मिथ्यात्व अकेला कारण नहीं है? यदि सिर्फ मिथ्यात्व ही इसका कारण होता तो भला कई अनादि मिथ्यादृष्टि जीव उसी भव में अन्तिम अन्तर्मुहूर्त्त में सम्यक्त्व को प्राप्त कर मुक्ति के अधिकारी कैसे बनते? तो फिर अविरति? नहीं, यदि अब्रत मुख्य कारण होता तो असंख्यात देव अनुत्तर विमानों और अन्य देवलोकों से निकलकर एक भव में मोक्ष कैसे जाएँगे? तो क्या अनन्त भव में भटकने का कारण क्रूरता या हिंसा है? नहीं, आगम और इतिहास इसका साक्षी है कि अर्जुन माली, दृढ़ प्रहारी, चिलाती पुत्र जैसे क्रूर जीव भी उसी भव में

आत्म-कल्याण को साध गए। तो फिर क्या इसका कारण उग्र कषाय को माना जाए? नहीं, यदि ऐसा होता तो चण्डकौशिक, चन्द्ररुद्राचार्य इत्यादि उग्र कषायी जीव कैसे सिद्धि के द्वार पर जा पहुँचे। तो फिर भला हमारा यह जीव सम्यक्त्व से दूर क्यों है, जन्म-मरण के लिए मजबूर क्यों है और कर्म बन्ध में शूर क्यों है?

तत्त्वार्थसूत्र के छठे अध्ययन का 14वाँ सूत्र इसका समाधान दे रहा है-केवलिश्रुत-संघ-धर्म-देवा-वर्णवादो दर्शनमोहस्य अर्थात् देव, गुरु, धर्म और संघ की आशातना से दर्शन मोहनीय का बन्ध होता है। आ + शात धातु से ल्युट् प्रत्यय लगाकर आशातन शब्द बनता है। समन्तात् शातयति मुक्तिमार्गात् भ्रंशयति इति आशातनम् अर्थात् चारों ओर से जो नष्ट करता है, मुक्ति मार्ग से भ्रष्ट करता है उसे आशातना कहते हैं। इसमें आ उपसर्ग लग जाने से आशातना शब्द बनता है। अन्य अपेक्षा से देखा जाए तो आशातना-आयः सम्यग्दर्शनाद्यवाप्तिलक्षणस्तस्य शातना खण्डनं निरुक्तादाशातना अर्थात् सम्यग्दर्शन आदि आध्यात्मिक गुणों की प्राप्ति को आय कहते हैं और शातना का अर्थ खण्डन करना है। पूज्य पुरुषों (गुरुदेवादि) का अपमान करने से सम्यग्दर्शन आदि सद्गुणों की खण्डना होती है।

जिस किसी का संयम जीवन से पतन हुआ है, उसके जीवन में आशातना का ज़हर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अवश्य रहा है। हम स्वयं अपने रोजमर्रा के जीवन में देखते हैं कि जब तक डायबिटीज नियन्त्रित नहीं होती तब तक किसी रोग का निदान सम्भव नहीं है तथा कोई भी दवा असरकारक नहीं होती। रोग निदान हेतु ली गई दवाई का स्थायी परिणाम भी नहीं आता। इसी प्रकार आशातना का पाप जब तक हमारे जीवन में निष्फल नहीं होगा तब तक निर्मल संयम चर्या, उग्र तपस्या, दीर्घकालीन स्वाध्याय इत्यादि तारक तत्त्व भी वीतराग दशा को प्राप्त नहीं करा सकते। घोर से घोरतम पाप करने के बाद निष्पाप बनने का परिबल गुरु समर्पण से सम्भव है, परन्तु आशातना का सेवन उसे निष्पाप बनने

हेतु दृढ़ संकल्पी और प्रायश्चित्त लेने के भाव जगाता ही नहीं है।

अज्ञानी कहलाने वाले माषतुष मुनि गुरु समर्पण द्वारा केवलज्ञान के स्वामी बन गए, जबकि पण्डित कहलाने वाले गोष्ठामाहिल पूर्वधर की आशातना से निह्वन बन गए।

आगमों में गोशालक, अभीचिकुमार, नागश्री ब्राह्मणी आदि अनेक उदाहरण स्पष्ट सिद्ध करते हैं कि अरिहंतों की, सिद्धों की, साधुओं की आशातना करके इन जीवों ने अपना संसार-परिभ्रमण बढ़ा लिया। गौशालक जिस दिन केवलज्ञान का अधिकारी होगा, उस दिन केवली बना हुआ गौशालक का जीव अपनी प्रथम देशना में सबसे पहले उपस्थित श्रोताओं से यह आग्रह करते हुए बोलेगा कि भूल कर भी कभी अपने धर्म गुरु, धर्माचार्य की आशातना मत करना, क्योंकि मेरे इस जीव ने भगवान महावीर की आशातना की, जिसका दुष्परिणाम मुझे ऐसा भुगतना पड़ा कि 1-1 नारकी में दो दो बार गया और असंख्य भवों के जन्म-मरण रूप संसार में भटकना पड़ा, दुर्लभ बोधि बना, सम्यक्त्व से दूर रहा, देव-गुरु-धर्म का आश्रय न पा सका, जिनशासन का मार्गदर्शन नहीं मिला, निर्जरा के उत्तम साधन उपलब्ध नहीं हुए यानी धर्म से वञ्चित ही रहा। इसलिए कोई भी भूल कर के भी गुरु की आशातना मत करना।

आशातना की भयावहता को बताया है-  
सिया हु से पावयं णो डहिज्जा,  
आसीविसो वा कुविओ न भक्खे।  
सिया विसं हलाहलं न मारे,  
न या वि मुक्खो गुरुहीलणाए॥

-दशवैकालिकसूत्र, 9.1.7

गुरु की आशातना की अग्नि आदि से तुलना की जाती है। हो सकता है कि कभी जड़ी-बूँटी एवं मन्त्रादि के प्रयोग से अग्नि किसी को न भी जलाये। मन्त्र-बल से कुपित सर्प भी भक्षण नहीं करे और खाया हुआ हलाहल

विष भी नहीं मारे। किन्तु गुरु की हीलना करने वाले को मोक्ष कभी-भी प्राप्त नहीं हो सकता। आशातना वह महाविष है जो भव-भव में दुःख देने वाला है।

लेकिन हम जाने अनजाने में गुरुओं की यानी साधु-सन्तों की आशातना कर बैठते हैं। हम तो दर्शन करने गए, लेकिन महाराज हमसे बोले ही नहीं। अरे! यह महाराज लोग भी पैसे वालों या ऊँचे ओहदे वालों से ही बात करते हैं, हमको तो दया पालो भी नहीं कहा और ऐसी कितनी ही बातें। अरे भाई, एक बात बताओ हम स्थानक किसलिए जाते हैं? सन्तों के दर्शन करने या उनको दर्शन देने। हमने दर्शन-वन्दन कर लिए, फिर कदाचित् गुरु बोले या कभी नहीं भी बोले तो यह उनका विषय है। हमारा तो काम हो गया न, लेकिन हम अपना विषय छोड़कर उनके विषय की चर्चा करते हैं। यही नहीं, कभी उनकी प्रवचन शैली को लेकर, कभी उनकी चर्चा को लेकर, कभी उनके ज्ञान-ध्यान और उनके व्रत आदि की प्रेरणा के बारे में कुछ न कुछ अनावश्यक टिप्पणियाँ करते ही रहते हैं। बड़ा विचार आता है कि आज के भाई बहन डॉक्टर, वकील और तो और सैलून तक में भी अपनी बारी के लिए पंक्ति में इन्तजार करते हैं, रुपए खर्च करते हैं और फिर भी उनकी बातों को न तर्क न तकरार, न वाद न प्रतिवाद ज्यों का त्यों स्वीकार कर लेते हैं जबकि साधु-सन्त यदि हमारे आत्म हितैषी बनकर हमें कोई बोध देते हैं, प्रेरणा करते हैं, वह भी बिना कुछ लिए, तो भी उनका उपकार मानने की बजाय हम उन्हीं के विरुद्ध अविवेकपूर्ण प्रतिक्रिया देकर आशातना कर बैठते हैं।

गुरु हस्ती के गुरु पूज्य श्री शोभाचार्यजी महाराज का नाम आपने सुना ही होगा। उनके पास यदि कोई भी जाकर दूसरे सन्तों के बारे में कोई प्रश्न या टिप्पणी करते तो वे महापुरुष यही जवाब देते कि मैं उनका क्या कहूँ, मुझे तो अपना ही पता नहीं कि मैं अभी प्रभु की वाणी के

अनुसार पूर्ण साधक बना या नहीं? तो फिर दूसरों के जीवन में झाँकने का मुझे क्या अधिकार है?

सन्त ध्रुवदासजी दोहे के रूप में कहते हैं-

पर निन्दा के किये तैं, आवत कुछ नहीं हाथ।

मूर्ख पर्वत पाप को, ले चलयौ अपने साथ॥

अर्थात् परनिन्दा से कुछ भी मिलने वाला नहीं है, बल्कि परनिन्दा से तो जीव भारी पाप का सेवन करके अपने आपको संसार में भटका लेगा।

निन्दा-विकथा से दूर रहने वाले ही आशातना के पाप से बच सकते हैं। साधु-सन्तों की निन्दा का पाप इस भवसागर में डुबाने वाला होता है। अनुभवी कहते हैं-वन्दे नहीं तो निन्दे क्यों। कितनी गहरी बात है। आप भले ही किसी को वन्दना न करो, लेकिन कम से कम उनकी निन्दा तो न करो। किसी साधु में कोई दोष नज़र आ भी जाए तो भी उनकी व्यक्तिगत निन्दात्मक चर्चा नहीं करें। सैद्धान्तिक विचार-विमर्श, चर्चा वार्ता करना गलत नहीं, किन्तु व्यक्तिगत दोषों की चर्चा करना, किसी पर आक्षेप लगाना, यह हमसे आशातना का घोर पाप कराता है। हालाँकि यह तथ्य है कि संयम-जीवन का आगमचर्यानुरूप आचार धर्म का क्या मापदण्ड है, यह बोध तो हमें होना ही चाहिए और इसी से ही सच्चे सन्त की पहचान करना भी जरूरी है। उसके अनुरूप ही हमारा विनय-विवेक भी होना चाहिए, किन्तु यह सभी व्यक्तिगत स्तर पर हो। किसी की बुराई करना या उसकी शिथिलता को लेकर चर्चा करना, यह भूलकर भी हमारे जीवन में नहीं होना चाहिए। इसीलिए कहा है-वन्दे नहीं तो निन्दे क्यों? और निन्दा करना ही नहीं वरन् निन्दा सुनना भी नहीं। यदि जीवन में पूरी दृढ़ता से हम इस एक नियम की पालना कर पाए तो निश्चय हम मुक्ति मार्ग पर आगे जरूर चलेंगे, बढ़ेंगे और सिद्धि को भी अवश्य प्राप्त करेंगे।

■ हिंसा और परिग्रह छोड़ने से ही विश्व शान्ति हो सकती है।

-**आचार्यश्री हस्ती**

## जीवन में पवित्रता होने पर ही ध्यान में एकाग्रता

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा सुराणा कटला, महामन्दिर, जोधपुर में 08 अगस्त, 2017 को फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है।

-सम्पादक

### बन्धुओं!

विनोबा भावे सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित प्रसिद्ध गाँधीवादी नेता थे। विनोबा भावे की माता रुक्मणी देवी बचपन में विनोबा को कहती थी कि 'हर चीज में भगवान है, तथा 'सिद्धा जैसो जीव है।' एक दिन विनोबा के पिताजी एक अनाथ बच्चे को घर लेकर आ गये। वह बहुत ही मासूम था, उसके माता-पिता का कोई पता नहीं था। विनोबा के पिताजी ने घर आकर पत्नी रुक्मणी से कहा- 'इसका बराबर ध्यान रखना और इसका अच्छी तरह से पालन करना।' विनोबा की माता रुक्मणी भी वास्तव में देवी के समान थी। वह घर में कभी खाना बच जाता तो उसे अपने बच्चे विनोबा को देती, परन्तु उस अनाथ बच्चे को तो गर्म खाना ही खिलाती। अपने उदर से जन्मे बच्चे को ठण्डी रोटी और आये हुए बच्चे को गर्म रोटी देने वालों के दृष्टान्त विरले ही मिलते हैं। जिसमें राग का नहीं, अपनत्व का वास होता है, वह परायों से प्रीति का धर्म निभाकर पवित्रता की मिसाल कायम करता है।

प्रश्न पूछा गया- 'ध्यान में एकाग्रता क्यों नहीं होती?' जवाब मिला- 'जब तक जीवन में पवित्रता नहीं आएगी, तब तक धर्म-ध्यान हो ही नहीं सकता। जब नींव में गड़बड़ है, तब भव्य भवन कैसे सुरक्षित रह सकता है?' इसलिए पवित्र बनने के लिए सबसे पहले निषेधात्मक साधना बतलाई है। सबसे पहले सप्त-कुव्यसन का त्याग अनिवार्य है। शराब पीकर कोई धर्म-ध्यान की सोचे तो कैसे होगा? शराब का नशा हो या फिर जुए की लत हो अथवा वेश्या-गमन का आदी हो,

वह ध्यान का अधिकारी ही नहीं है, एकाग्रता लाना तो दूर की बात है।

आज जैन कहलाने वाले जैन बहुत हैं, पर व्यक्तित्व का मोह जैन को पतन के रास्ते पर ले जा रहा है। नाक के कारण यह जीव कान से वञ्चित हो जाता है अर्थात् अहंकार के कारण जीव की ऐसी दुर्दशा होती है कि वह एकेन्द्रिय एवं विकलेन्द्रिय में चला जाता है। ऐसी स्थिति में पहुँचकर जीव फिर क्या कर पायेगा, विचार करें।

कल श्री दर्शनमुनिजी म.सा. सुना रहे थे कि लासूर का एक परिवार जो कि यहाँ आया हुआ था, उस परिवार ने लड़की की शादी पर देहेज के रूप में न सोना दिया और न चाँदी। लेकिन 90 बेघर परिवारों का घर बस सके इसलिए उनके लिए मकान बनवाकर दे दिये।

आप रोज अच्छे-अच्छे उदाहरण सुनते हैं और सुनकर आनन्द का अनुभव भी करते हैं। आप सुनें, सुनना चाहिए, पर नींव कमजोर है, नींव खराब है तो जीवन की सफलता का भव्य महल कैसे खड़ा हो सकेगा। पवित्रता रूपी नींव नहीं है, तो व्यक्तित्व कैसे निखरेगा।

हम सुखविपाकसूत्र का स्वाध्याय कर रहे हैं। शारीरिक सुख का प्रलोभन पैरों को मजबूती से टिकने नहीं देता। आपको पहले सुनाया जा चुका है कि अमर बेल जिस पेड़ पर लगती है, उस पेड़ का शोषण तो करती ही है, साथ ही परिणाम यह होता है कि खुद भी सूख जाती है। वहीं पीपल का पेड़ सबको आश्रय देता है। पीपल के पेड़ के नीचे जो भी वनस्पति है, पेड़-पौधे हैं,

घास-फूस है, सब पनपते हैं। पीपल का पेड़ कहीं पर भी लग जाता है। वह मकानों की नींव तक में उग जाता है। पीपल के पेड़ की तरह ही विकसित मानव दूसरों को सुख देकर स्वयं दुःख को अपनाते हैं। जबकि जड़ता में जीवन-बुद्धि रखने वाला दूसरों को दुःख देकर सुख मानता है। दीवाली पर पटाखे चलते हैं। पटाखे की आवाज से अनेक जीव इधर-उधर भागते हैं, कुछ मर भी जाते हैं। बिना प्रयोजन के ही प्राणियों को दुःख देने से कर्मों का घोर बन्ध होता है।

हम क्या कर रहे हैं? आपको सीधा पैसा नज़र आता है। आप घूमने जाते हैं। कार का उपयोग घूमने के लिए करते हैं तो क्या यह कर्मों के उपार्जन का निमित्त नहीं बन रहा? हाँ, जरूरत है वहाँ भले ही जाना पड़े, किन्तु नाहक इधर-उधर घूमने से क्या लाभ होगा? पेट्रोल कहाँ से आएगा? पेट्रोल के लिए मांस निर्यात तो करना पड़ेगा। उन देशों में जहाँ पेट्रोल निकलता है वहाँ जानवर कम हैं। उन्हें खाने के लिए मांस चाहिए। उन देशों को मांस निर्यात करके पेट्रोल का आयात किया जाता है। हम यदि निरर्थक पेट्रोल की खपत करेंगे तो अधिक पेट्रोल मँगवाने के लिए अधिक मांस निर्यात करना पड़ेगा। उस मांस निर्यात में व्यर्थ पेट्रोल खर्च करके हम कर्मों के भागी ही बन रहे हैं। व्यक्ति शरीर से, पैसे से, परिवार से, सामग्री से सुख मिलेगा, यह सोचता है। जब तक यह मान्यता उसके भीतर में है तब तक पवित्र बनने की यह बात अधूरी है। जिसकी भोग में जीवन बुद्धि है वह सम्यग्दृष्टि भी नहीं हो सकता।

जब तक भोगों में रुचि है, भोगों की अभिलाषा है तब तक मिथ्यात्व है। श्रीचन्दजी गोल्लेच्छा से पूछा गया कि मिथ्यात्व क्या है? उनका जवाब था कि भोग में जीवन बुद्धि मिथ्यात्व है। उन्हें आधा कप चाय पीनी हो तो वे आधा कप ही लेते थे, वे एक घूँट भी ज्यादा नहीं पीते थे। जितना चाहिए, उतना ही लेते थे। जबकि कहा जाता है-

कई माँई नटे, कई पटे, सब के सब नटे तो जावाँ कटे।

जिनको अपने भाग्य पर भरोसा होता है, वे ही

जैन-जीवन-पद्धति के अनुसार जीवन जी सकते हैं। चोरी से सम्पत्ति मिल जाने या किसी का धन हड़प लेने से सुख मिल जाएगा, ऐसा सोचना और करना सम्यग्दृष्टि का काम नहीं है। भाग्य में लिखा होगा तो ईमानदारी से जीवन जीने पर भी धनवान बना जा सकता है। कहीं से मिलना होगा, तो मिल जाएगा। चोरी का माल मोरी में जाते देर नहीं लगती है।

एक पिञ्जारा था। वह रुई पीञ्जता था। किसी की रजाई बनाता तो किसी का पतरना। वह थोड़ी-थोड़ी रुई और थोड़ा-थोड़ा कपड़ा रख लेता था। उसने कपड़े को जोड़-जोड़ कर अपने लिए रजाई बनाई। अल्लाह देवे तार-तार, खुदा लेवे सोर उतार। उसने थोड़ा-थोड़ा चुराकर रजाई बनाई। वह भी एक दिन चोरी हो गई। चोरी का माल मोरी में चला जाता है। चोरी का पैसा है तो डाक्टर ले जाएगा अथवा वकील ले जाएगा। आपके पास वह नहीं रहेगा। चोरी का धन रहने वाला नहीं है। वह तो जाएगा ही, साथ में अपना जो है, वह भी चला जाएगा।

एक गाँव में एक ठाकुर साहब रहते थे। उसी गाँव में एक रेबारी भी रहता था। वह अकेला ही था। उसके पास भेड़-बकरी, ऊँट आदि अनेक जानवर थे। वह उन्हें चराता और अपने जीवन का गुज़ारा करता था। ठाकुर साहब ने सोचा कि यह अकेला है, यदि यह मर जाय तो इसकी सारी सम्पत्ति, जानवर आदि मुझको मिल जायेंगे। एक दिन एक बुढ़िया ने रेबारी की शिकायत राजा को कर दी। ठाकुर साहब ने सोचा कि अच्छा मौका आया है। उसने राजा को पूरी तरह से भड़काया और उसके खिलाफ निर्णय करवा दिया। ककड़ी के चोर को फाँसी की सजा नहीं मिलती, पर ठाकुर साहब ने राजा को अपने पक्ष में करके उसे मृत्युदण्ड की सजा करवा दी। रेबारी का सभी सामान एवं सम्पत्ति ठाकुर के यहाँ आ गई।

इधर ठाकुर साहब के घर में कुछ समय बाद बच्चा पैदा हुआ। बच्चा बड़ा होने लगा, उसकी शादी कर दी गई। अचानक ठाकुर साहब का लड़का बीमार हो



गया। ठाकुर साहब लड़के के बीमार होने पर उसके इलाज हेतु अनेक स्थानों पर उसे लेकर गए। इलाज करवाया और पानी की तरह पैसा बहाने पर भी लड़के का रोग दूर नहीं हो रहा था। बिस्तर पर पड़े हुए लड़के ने ठाकुर साहब से कहा-पिताजी! इधर आओ, मैं उसी रेबारी का जीव हूँ। जब तक बदला पूरा नहीं होगा तब तक आपको खर्च करना ही पड़ेगा। जो मेरा धन कपट से लिया है, वह मेरे ही शरीर पर खर्च हो जाएगा और साथ में आपका भी धन चला जायगा।

आचार्य श्री (पूज्य हीराचन्द्रजी म.सा.) के साथ पाँचोड़ी से विहार किया। फाल्गुनी चौमासी के बाद जब एक गाँव में पहुँचे तो वहाँ के ठाकुर साहब ने कहा-बाबजी! इस गाँव में पानी गहरा है और मीठा है। जो पानी जितनी गहराई में होगा, वह उतना ही सुपाच्य और ताकतवर होगा। इसी तरह ईमानदारी की गहराई रखने वाला और उस पर चलने वाले का जीवन भी प्रेरणादायी होता है।

हमको किशनगढ़ जाने का मौका मिला। जब आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. मदनगंज पधारे तब वहाँ एक धार्मिक आयोजन हुआ। वहाँ आर. के. मार्बल के कर्मचारी किसी से एक पैसा भी बख्शीश नहीं लेते। अशोकजी पाटनी, जो आर. के. मार्बल के मालिक हैं, वे लगभग पाँच हजार गरीब परिवार को आर्थिक सहायता भेजते हैं। 30 या 31 तारीख को 12 बजे तक उनके एकाउन्ट में सहायता बैंक के माध्यम से सीधी पहुँच जाती है। किसी को वहाँ जाने की जरूरत नहीं है। अशोकजी रात्रिभोजन त्यागी हैं। घी का भी उनके त्याग हैं। इस प्रकार का जीवन जीने वाले ही ध्यान में एकाग्रता की बात सोच सकते हैं।

उनके वहाँ के नौकर कहते हैं-सेठ के हाथ से मिलेगा तो हमारे घर में बरकत होगी। आज कोई देशी घी का शुद्ध खाना खाए, सौ-डेढ़ सौ रुपये से ज्यादा नहीं लगेगा, पर शराब में, विषयों में, वेश्या-गमन में हजारों पूरे हो जाते हैं। आज दिखावे-प्रदर्शन-आडम्बर के लिए

न जाने कितना खर्च होता है।

अलवर में एक आई.टी.ओ. साहब थे-के. एल. जैन साहब। मेरी दीक्षा के समय में वे डी.सी. बन गए थे। वे साइकिल पर ऑफिस आते-जाते थे। रिटायर होने के बाद छोटी-सी कम्पनी में एकाउण्टेंट की नौकरी कर ली। सन् 1993 में रिटायरमेंट हो गया। वे बहुत शान्त थे। घर में न ए.सी. था और न कूलर, फिर भी घर में अपूर्व शान्ति थी। वह शान्ति कहाँ से आई? जो यह समझते हैं कि सामग्री से शान्ति मिलेगी, वे मिथ्यात्व में हैं। हमको अपने-आप पर भरोसा कहाँ है? हमें क्यों सुख की नींद नहीं आती है? जब तक सुख-सुविधा के सामान की चिन्ता है, तब तक आराम की नींद नहीं आती।

आज हम ध्यान में एकाग्रता की बात करते हैं तो वह एकाग्रता आएगी कहाँ से? जिनके घर नहीं, परिवार नहीं, मकान नहीं, सोना-चाँदी नहीं, बैंक बैलेंस नहीं, किसी से ईर्ष्या नहीं, वैर-विरोध नहीं, वह सुखी है। वह परम सुखी है। ध्यान में एकाग्रता होगी तो कर्म काटकर, ज्योत में ज्योत जलते देर नहीं लगेगी।

कर्म न काया, मोह न माया,  
भूख न तिरसा रंक न राया।  
एक स्वरूप अरूप अगुरुलघु,  
निर्मल ज्योति महान॥

जय-जय-जय भगवान!

अजर-अमर-अखिलेश निरञ्जन,

जयति सिद्ध भगवान॥

यह सूर्यभानुजी की रचना है। भोपालगढ़ के अध्यापक सूर्यभानुजी की एक-से-बढ़कर-एक रचनाएँ हैं।

हे अनन्त हे अन्तर्यामी, अष्ट गुणों के धारक स्वामी।  
तुम बिन दूजा देव न पाया, त्रिभुवन में अभिराम॥

जय-जय भगवान॥

‘अरिहन्तो महादेवो’ पर अविचल आस्था होनी

चाहिए। जिसको कलक्टर बनना है, वह कलक्टर को देखेगा, जिसको क्रिकेटर बनना है, वह क्रिकेटर को देखेगा और जिसको एक्टर बनना है, वह एक्टर को देखेगा। जिसको सिद्ध बनना है, वह सिद्धों को देखेगा, उसे फिर भोग कहाँ याद आएँगे?

जो भी ध्यान करते हैं वे सिद्धों तक भले ही न पहुँच पाए हों, पर सिद्धों के गुणों का कुछ स्पर्श तो होता ही है। सुखविपाक में भगवान की देशना चल रही है। जीव-अजीव और लोक-परलोक का वर्णन चल रहा है। व्यक्ति अजीव में सुख मानता है, यही मिथ्यात्व है। जीव को अजीव को काम में लेना पड़ता है, यह विवशता है। हम यहाँ बैठे हैं तो मकान में रहना पड़ता है। यह काया कूकरी है। भजन में भंग न हो, इसलिए इसको टुकड़ा देना पड़ता है, यह हमारी विवशता है। इसमें सुख की अनुभूति करना, अनन्त सुख से अपने-आपको वञ्चित करना है।

विनोबा भावे ने माँ से कहा-अपने बेटे को (मुझे) ठण्डी रोटी देती हो और आगत अनाथ लड़के को गर्म रोटी क्यों देती हो? माँ ने कहा-मैं तुझको बेटा मानती हूँ, इस मोह के कारण तुझमें भगवान नहीं दिखते, पर उस लड़के पर मोह नहीं जगता, इसलिए उसमें भगवान दिखता है, इसलिए उसे गर्म रोटी देती हूँ।

आपने सुना होगा, सन् 1982 में विधिवत् संलेखना-संथारा स्वीकार किया था विनोबा भावे ने। इन्दिरा गाँधी ने कहा-पानी तो पीलो। विनोबा बोले-नहीं, मैं चौविहार संथारा कर रहा हूँ। ऐसे जीवन में

संस्कारों की पवित्रता होती है, तो ध्यान और एकाग्रता सम्भव है।

आप अपने बच्चे को 'राजा बेटा-राजा बेटा' कह कर बिगाड़ रहे हैं। मोह की गोद में बालक-बालिकाओं में नैतिकता का विकास नहीं हो सकता। अर्थ के आधीन बच्चों में दया-करुणा के भाव विकसित नहीं हो सकते। समाज के बालकों को तो केवल त्यागी-वैरागी की गोद में ही पालना चाहिए।

बहिन पुष्पाजी यहाँ आईं। वह बारह महीने घर पर बच्चों को निःशुल्क पढ़ाती है। 74-75 साल की उम्र है। घर पर पढ़ने वाले बच्चों को खाना भी खिलाती है। वह कहती है-महाराज! इस देश की संस्कृति में विद्या बेचने की वस्तु नहीं, यहाँ तो विद्यादान की परम्परा रही है।

आज आपको कितनी फुर्सत है? करें तो सब कुछ हो सकता है। संस्कारशाला के 4-5 साल के बच्चे प्रतिक्रमण सुना सकते हैं तो आपको याद क्यों नहीं हो सकता है?

जैसे माता को अपने बेटे का मोह है तो उस बेटे में भगवान नहीं दिखता, वैसे ही हमें जब तक संसार की वस्तुओं से, भोगों से मोह है तो ध्यान कैसे हो पायेगा। इसलिए हमें मोह के त्याग का अभ्यास बढ़ाना है।

आज ध्येय में एकाग्रता बन रही है। याद रखना मुमुक्षु भाव सबमें है। खूब सुन चुके हैं। सुनना तब सार्थक होगा, जब सुनने के साथ आचरण में आयेगा।

## ANTS

**Mrs. Minakshi Dinesh Jain**

- If you put 100 black ants and 100 red ants in a jar, nothing will happen.
- But if you shake the jar, ants will start killing each other.
- Red ants will believe that black is enemy, while black will believe that red

is the enemy.

- But the real enemy is the person who shook the jar.
- The same is true in our society also.
- Before we start fighting each other, we must ask ourselves. Who shook the jar?

-17/729, CHB, Jodhpur (Rajasthan)

## संघ में निष्ठा है तो प्रतिष्ठा स्वतः बढ़ेगी

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा. द्वारा 16 अक्टूबर 2022 को महामन्दिर, जोधपुर में फरमाये गए प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है।  
-सम्पादक

### धर्मानुरागी बन्धुओं!

महत्त्व मिलन का नहीं, महत्त्व है सम्मिलन का। यहाँ दो शब्द हैं—एक है मिलन और दूसरा है सम्मिलन। दोनों में अन्तर है। मिलन का अर्थ है परस्पर मिलना और सम्मिलन का मतलब है दूध में पानी की तरह मिलना। एक मिलन है आपस में मिलने का तो दूसरा सम्मिलन है घुलने—मिलने जैसा।

अनेक व्यक्ति सम्मेलनों में, स्नेहमिलन समारोह में मिलते हैं। लेकिन वह घुलना—मिलना नहीं होता। आज श्रावक—श्राविकाओं का संघ अधिवेशन है। आपका संघ में मिलने—जुलने का दिन है। हमारा संघ सदा से जयवंत रहा है।

आप जानते हैं कि संघ के जितने भी सदस्य हैं, वे आपस में एक—दूसरे से घुलते—मिलते हैं। उन लोगों के विचार एक जैसे हो जाते हैं, तो मिलना सार्थक है और वही मिलना महत्त्व रखता है। मिलना किसका और किसके साथ, यह महत्त्व रखता है। दूध में शक्कर का मिलना सार्थक है और गंगा के पानी का गटर में मिलना निरर्थक है। हमारा मिलन आज सार्थक मिलन होना चाहिए। जैसे भक्त भगवान में मिल जाए, सदस्य भी संघ में मिल जाए और कार्यकर्ता कार्य में घुल—मिल जाए तो मिलना सार्थक है। इसलिए एक मिलन वन्दनीय बना देता है और दूसरा मिलन निन्दनीय। हमारा मिलन गौरवप्रद बने, उसके लिए हम आज मिलन नहीं, सम्मिलन का लक्ष्य बनाएँ।

आपको यह जो जीवन मिला है, वह व्यर्थ ही तेरी—मेरी करने में खोने के लिए नहीं, किन्तु एक—दूसरे से आपस में घुल—मिल जाने के लिए मिला है। यह

जीवन 'खोने' के लिए नहीं, अपितु प्रभु में, गुरु में अथवा संघ में 'खो' जाने के लिए मिला है। आप सब के दिल—दिमाग में यह मंगल—भावना होनी चाहिए कि हम—सब गुरु—भक्त आपस में दूध—पानी की तरह घुल—मिल जायें। हमारा अस्तित्व रहे या नहीं रहे, संघ का अस्तित्व रहना चाहिए। आज का दिन संघ के लिए निष्ठा प्रदर्शित करने का दिन है, संघ के प्रति समर्पित होने का दिन है।

संघ व्यक्ति—व्यक्ति के समूह से मिलकर बनता है। आप—सब सज्जन हैं और संघ सज्जनों का समूह है। संघ की महिमा भगवान ने गाई है। नन्दी सूत्र में संघ की विशेषताओं को उपमाओं द्वारा बताया है।

यहाँ आपको यह ध्यान रखना है कि पहले जिनशासन है और उसके पश्चात् हमारे धर्माचार्य—धर्मगुरु का शासन है। संघनिष्ठा संघ के हर सदस्य में होनी चाहिए। संघ व्यवस्था में संघ पदाधिकारीगण हैं तो संघ के सदस्यगण भी हैं। सामान्य सदस्यों की भी अनदेखी संघ में नहीं होनी चाहिए। अधिकारीगण सामान्य सदस्य की भावनाओं का ध्यान रखें।

संघ—सदस्य आपस में एक—दूसरे की टाँग खींचे तो वह संघ आदर्श नहीं बन सकता। आप चाहे जहाँ देख लीजिए—घर हो या व्यापार—व्यवसाय अथवा कहीं भी आप सार्वजनिक जीवन में हैं, वे सब उस—उस क्षेत्र में फलना—फूलना चाहते हैं, आगे बढ़ना चाहते हैं, विकास करना चाहते हैं। एक आदर्श संघ में सब अपना—अपना काम करें, कोई किसी से अनबन नहीं रखे, क्योंकि संघ सर्वोपरि है।

संघ के प्रति निष्ठा-समर्पण होना चाहिए। संघ निष्ठा हो तो हर काम आसानी से हो जाता है। जो हुक्म में जोखम नहीं है। इस युक्ति को संघ सदस्य ध्यान में रखें तो काम करने में आनन्द आयेगा, संघ की शौहरत भी बढ़ती जायेगी।

संघ यानी सज्जनों का संघ। संघ में सब तरह के विचार-चिन्तन वाले लोग होते हैं। सबको साथ लेकर चलना, यही जिम्मेदारी है। कहावत है कि मतीरों की पोटली नहीं बनती। बहुत सारे मतीरे एक साथ एक चादर में भरकर उठाना कठिन है, तो बहुत सारे विचारों वाले लोगों को एक साथ लेकर चलना कठिन है, पर सुज्ञ-विज्ञ-दक्ष के लिए कठिन नहीं है।

संघ में निष्ठा है तो प्रतिष्ठा स्वतः बढ़ेगी। निष्ठा ही प्रतिष्ठा दिलाती है। कार्यकर्ता के कार्य की अनुमोदना करें और जो काम जिसने भी किया उसे प्रोत्साहन मिले। अगर ऐसा होगा तो हर सदस्य उत्साह से संघ-सेवा में भाग लेगा।

आप-सब गृहस्थ हैं। हर घर में खाना बनता है। जिस घर में चार-छह सदस्य बनाने वाले हों तो देखते हैं कि सभी के बनाये खाने में एक-सा स्वाद नहीं होता। खाने की बात तो छोड़िए, नीम्बू की शिकंजी भी बनानी है तो कोई अधिक तो कोई कम शक्कर डाल देगा। अलग-अलग व्यक्तियों द्वारा बनाये गये पकवानों में स्वाद एक-जैसा नहीं हो सकता। इसी प्रकार अलग-अलग काम करने वालों का काम भी एक जैसा नहीं हो सकता। क्योंकि सभी का तरीका अलग-अलग होता है। बस इतना याद रखें कि काम पूरी निष्ठा से करें। आप घर से देख लीजिए कि जिस घर में काम को काम समझकर किया जाता है वह काम सबके मनपसन्द का हो, यह जरूरी नहीं होता है। ऐसे ही संघ का चाहे जो काम है, उसे महत्त्वपूर्ण काम समझ कर करें। जो कोई करेगा वह कार्य उसके लिए रस वाला होगा यह जरूरी नहीं है, पर उसे अगर संघ सेवा समझ कर करेगा, तो लाभ ही लाभ है। कार्य को भगवान मान कर करेगा तो वह कार्य अच्छा ही सम्पन्न होगा।

आप-सब संघ के प्रति निष्ठावान तो हैं ही, फिर भी आपकी भक्ति, भावना, समर्पण और निष्ठा बढ़ती रहे। संघ को भगवान ने माता-पिता तुल्य माना है। माता-पिता पुण्य से प्राप्त होते हैं। जो पुण्य से मिलते हैं, वे पूजनीय होते हैं। आप माता-पिता की सेवा करें, भक्ति करें और नित्य उठते ही प्रणाम करें तो आपको फायदा होगा, निश्चित वह प्रणाम लाभ प्राप्त करवायेगा।

माता-पिता पूजनीय होते हैं, परफेक्ट नहीं। हम यह स्मरण रखें कि संघ में भी कुछ कमियाँ हो सकती हैं, परन्तु संघ माता-पिता की तरह पूजनीय होता है। क्योंकि संघ व्यक्तियों का समूह होता है और व्यक्ति भूल का पात्र है। काम करते हुए छद्मस्थ द्वारा भूल होना स्वाभाविक है। इसलिए संघ में भी भूल होना स्वाभाविक है। कोई यह कहे कि यह संघ अच्छा नहीं है, वह संघ अच्छा है तो वह व्यक्ति भूल में है। वह संघ भी साधकों का ही है कोई सिद्धों का नहीं है, जहाँ कोई भूल नहीं होती हो। इसलिए जैसे माता-पिता में भूल है तो भी वे पूजनीय ही हैं। कोई भी माता-पिता एकदम सही हो, जिनके द्वारा बच्चों की परवरिश में, देखभाल में कोई भूल नहीं हुई हो, ऐसा मुश्किल है, तो क्या माता-पिता की अवहेलना की जाए? नहीं। तो इसी प्रकार संघ भी भक्ति करने के लिए, अपनी शक्ति का सदुपयोग करने के लिए है। संघ का मज्बू पाकर अपनी शक्ति का दुरुपयोग न हो, यह ध्यान रखें, संघ में निष्ठा बढ़ाएँ।

रत्नसंघ एक आदर्श संघ है। ऐसे आदर्श संघ की सेवा करने वाला संघ-सदस्य सदा-सर्वदा लाभ में रहता है। आप यदि संघ की अवहेलना करेंगे तो आपको नरक-निगोद से छुटकारा नहीं मिल सकता।

एक बुद्धिया थी। उसके घर में बेटा, बेटी और पुत्रवधु थी। माँ ने पुत्र से कहा-“मेरे तो कभी गोड़े फूटे ही नहीं।” तब पुत्र ने कहा-माँ! आपने कभी साइकिल चलाई है क्या?

माँ-नहीं, बेटा! मैंने तो कभी साइकिल नहीं चलाई। पुत्र ने कहा- माँ! आपने जब साइकिल चलाई

ही नहीं, तो गिरने का सवाल नहीं है और गोड़े फूटने का तो प्रश्न ही नहीं है।

संघ में काम करने वाले से गलती हो सकती है। जो काम करेगा उससे भूल होना सम्भव है। हर संघ का सदस्य अच्छे-से-अच्छा काम करना चाहता है, फिर भी कोई-न-कोई कमी रह जाती है। भूल रह गई तो आइन्दा कभी काम नहीं करना, यह समाधान नहीं है। आज भूल हो गई, उसके लिए क्षमायाचना करें, लेकिन काम करना नहीं छोड़ें।

हमारे गुरु असाधारण क्षमता धारण किए हुए हैं और विलक्षण क्षमता वाले हैं, ऐसे गुरु की बात करना हमारे लिए वैभव से कम नहीं है और गुरु के शब्द सोने से भी अधिक मोल वाले हैं। उनके द्वारा प्रदत्त शब्द 'संघ

निष्ठा' में हम सभी आगे बढ़ें। जहाँ निष्ठा होती है, वहाँ थकावट नहीं होती है। देश निष्ठा है तो 18 घण्टे काम करने के बाद भी प्रधानमन्त्री थकते नहीं। हम भी थके नहीं, रुके नहीं।

कार्य को आसान मानकर और निष्ठा से करने पर काम बोझ नहीं लगता है। गुरुदेव फरमाते हैं कि हम संघ में काजल बनकर रहें, कंकर बनकर नहीं। हमारा संघ अस्थिरियों का समूह नहीं, आस्थावानों का समूह है। ऐसे संघ में सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उसका उपयोग करके हम कर्म-निर्जरा करें।

आप अच्छे संघ के सदस्य हैं इसलिए अच्छा काम करें तो संघ की शौहरत बढ़ती रहेगी। इसी भावना के साथ.....।

## तप में श्रेष्ठ ब्रह्मचर्य

श्री अजीत भण्डारी

जैन शास्त्रों में तप की बहुत महत्त्व बताया गया है। पूर्व के सन्त-मुनिराजों ने उग्र तप किए हैं, वर्तमान में भी सन्त-सती भिन्न-भिन्न प्रकार के तप कर अपने कर्मों की निर्जरा करते हैं। गृहस्थ भी कई उत्कृष्ट तप कर अपना जीवन सफल करते हैं।

जैन शास्त्रों में तप कई प्रकार के बताये गये हैं- जैसे भूख से कम खाना, दिन में एक बार ही भोजन करना जैसे साधारण तप का भी महत्त्व है तो मासखमण जैसे बड़े तपों का भी महत्त्व है। इनसे भी बड़ा तथा महान् और श्रेष्ठ तप ब्रह्मचर्य कहा गया है। ब्रह्मचर्य की बहुत महिमा बताई गई है। जैन शास्त्रों में विजय सेठ-विजया सेठानी जैसे कितने ही शीलव्रतधारी साधकों का उल्लेख आया है। हमारे कई सन्त-सती भी छोटी उम्र में दीक्षित हुए और बाल ब्रह्मचारी हैं।

परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा. ने सामायिक-स्वाध्याय के मिशन के साथ

ब्रह्मचर्य व्रत की भी जबरदस्त महिमा बताकर चेतना जगाई और हजारों की संख्या में आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत पालक बनाये।

परम श्रद्धेय वर्तमान आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने भी व्यसनमुक्ति के सन्देश के साथ शीलव्रत पालन की जबरदस्त प्रेरणा प्रदान की है। आपने अपने जीवन काल में हजारों की संख्या में ब्रह्मचर्य व्रत आराधक बनाये हैं। वर्तमान विराजित संत-सतियाँजी म.सा. भी ऐसी ही प्रेरणा करते रहे हैं।

वैष्णव शास्त्र में सुखी जीवन के तीन मन्त्र बताये हैं, वे हैं-अल्पाहारी, अल्पभाषी एवं ब्रह्मचर्य पालन। सद्गुरु भगवन्त तो अपनी प्रेरणा से हजारों ब्रह्मचारी-पालक तैयार करते ही हैं, हमारा भी परम नैतिक कर्तव्य है कि स्वयं इस तप का आराधन कर अपना जीवन सफल करें तथा हम कम से कम एक व्यक्ति और तैयार करेंगे तो यह जिनशासन और संघ की महती सेवा होगी।

-बी-1, दास्या हाऊस, रातानाड़ा, जोधपुर-342011 (राजस्थान)

## चातुर्मासिक पर्व का महत्त्व

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा 13 जुलाई, 2022 को प्रतापनगर, जयपुर में फरमाये गये प्रवचन का आशुलेखन स्थानीय संघाध्यक्ष श्री प्रमोदजी महनोट, जयपुर के द्वारा करवाया गया है।

-सम्पादक

धर्मानुरागी बन्धुओं!

वर्षभर में तीन बार चातुर्मासिक पर्व आता है और तीनों का ही अलग-अलग महत्त्व होता है। तीन चौमासी हैं-1. आषाढी चौमासी, 2. कार्तिकी चौमासी और 3. फाल्गुनी चौमासी, जिसे बोल-चाल की भाषा में, लोक-व्यवहार में होली चौमासी भी कह देते हैं। प्रत्येक चौमासी चार-चार माह की पूर्णाहुति पर आती है। इस तरह 12 माह में तीन चातुर्मासिक पर्व होते हैं। तीनों चातुर्मासिक पर्वों का अलग-अलग महत्त्व है। आषाढी चौमासी-स्थिरता का प्रतीक होती है, कार्तिकी चौमासी-गतिशीलता का प्रतीक होती है और फाल्गुनी चौमासी-निर्णयशीलता का प्रतीक होती है।

साधु-साध्वी जिस स्थान पर आषाढी चातुर्मासिक प्रतिक्रमण कर लेते हैं, उस स्थान को केन्द्र मानकर उसके चारों दिशाओं में दो कोस उपरान्त (7.2 कि.मी.) अवग्रह भूमि का अतिक्रमण चातुर्मास में नहीं करते। आहार-पानी, अध्ययन-अध्यापन, ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप सम्बन्धी किसी भी प्रवृत्ति के लिए श्रमण-श्रमणी जाना चाहे तो दो कोस (लगभग 7.2 कि.मी.) अवग्रह भूमि तक जा सकते हैं और दो कोस की अवग्रह भूमि में जाने पर पंचमी समिति हेतु श्रमण-श्रमणी को एकान्त एवं निरवद्य स्थान की उपलब्धता न हो तो परठने की दृष्टि से आधा कोस (1.8 कि.मी.) और आगे जाने की आगम अनुज्ञा है। इन कारणों के सिवाय साधु-साध्वी ने जहाँ आषाढी चौमासी का प्रतिक्रमण किया उसी स्थान पर चातुर्मास पर्यन्त वे स्थिर रहते हैं। निष्प्रयोजन गमनागमन नहीं करते हैं, इसलिए

आषाढी चौमासी स्थिरता का प्रतीक है।

सन्तों का नवकल्पी और साध्वियों का पंचकल्पी विहार होता है, जिसमें 8 मास (शेषकाल) के 8 कल्प और 1 चातुर्मासिककल्प, इस प्रकार साधु के 9 कल्प और साध्वी के 8 मास के 4 कल्प (एक स्थान पर 58 अहोरात्रि रुकने की आगम अनुज्ञा है) और 1 चातुर्मास कल्प इस प्रकार साध्वीजी के 5 कल्प होते हैं, इन 8 मास में विचरण और 4 मास में स्थिरता रहती है।

चातुर्मास के समय साधु-साध्वी एक जगह ठहरकर विचरण करते हैं और 8 मास विहार करके भी स्थिर रहते हैं, स्थित रहते हैं। आप सोच रहे होंगे-यह क्या पहेली है कि एक जगह ठहरकर विचरण और विचरण करते हुए स्थिर। इसे समझने का प्रयास करें-आगम कहता है सन्त-सती आज्ञा लेकर ठहरते हैं और ज्ञान-दर्शन-चारित्र एवं आत्म-भाव में विचरण करते हैं। शेषकाल में विहार करते हुए, ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए भी संयम में स्थिर रहते हैं, आत्म-भावों में स्थित रहने का उपक्रम करते हैं। इसलिए कहा-एक जगह ठहरकर विचरण करते हैं और विचरण करते हुए ठहरते हैं।

कार्तिकी चौमासी गतिशीलता का प्रतीक है। आगम आज्ञानुसार संयम में चलना मुनि जीवन का धर्म है, मुनि का कर्म है। कार्तिकी चौमासी का प्रतिक्रमण पूर्ण होने के बाद मिगसर यदि प्रतिपदा को सुखे-समाधौ सभी सन्त-सतियों को चातुर्मास स्थल से विहार करना अनिवार्य होता है। रुग्ण, वृद्ध, जंघाबल क्षीण शारीरिक विपदा आदि के कारणों से अन्यत्र विहार करने की

स्थिति नहीं हो पाने के कारणों को वर्जकर स्वस्थ अवस्था में रहने वाले श्रमण-श्रमणी कार्तिकी चौमासी पूर्ण करने के बाद गति करते हैं, विहार करते हैं, नगर-नगर, गाँव-गाँव विचरण करते हैं।

एक जगह स्थिर होना भी श्रमणचर्या है तो एक समय के पश्चात् विहार करना भी श्रमणचर्या का अभिन्न अंग है। एक जगह स्थिरता में 'जीवरक्षा' का भाव है तो एक समय पश्चात् विहार करने में 'संयम सुरक्षा' का लक्ष्य है। जहाँ जीवरक्षा का लक्ष्य है वहाँ संयम सुरक्षा अन्तर्निहित है और जहाँ संयम-सुरक्षा है वहाँ जिनशासन की रक्षा सन्निहित है।

फाल्गुनी चौमासी निर्णयशीलता की प्रतीक है। मारवाड़ में विचरण करने वाली अधिकांश परम्पराएँ पूर्वजों से चली आ रही इस परम्परा का अभी तक निर्वहन करती हैं कि फाल्गुनी चौमासी प्रतिक्रमण होने के पूर्व तक अपने आगामी चातुर्मास की उद्घोषणा नहीं करना। अगला चातुर्मास किस क्षेत्र में करना है यह निर्णय मारवाड़ी परम्परा में फाल्गुनी चौमासी के बाद होता है। इसलिए फाल्गुनी चौमासी को निर्णयशीलता का प्रतीक कहा है।

आज आषाढी चौमासी है, आज का दिन मंगलकारी है, जीवन के कल्याण करने का दिन है। सन्त चातुर्मास पाँच कारणों से करते हैं-

**(1) जीवरक्षा के लिए-** वर्षाकाल में जीवों की उत्पत्ति उच्च स्तर पर होती है, उनका हलन-चलन अधिक होता है। उन जीवों की विराधना न हो, हिंसा न हो, उन सब जीवों की यतना हो सके इसके लिए सन्त चातुर्मास करते हैं। श्रावक सन्त को देखकर चलता है इसलिए श्रावकवर्ग को भी चातुर्मास काल में जीवों की विशेष उत्पत्ति होने के कारण यतना में सजग होना चाहिए। पूर्व के समय में राजा-महाराजा युद्ध, संग्राम, यात्रा आदि वर्षा काल में स्थगित कर देते थे जो अहिंसा धर्म की आराधना को पुष्ट करता है।

**(2) ज्ञान की प्राप्ति के लिए-** चातुर्मासकाल

ज्ञानार्जन का अवसर लेकर आता है। स्थिरता होने से इस काल में ज्ञानार्जन की अनुकूलता रहती है। सन्त-सती के स्वयं के प्रथम मनोरथ 'अपूर्व ज्ञान प्राप्त करना' की पूर्ति का श्रेष्ठ समय चातुर्मास काल होता है और सन्त-सती, श्रावक-श्राविकाओं के ज्ञानार्जन में भी निमित्त बनते हैं।

**(3) तप अनुष्ठान के लिए-** चातुर्मास तप साधना के लिए सर्वश्रेष्ठ समय होता है। शरीर सुगठित बनाने की ऋतु-सर्दी, व्यापार जमाने का समय-गर्मी और तप-आराधना करने का समय-चातुर्मास का होता है। परिहारविशुद्धि चारित्र की आराधना में तप करने का वर्णन आता है। उसमें बताया है कि गर्मी में जघन्य उपवास, मध्यम बेला एवं उत्कृष्ट तेला, सर्दी में जघन्य बेला, मध्यम तेला एवं उत्कृष्ट चोला और चातुर्मास में जघन्य तेला, मध्यम चोला, उत्कृष्ट पचोला तप करना चाहिए। इससे यह बात परिलक्षित होती है कि चातुर्मास में अन्य ऋतुओं की अपेक्षा तप सहज होता है।

**(4) संघवृद्धि के लिए-** नियमित जिनवाणी के प्रवचन से, उपदेशों से कइयों को वैराग्य उत्पन्न हो जाता है। जो हलुकर्मी होते हैं, सरल होते हैं, वे शीघ्र आत्म-स्वरूप का बोध कर लेते हैं, संयम के मार्ग पर आगे बढ़ते हैं, संयम लेने वालों की संख्या संघ की वृद्धि करती है। जो संयम नहीं ले पाते वे गृहस्थ जीवन में रहते हुए पाप को हेय समझते हुए कम से कम पाप-सेवन करते हैं। ऐसे श्रावक-श्राविका भी तैयार होते हैं।

**(5) प्रवचन प्रभावना के लिए-** प्रवचन का जन-मानस पर गहरा प्रभाव पड़ता है, लोगों को तत्त्व समझने का, हेय-ज्ञेय-उपादेय समझने का पर्याप्त अवसर प्राप्त होता है। प्रवचन से नये तथ्य नये सत्य उजागर होते हैं। चातुर्मासकाल सुदीर्घकाल है। इस काल में निरन्तर प्रवचन-श्रवण का अवसर सुगम होता है, इसलिए प्रवचन श्रवण के समय कोई प्रमाद में नहीं रहे। इस प्रकार इन पाँच कारणों से सन्त एक जगह स्थिर रहकर चातुर्मास करते हैं।

आज मैं एक ऐसी चर्चा करना चाहता हूँ जिसके बारे में कभी विचार नहीं किया जाता है। वह है गुरुदेव के द्वारा चातुर्मास खोलते समय रखे जाने वाले आगार। जिस समय गुरुदेव चातुर्मास खोलते हैं उसके पूर्व एक पंक्ति फरमाते हैं- “द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के आधार पर साधु मर्यादा में रखे जाने वाले आगारों के साथ आपके संघ को चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान की जाती है।” मैं आपसे पूँछू कि वे आगार कौनसे हैं? वे कौन-कौनसी परिस्थितियाँ हैं जिनमें खोले हुए चातुर्मास भी निरस्त किये जा सकते हैं। हम आज आषाढी चौमासी के उपलक्ष्य में द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के माध्यम से उन सभी आगारों को अर्थात् उन सभी स्थिति-परिस्थितियों को समझेंगे।

### द्रव्य से

(1) अन्यत्र विराज रहे साधु-साध्वी वर्ग की अचानक वैयावृत्य का प्रसंग उपस्थित होने पर खुला हुआ चातुर्मास निरस्त किया जा सकता है। जिनशासन में वैयावृत्य अर्थात् सेवा की बड़ी महत्ता है, इससे यह बात परिलक्षित होती है। गुरुदेव की शासन-व्यवस्था में ऐसे प्रसङ्ग बने हैं जब जहाँ सेवा का अवसर आया तब वहाँ गुरुदेव ने स्वयं की अनुकूलता को गौण कर सन्तों की समाधि के लिए, सन्त-सती की सेवापूर्ति के लिए चातुर्मास परिवर्तित किया और चातुर्मास में भी सन्तों को विहार की अनुज्ञा देकर संघ और सेवा कार्य की गरिमा को कायम रखा।

(2) संगठन सम्बन्धी कार्य की प्रमुखता अर्थात् जिस संघ में किसी बात को लेकर चातुर्मास करने पर विवाद गहराने की सम्भावना हो अथवा नया विवाद होने की सम्भावना तो ऐसी परिस्थिति में चातुर्मास घोषित होने के पश्चात् निरस्त भी किया जा सकता है।

(3) चातुर्मास कराने वालों में आपसी क्लेश, मतभेद, मनोमालिन्य अत्यधिक होने पर चातुर्मास निरस्त किया जा सकता है।

(4) किसी अन्य क्षेत्र के चातुर्मास माँगने पर

स्वीकृत स्थल के श्रीसंघ द्वारा सहमति दिये जाने पर वह चातुर्मास निरस्त किया जा सकता है। मेरे जीवन में ऐसा प्रसंग सामने आया। सन् 2017 में सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा का पाली चातुर्मास गुरुदेव ने स्वीकृत कर दिया। चातुर्मास पूर्व मेरा और श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा. का दो ठाणा से नागौर अक्षय तृतीया पर फरसना हुआ। नागौर प्रवास के दौरान लोगों की भावना बनी कि हम इन दो ठाणा का चातुर्मास नागौर करवा लें। तत्काल नागौर शिष्ट मण्डल गुरुदेव की सेवा में गोटेन पहुँचा। गुरुदेव ने नागौर पर महती कृपा कर फरमाया- “मैंने 2017 का चातुर्मास पाली खोल दिया है, पाली संघ यदि आपको चातुर्मास प्रदान करे तो मेरी ओर से स्वीकृति है।” नागौर संघ पाली पहुँचा और पाली संघ-सदस्यों को निवेदन किया, लेकिन पाली संघ अपनी स्थिति-परिस्थिति के कारण से नागौर संघ को स्वीकृति नहीं दे पाया। कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसे प्रसङ्ग आने पर दोनों संघों की आपसी रजामन्दी मिल जाने पर खुला हुआ चातुर्मास भी निरस्त किया जा सकता है।

(5) चातुर्मास स्थल संयम निर्वाह योग्य नहीं होने पर अर्थात् परठने, गोचरी-पानी आदि की दुर्लभता के कारणों से चातुर्मास बदला जा सकता है।

(6) अन्यत्र कहीं दीक्षा-प्रसंग उपस्थित होने पर। चातुर्मास किसी अन्य क्षेत्र में घोषित हुआ है और किसी अन्य क्षेत्र में कोई दीक्षा लेने की भावना रख रहे हैं उनका मनोबल दृढ़ करने, उनके संयम में सहयोगी बनने के लिए चातुर्मास परिवर्तित किया जा सकता है।

(7) किसी को प्रतिबोध देने के लिए भी चातुर्मास परिवर्तित किया जा सकता है।

(8) स्वास्थ्य प्रतिकूल हो जाने पर, रोग के आक्रमण हो जाने के कारण चातुर्मास स्थल पर नहीं पहुँच पाने की स्थिति में चातुर्मास परिवर्तित किया जा सकता है। इस प्रकार ये 8 नियम ‘द्रव्य रूप में’ आपके सामने रखें।



**क्षेत्र से**

(1) समय कम एवं दूरी अधिक होने पर चातुर्मास बदला जा सकता है। क्षेत्र की दूरी अधिक है, चलने की गति धीमी है, पहुँचने की स्थिति नहीं है, उस परिस्थिति में चातुर्मास परिवर्तित किया जा सकता है।

(2) प्राकृतिक प्रकोप होने पर—जैसे सन् 2020-2021 में कोरोना के कारण से खोले गये अनेक चातुर्मास निरस्त किये गये। प्राकृतिक प्रकोप में ईति अर्थात् संकट के कारण चातुर्मास बदला जा सकता है। संकट भी 6 प्रकार के होते हैं—1. अतिवृष्टि, 2. अनावृष्टि, 3. शलभ-टिड्डीदल, 4. मूषक-चूहों आदि का प्रकोप, 5. युद्ध और 6. रोग। इन सब कारणों के होने पर प्राकृतिक प्रकोप से चातुर्मास परिवर्तित किया जा सकता है।

(3) राजनैतिक कारणों से—क्षेत्र के अशान्त होने पर, जातिगत विद्रोह, कलह, आतंकवादी आदि के कारण से कोई उपद्रव होने एवं उपद्रव शान्त नहीं हो पाने की स्थिति में चातुर्मास परिवर्तित किया जा सकता है।

**काल से**

(1) दुष्काल या अकाल होने पर, (2) भूखमरी फैलने पर और (3) युद्धजन्य स्थिति होने पर खोला हुआ चातुर्मास भी बदला जा सकता है।

**भाव से**

(1) आत्म-समाधि बनाये रखने के लिए, (2) अन्यत्र विशेष उपकार की स्थिति बन रही हो, (3) अन्तरात्मा के नहीं मानने पर और (4) जीवदया की विशेष उपकारजन्य स्थिति होने पर चातुर्मास परिवर्तित होते हैं।

जिनशासन का प्राण-अनेकान्त है। यहाँ प्रत्येक विधि-विधान के पीछे हेतु है, उद्देश्य है, सार्थक प्रयोजन है, जिसकी पूर्ति हेतु चातुर्मास करने जैसा निर्णय भी बदला जा सकता है।

हम पूज्य गुरुदेव की आज्ञा से चातुर्मास करने जा रहे हैं। आज से चार माह सन्त स्थिरता के साथ ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप की आराधना में अग्रसर होंगे। श्रावक-श्राविकाओं से अनुरोध है आप सभी अपने भीतर के पुरुषार्थ को जगाकर साधना-आराधना में आगे बढ़ें।

चौमासी चार माह के अन्तराल में व्रतों में लगे अतिचारों की शुद्धि करने का दिन है। यह आत्म-विशुद्धि का दिवस है। साथ ही एक और प्रसङ्ग गुरु पूर्णिमा भी आज है। गुरु के उपकार अनन्त हैं, हम गुरु के उपकारों से यदि उन्नत होना चाहते हैं तो हम गुरु के चले नहीं, शिष्य बनें।

चेला और शिष्य में अन्तर होता है। आगम में शिष्य शब्द आता है, चेला शब्द नहीं। चेले और शिष्य में क्या-क्या अन्तर हैं तो देखिए—

(1) जो अपनी चलाये वह चेला और जो गुरु की आज्ञा में चले वह शिष्य है, (2) जो गुरु के पट्ट (पाट) को, फोटो को पूजता है वह चेला और जो गुरु के पथ पर चलता है वह शिष्य है, (3) जो मात्र गुरु के चरण को छूता है वह चेला और जो गुरु के चरण के साथ आचरण को छूता है वह शिष्य होता है।

हम सब चिन्तन करें कि हम चेले हैं या शिष्य? शिष्य वही होता है जो गुरु के चरणों में सिर लगाता है मगर गुरु की आज्ञा में सिर (दिमाग) नहीं लगाता, अपितु गुरु की आज्ञापालन में तहत्ति कहकर सिर झुका देता है। एक बात याद रखना—जो गुरु की आज्ञा में माथा (दिमाग) लगाता है उसके माथे में कभी शान्ति नहीं रह सकती। आज यदि आप सभी गुरु पूर्णिमा पर गुरु भक्ति करना चाहते हैं, गुरु-समर्पण करना चाहते हैं तो यही समर्पण करें कि मैं शिष्य बनूँगा, चेला नहीं। इन्हीं शुभभावों के साथ।



गुणी के गुणगान करने वाले की जिह्वा पवित्र हो जाएगी, सुनने वाले के कान पवित्र हो जायेंगे, पर जीवन पवित्र कैसे होगा? जरूरत है उनके गुणों को आत्मसात् करने की।

-आचार्यश्री हीरा

## जैनदर्शन में योग के भेद

साध्वी रुचिदर्शनाश्रीजी

जैनधर्म का प्राण तत्त्व निवृत्ति है। आत्मिक अथवा अध्यात्मिक विकास के लिए निवृत्ति पर विशेष बल दिया गया है और इसके लिए योग नितान्त अपेक्षित है। योग शब्द 'युज्' धातु से बना है। संस्कृत-व्याकरण में युज् धातु का उल्लेख है, जिसका अर्थ होता है- जोड़ना या संयोजित करना।<sup>1</sup> द्वात्रिंशद्वा-त्रिंशिका में उपाध्याय यशोविजयजी कहते हैं कि जो साधना मोक्ष के साथ योजित करती है वह योग है। मोक्ष की हेतुभूत प्रवृत्ति योग है।<sup>2</sup> आचार्य हरिभद्र के अनुसार सभी प्रकार के धर्म-व्यापार जो आत्मा को मोक्ष से जोड़ते हैं वे योग हैं।<sup>3</sup> योगविंशिका ग्रन्थ में साधना की प्रक्रिया के आधार पर योग के पाँच भेद बताएँ हैं।

1. स्थान 2. ऊर्ण 3. अर्थ 4. आलम्बन एवं 5. अनालम्बन।<sup>4</sup>

1. **स्थान**—इसका अर्थ है स्थित होना। पातञ्जल योगसूत्र में इसे आसन कहा गया है।

2. **ऊर्ण**—इसमें शास्त्र विहित सूत्रों का उच्चारण किया जाता है। उनकी स्वर-सम्पदा, मात्रा आदि पर ध्यान दिया जाता है।

3. **अर्थ**—ऊर्ण में जिन सूत्रों का उच्चारण किया जा रहा है उन सूत्रों का अर्थ समझना। यह साधन ज्ञान योग का प्रारम्भ बिन्दु है।

4. **आलम्बन**—इसमें साधक परमात्मा की प्रतिमा आदि बाह्य साधन को ध्येय मानकर ध्यान की क्रिया करता है जो मन की एकाग्रता के लिए आवश्यक है।

5. **अनालम्बन**—बाह्य आलम्बन का त्याग कर केवल आत्मस्वरूप का ही चिन्तन करने को अनालम्बन

योग कहा जाता है। यहाँ मन केन्द्रित हो जाता है और आत्मस्वरूप की प्रतीति होने लगती है।

योगविवेकद्वात्रिंशिका में ग्रन्थकार ने योगदृष्टि समुच्चय ग्रन्थ के आधार पर तीन प्रकार के योग बताए हैं—1. इच्छायोग 2. शास्त्रयोग 3. सामर्थ्ययोग।

1. **इच्छायोग**—इस योग में अनुष्ठान करने की इच्छा जाग्रत होती है। प्रमादादि के कारण काल-विनय-बहुमान आदि योगांगों की उपेक्षा होती है। अतः इच्छायोग विकलयोग होता है।<sup>5</sup> संविग्नपाक्षिक को इच्छा योग प्रधान होता है।

2. **शास्त्रयोग**—शास्त्रयोग में शास्त्र अर्थात् आगम की प्रधानता होती है। इसके द्वारा साधक अविक्ल अखण्डयोग स्थिति को प्राप्त कर लेता है। तीव्र श्रद्धा और बोध के द्वारा शक्ति को छुपाए बिना की जाने वाली अप्रमत्त साधक की अखण्ड आराधना शास्त्र योग कहलाती है।<sup>6</sup>

3. **सामर्थ्ययोग**—शास्त्र के अनुसार मोक्ष का पुरुषार्थ करने वाले साधक का आत्म-सामर्थ्य जब अत्यन्त प्रबल बन जाता है और साधक शास्त्रोक्त विषय से ऊपर उठकर स्वयं के सामर्थ्य से मोक्षमार्ग में आगे बढ़ता है, वह सामर्थ्ययोग कहा जाता है।<sup>7</sup> यह योग वस्तुतः मोक्ष का साक्षात् कारण है, क्योंकि यह प्रातिभ ज्ञान से युक्त तथा सर्वज्ञता की प्राप्ति कराने वाला है। इस योग के साधक का अनुभव अनिर्वचनीय होता है।<sup>8</sup>

सामर्थ्ययोग दो प्रकार का है—1. धर्म संन्यास 2. योग संन्यास।

1. **धर्म संन्यास सामर्थ्ययोग**—'धर्म' शब्द से क्षमादि क्षायोपशमिक धर्म ग्राह्य है। 'संन्यास' शब्द

त्याग को सूचित करता है।<sup>9</sup> धर्म संन्यास अर्थात् धर्म का त्याग। द्वितीय अपूर्व करण के समय जीव क्षायोपशमिक भाव से उत्पन्न क्षमादि गुणों का त्याग करता है। प्रब्रज्या के समय पूजा पौषध आदि स्थूल धर्म का त्याग होता है, यह अतात्त्विक धर्म संन्यास सामर्थ्ययोग है। क्षपक श्रेणी वाले योगी को क्षायोपशमिक गुणस्वरूप सूक्ष्म धर्म का त्याग तात्त्विक धर्म संन्यास सामर्थ्ययोग होता है। तत्पश्चात् क्षायिक गुण प्रगट होना शुरू होते हैं।

**2. योग संन्यास सामर्थ्ययोग**—योग संन्यास अर्थात् मन-वचन-काया स्वरूप योग का त्याग है। धर्म संन्यास का योगी आत्मविकास करते करते क्रमशः योग संन्यास की अवस्था तक पहुँचता है। इसी अवस्था को शैलेशीकरण अवस्था कहते हैं।<sup>10</sup> इस अवस्था का अपरनाम अयोग अवस्था अथवा सर्व संन्यास योग अवस्था है। योगभेदद्वान्निशिका में योग के पाँच भेद निम्न प्रकार से किये गये हैं, जिनका उल्लेख योगबिन्दु एवं षोडशक ग्रन्थ में भी आया है।

1. अध्यात्मयोग 2. भावनायोग 3. ध्यानयोग 4. समतायोग 5. वृत्तिसंक्षय योग।<sup>11</sup>

**(1) अध्यात्मयोग**—अध्यात्मयोग के अन्तर्गत जीव का अणुव्रत अथवा महाव्रत आदि का ग्रहण औचित्यपूर्ण होता है। जीवादि नवतत्त्व का चिन्तन जिनवचन के अनुसार होता है, अपनी मति कल्पना के अनुसार नहीं। अध्यात्मयोग में प्रतिष्ठित योगी का तत्त्व चिन्तन शुष्क नहीं, बल्कि मैत्र्यादि भावों से स्निग्ध होता है।

**(i) मैत्रीभावना**—अन्य जीवों के सुख की इच्छा मैत्री कही गई है। वह चार प्रकार की है—

**1. उपकारी के प्रति मैत्री**—स्वयं के प्रति उपकार करने वाले माता-पिता आदि के सुख की चिन्ता करना।

**2. स्वजन के प्रति मैत्री**—इस मैत्री में माता-पिता के अतिरिक्त अन्य कौटुम्बिक सम्बन्ध वाले

अथवा मित्र परिचित वर्ग के हित की चिन्ता का समावेश है। इस प्रकार की मैत्री जीव में कुछ अधिक विवेक प्रकट होने से होती है।

**3. स्वाश्रित विषयक मैत्री**—इस मैत्री में स्वयं के उपकारी और कौटुम्बिक के अतिरिक्त अपने आश्रित रहे हुए दास आदि सभी जीवों के हित की चिन्ता का शुभ अध्यवसाय होता है।

**4. अखिल जीवराशि के प्रति मैत्री**—किसी प्रकार के सम्बन्ध के बिना सभी जीवों के सुख की चिन्ता इस मैत्री में होती है। इस मैत्री में अत्यन्त उदारता होने से उपकारी हो अथवा अनुपकारी, स्वजन हो या न हो, आश्रित हो या न हो ऐसी सभी जीवों के प्रति सुख की चिन्ता करने का विशाल अध्यवसाय होता है। किसी जीव की यदि प्रतिकूल प्रवृत्ति है तब भी उसके हित की ही इच्छा रहती है।<sup>12</sup>

**(ii) करुणा भावना**—दूसरों के दुःख को दूर करने की इच्छा करुणा कहलाती है। वह चार प्रकार की है—

**1. मोहजनित करुणा**—यह करुणा अविवेक और अज्ञान से उत्पन्न होती है। जीवों के पापारम्भ में सहायक जो करुणा होती है, वह मोहजनित करुणा है।

**2. दुःखित के दर्शन से उत्पन्न करुणा**—दीन दुःखियों को देखकर उन के दुःख को दूर करने के भाव से आहार, वस्त्रादि देने की अभिलाषा इसमें होती है। इसमें मोहजन्य परिणाम नहीं रहता है।

**3. संवेगजनित करुणा**—जीव सुखी हो अथवा दुःखी, किन्तु प्रीतियुक्त जीवों को सांसारिक चार गति के परिभ्रमण स्वरूप दुःख को दूर करने के भाव से उनको धर्म में जोड़ने की अभिलाषा रूप छद्मस्थ जीवों द्वारा की जाने वाली यह तीसरी करुणा है।

**4. स्वभावजनित करुणा**—किसी भी प्रकार के प्रीति सम्बन्ध के बिना सभी जीवों पर स्वभाव से केवली भगवन्त को करुणा होती है। तेरहवें गुणस्थानकवर्ती

सयोगी केवली योग्य जीवों के उपकार के लिए उचित प्रयत्न करते हैं।

(iii) प्रमोदभावना—प्रमोद अर्थात् सन्नुष्टि। किसी की अच्छी स्थिति को देखकर चित्त में होने वाला आनन्द प्रमोद भावना है। यह भावना भी चार प्रकार की है।<sup>13</sup>

1. आपातरम्य सुख में प्रमोद—स्वपर के वैषयिक सुख में आनन्द की अनुभूति करना। यह परिणाम अत्यन्त ही घातक है, यह प्रमुदिता भावना अविवेक मूलक है।

2. सद्भेतुरम्य सुख में प्रमोद—स्व-पर के इस लोक की विवेकपूर्वक प्रवृत्ति के सुख में आनन्द का अनुभव होना। जैसे व्यक्ति हित-मित आहार करता है तो शारीरिक स्वास्थ्य आदि ठीक रहता है, उसे देखकर चित्त में जो आनन्द होता है, वह दूसरे प्रकार की मुदिता भावना है।

3. अनुबन्ध युक्त सुख में प्रमोद—जीव के द्वारा विवेकपूर्ण योगमार्ग में प्रवृत्ति करने के फलस्वरूप अविच्छिन्न सानुबन्ध सुख की परम्परा प्राप्त होती है, ऐसा जानकर स्व-पर की ऐसी प्रवृत्ति के प्रति आनन्द का होना।

4. प्रकृष्ट सुख में मुदिता—मोह क्षयादि से प्राप्त सुख में आनन्द का होना। बारहवें एवं तेरहवें गुणस्थानकवर्ती योगियों को मोह क्षयादि से प्रकट प्रकृष्ट सुख एवं सर्व कर्म के क्षय से सिद्ध के जीवों को अव्याबाध सुख होता है, उसका स्मरण करके हृदय में प्रमोद भाव होना चौथे प्रकार की मुदिता भावना है। उपर्युक्त चारों मुदिता भावना उत्तरोत्तर श्रेष्ठ है।

(iv) उपेक्षा भावना—उपेक्षा भावना माध्यस्थ स्वरूप है। यह चार प्रकार की है—

1. करुणाजनित उपेक्षा—कोई व्यक्ति अहित में प्रवृत्ति करता है। यदि उसके अहित के निवारण के लिए प्रयत्न किये जाने पर वह और अधिक अहित में

प्रवृत्ति करता है, तो ऐसा जानकर करुणा से उसके प्रति उपेक्षा की जाती है।

2. अनुबन्ध से अनवसर में उपेक्षा—किसी व्यक्ति की अनुचित प्रवृत्ति का निवारण करने के लिए अवसर की प्रतीक्षा करना अनवसर पर उस प्रवृत्ति की उपेक्षा करना। अन्यथा अनुचित प्रवृत्ति का प्रवाह चालू रहेगा। यह दूसरे प्रकार की उपेक्षा है।

3. निर्वेदजनित उपेक्षा—संसार जीवों का इन्द्रियजन्य सुख दुःख से घिरा हुआ है। अतः ऐसे असार सुख में योगियों को निर्वेद के कारण उपेक्षाभाव रहता है।

4. तत्त्व चिन्तन जनित उपेक्षा—मनोज्ञ और अमनोज्ञ वस्तु परमार्थ से राग-द्वेष को उत्पन्न करने वाली नहीं है, बल्कि जीव के मोह आदि विकार के कारण राग-द्वेष उत्पन्न होता है। इस प्रकार के तत्त्व चिन्तन के कारण सभी वस्तुओं में उपेक्षा भाव रहता है। यह चौथी उपेक्षा है।

मैत्र्यादि भावनाओं से विशुद्धचित्त अत्यन्त संवेग वाला बनता है। ऐसे चित्त को अध्यात्म कहा गया है।<sup>14</sup>

पंतजलि ऋषि के अनुसार सुखी जीवों से मैत्री करना, दुःखी जीवों के प्रति करुणा करना, पुण्यशाली जीवों के प्रति प्रमोद भाव एवं पुण्यरहित अधर्मी जीवों के प्रति उपेक्षा करना। इस प्रकार की भावना से चित्त प्रसन्न बनता है। प्रसन्न चित्त अध्यात्म प्राप्ति में उपयोगी है।<sup>15</sup>

(2) भावनायोग—वृद्धिगत ज्ञान के अनुगत अध्यात्म का अभ्यास भावनायोग है।

अर्थात् कोई साधक शास्त्रानुसार तत्त्व का चिन्तन करके अध्यात्म को प्रकट करता है, ज्ञान से युक्त पुनः—पुनः अध्यात्म का अभ्यास करने से उत्तरोत्तर आत्मिक भाव में आत्मा का निवेश होता है। इस प्रकार के अध्यात्म के अभ्यास को भावनायोग कहा गया है। भावनायोग के अभ्यास से अशुभभाव की निवृत्ति एवं शुभभावों की वृद्धि होती है।<sup>16</sup>

भावनायोग के साधक भावना को अत्यन्त दृढ़

करने के लिए तथा चित्त को संस्कारित करने के लिए पाँच प्रकार की भावना से भावित होते हैं—1. ज्ञान, 2. दर्शन, 3. चारित्र, 4. तप और 5. वैराग्य।

भावना के इन पाँच भेदों से जीव मन-वचन-काया के योगों को अत्यन्त संवृत करके ज्ञानादि पाँच भावों में स्थिर रह सकता है।<sup>17</sup>

**1. ज्ञानभावना**—ज्ञेय का ज्ञान करना जीव का पारमार्थिक स्वभाव है। किन्तु ज्ञेय पदार्थों को जानने की उत्सुकता एवं रागादि भाव करना यह जीव का स्वभाव नहीं है। ज्ञानभावना से भावित आत्मा में निर्मल कोटि के ज्ञान संस्कार शीघ्र उपस्थित होते हैं।

**2. दर्शनभावना**—तत्त्व को तत्त्व के रूप में स्वीकार करना जीव का पारमार्थिक स्वभाव है। इस स्वभाव में सतत उपयोग रहे, इसलिए तत्त्व को तत्त्व के रूप में देखने का प्रयत्न करना जरूरी है। जिससे सम्यग्दर्शन दृढ़ बनता है और साधक सहज दर्शन भाव में जा सकता है।

**3. चारित्रभावना**—आत्मभावों में रमणता जीव का पारमार्थिक स्वभाव है। आत्मभावों को प्रकट करने के लिए समिति गुप्ति का आचरण प्रबल साधन है। ऐसे चारित्र भावों से आत्मा को भावित करने से साधक सहज चारित्र भाव में जा सकता है।

**4. तपभावना**—जीव का पारमार्थिक स्वरूप कर्मों से रहित है। कर्मों को आत्मा से दूर करे, जीव की ऐसी परिणति तप है। जीव की इस परिणति का आविर्भाव करने के लिए बारह प्रकार के तप बताए हैं। तप के सेवन से योगी कर्मरहित मूल स्वरूप को प्रकट कर सकता है। इस प्रकार के सूक्ष्म चिन्तन से योगी निर्जरा के अनुकूल तप भाव में जाने के लिए समर्थ बनता है।

**5. वैराग्यभावना**—जीव का पारमार्थिक स्वरूप बाह्य विषयों से विरक्त है। आत्मा पुद्गल द्रव्य से सर्वथा भिन्न है। अनादि के रागादि संस्कारों के कारण जीव बाह्य पदार्थों में रति अरति करता है। इस प्रकार के

चिन्तन से भावित योगी शीघ्र ही विरक्त भाव को प्राप्त करता है।

भावनायोग का साधक इन पाँच भावनाओं से चित्त को संस्कारित कर उत्तरोत्तर ध्यान के अनुकूल चित्त की भूमिका को प्राप्त करता है।

**(3) ध्यानयोग**—भावना योग से सम्पन्न योगी ध्यान में यत्न करते हैं। उपयोग में विजातीय प्रयत्न का व्यवधान न हो, ऐसा प्रशस्त एक विषयक बोध ध्यान कहा जाता है वह सूक्ष्म उपयोग युक्त होता है।<sup>18</sup> यह ध्यान चार विशेषणों से युक्त है।

**1. स्थिर प्रदीप सदृश उपयोग**—टीका में उपयोग शब्द की व्याख्या करते हुए लिखा है कि ध्यान में उपयोग स्थिर प्रदीप समधारा लग्न होता है, अर्थात् प्रथम दर्शनोपयोग फिर ज्ञानोपयोग इस प्रकार उपयोग का प्रवाह नहीं होता है। अतः ध्यान में अविच्युत ज्ञानधारा चलती रहती है।

**2. विजातीय प्रत्यय-अव्यवधान वाला**—ज्ञान का जो उपयोग है वह विजातीय प्रत्यय के व्यवधान वाला नहीं है। अर्थात् ज्ञान का उपयोग विषयान्तर नहीं होता है।

**3. प्रशस्त एकार्थबोध वाला**—ध्यान का उपयोग प्रशस्त एकार्थ बोध वाला होना चाहिए। यदि अप्रशस्त एकार्थ बोध वाला होता है, तो वह अशुभ ध्यान कहलाता है।

**4. सूक्ष्म आलोचन से युक्त**—जगत के समस्त पदार्थ उत्पाद-व्यय धौव्यात्मक हैं। किसी प्रशस्त आलम्बन के ध्यानमय उस पदार्थ के उत्पाद-व्यय एवं धौव्य स्वरूप का अखण्ड उपयोग चलता है, उत्पाद व्यय एवं धौव्यता में से किसी की मुख्यता किसी की गौणता हो सकती है। अस्खलित उपयोग की धारा ही ध्यान योग है।

**(4) समतायोग**—इस जगत में जीव के लिए कोई भी पदार्थ इष्ट या अनिष्ट रूप नहीं है। स्वयं के आत्म स्वरूप में लीनता ही एकमात्र उसके लिए उपादेय

है। कर्मों से आवृत्त स्वयं के वास्तविक स्वरूप को देखने में प्रतिबन्धक ऐसे मिथ्यात्व मोहनीय के दृढ़ संस्कारों के कारण जीव में व्यवहार नय की कुदृष्टि प्रवर्तमान है, अतः जीव को पदार्थ में इष्टता या अनिष्टता का प्रतिभास होता है। जब निश्चयनय की विवेक दृष्टि प्रकट होती है तब बाह्य पदार्थ में इष्ट अनिष्ट बुद्धि का परिहार होता है, जिससे आत्मा में विकल्पों का उपद्रव शांत होता है, जीव के शान्त रस रूप ज्ञान का परिणाम अनुभूत होता है। यही समता योग है।<sup>19</sup>

(5) वृत्तिसंक्षययोग—आत्म भिन्न पदार्थ से उत्पन्न होने वाले विकल्प तथा स्पन्दन स्वरूप वृत्ति पुनः उत्पन्न न हो, इस प्रकार से त्यागवृत्ति को संक्षय योग कहा जाता है।<sup>20</sup> आत्मा का मूलभूत स्वरूप निस्तरंग समुद्र के समान है। समुद्र से भिन्न ऐसी पवन के द्वारा समुद्र में तरंग उत्पन्न होती है, उसी प्रकार आत्मा से भिन्न ऐसे मन द्रव्य के संयोग से विकल्प रूप वृत्ति उठती है शरीर द्रव्य के संयोग से स्पन्दन रूप वृत्ति उठती है। इन वृत्तियों का पुनः उत्पन्न न होना, इस प्रकार से निरोधवृत्ति संक्षय योग है। इसके अतिरिक्त भी विभिन्न स्थलों पर योग के अन्य-अन्य भेद देखने को मिलते हैं, जो निम्न हैं—

1. तात्त्विकयोग 2. अतात्त्विकयोग।
1. सानुबन्धयोग 2. निरनुबन्धयोग।

1. सास्रवयोग 2. अनास्रवयोग।
1. सोपक्रमयोग 2. निरुपक्रमयोग।
1. सबीजयोग 2. निर्बीजयोग।
1. सालम्बनयोग 2. निरालम्बनयोग।
1. द्रव्ययोग 2. भावयोग।
1. नैश्चिकयोग 2. व्यावहारिकयोग। इत्यादि

#### सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. युजपी योगे – हेमचन्द्र धातुपाठ गण-7
2. योगलक्षण द्वात्रिंशिका, 1.3
3. योगविंशिका, 1
4. योगविंशिका, 2
5. योगदृष्टि समुच्चय, 3
6. योगविवेक द्वात्रिंशिका, 4
7. योगविवेक द्वात्रिंशिका, 5
8. वही, 8
9. योगविवेकद्वात्रिंशिका, 11
10. वही, 10
11. योगभेद द्वात्रिंशिका, 1
12. योगभेद द्वात्रिंशिका, 3
13. योगभेद द्वात्रिंशिका, 26
14. षोडशक, 13/11
15. योगभेद द्वात्रिंशिका
16. योगभेद द्वात्रिंशिका, 9
17. योगभेद द्वात्रिंशिका, 10
18. योगभेद द्वात्रिंशिका, 11
19. द्वात्रिंशद्द्वात्रिंशिका, 18/22
20. द्वात्रिंशद्द्वात्रिंशिका, 18/25

### लघु कविताएँ

डॉ. रमेश 'मयंक'

कारण

ममता कारण है  
दुःख और सन्ताप का,  
विचारों में परिवर्तन  
मार्ग है—

दुःख के पहाड़ों से मुक्ति और पश्चात्ताप का।

समझ

जब मन

साधना में लग जाता है  
तब भोग-अर्थ का संसार  
अपना नहीं है

यह सार तत्त्व समझ में आता है।

-बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

## जैनदर्शन एवं कालचक्र

श्री ओ. पी. चपलोट (सी.ए.)

आज का युग वैज्ञानिक युग कहलाता है। विज्ञान के बढ़ते हुए चरण विद्युत की विविध शक्तियों को पार कर अणु के क्षेत्र में पहुँच चुके हैं। थल, जल एवं नभ पर विजय पाकर अनन्त अन्तरिक्ष के चन्द्र, मंगल और शुक्र आदि ग्रहों पर पहुँचने के प्रयास निरन्तर किये जा रहे हैं। मानव मन में यह जिज्ञासा रही है कि यह लोक कितना बड़ा है तथा यह कब से है? इसको जानने हेतु निरन्तर प्रयास हो रहे हैं, किन्तु इस विषय में वैज्ञानिक आंशिक रूप से ही सफल हुए हैं। जैनदर्शन में इसका विस्तृत वर्णन उपलब्ध है। जैनदर्शन के अनुसार यह लोक 14 रज्जू जितना है, जिसका विस्तृत वर्णन जैन आगमों में उपलब्ध है। दूसरी महत्त्वपूर्ण जिज्ञासा यह है कि यह लोक कब से है। इसके समाधान के लिए जैन आगमों में काल चक्र का बहुत ही सुन्दर वर्णन है। जैनदर्शन के अनुसार यह लोक अनादि काल से है एवं भविष्य में भी अनन्त काल तक रहेगा तथा कभी नष्ट होने वाला नहीं है। समय-समय पर पर्याय रूप में इसकी स्थिति बदलती रहती है। किन्तु तीर्थकरों एवं केवलज्ञानियों ने अपने ज्ञान के माध्यम से काल चक्र का बहुत ही सुन्दर वर्णन बताया है, जो जैन आगमों में उपलब्ध है।

### काल चक्र

मुख्य रूप से काल के दो विभाग हैं—(1) अवसर्पिणीकाल और (2) उत्सर्पिणीकाल। जिस काल में जीवों की शक्ति, अवगाहना और आयु क्रमशः घटती जाती है वह अवसर्पिणी काल कहलाता है। इसके विपरीत जिस काल में शक्ति, अवगाहना और आयु आदि में क्रमशः वृद्धि होती जाती है उसे उत्सर्पिणीकाल कहा गया है। अवसर्पिणी काल समाप्त होने पर उत्सर्पिणीकाल आता है एवं उत्सर्पिणीकाल के समाप्त

होने पर अवसर्पिणीकाल आता है। अनादिकाल से यह क्रम चला आ रहा है एवं अनन्त काल तक चलता रहेगा; यानी यह लोक सम्पूर्ण रूप से कभी नष्ट होने वाला नहीं है। सम्पूर्ण लोक के तीन विभागों में से मध्य लोक में केवल भरत एवं ऐरावत क्षेत्र में ही काल का यह भेद होता है। इन दोनों क्षेत्रों के अतिरिक्त और किसी भी क्षेत्र पर काल चक्र का प्रभाव नहीं पड़ता है, यानी वहाँ सदैव एक-सी स्थिति रहती है। उत्सर्पिणी एवं अवसर्पिणी दोनों ही काल 10 कोटाकोटि सागरोपम के होते हैं, यानी कुल 20 कोटाकोटि सागरोपम का एक काल चक्र होता है। प्रत्येक काल में छह-छह आरे हैं। अवसर्पिणी काल के छह आरों का वर्णन निम्न प्रकार है—

**1. सुखमा-सुखमा**—अवसर्पिणीकाल के प्रथम सुखमा-सुखमा आरे में मनुष्यों के शरीर की अवगाहना तीन कोस की होती है, आयु तीन पल्योपम की होती है तथा मनुष्यों के शरीर में 256 पसलियाँ होती हैं। वे वज्रऋषभनाराच-संहनन तथा समचतुरस्र संस्थान के धारक होते हैं। महारूपवान और सरल स्वभाव वाले होते हैं। ये युगलिक होते हैं तथा एक साथ युगल रूप में स्त्री और पुरुष का जोड़ा उत्पन्न होता है। इनकी सभी आवश्यकताएँ कल्पवृक्षों से पूर्ण होती हैं। पहला आरा चार कोटाकोटि सागरोपम का होता है।

**2. सुखमा**—प्रथम आरे की समाप्ति होने पर तीन कोटाकोटि सागरोपम का दूसरा आरा 'सुखमा' आरम्भ होता है। दूसरे आरे में, पहले आरे की अपेक्षा वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श की उत्तमता में अनन्त गुणी हीनता आ जाती है। क्रम से घटती-घटती दो कोस की शरीर की अवगाहना, दो पल्योपम की आयु और 128 पसलियाँ रह जाती हैं। इस आरे में भी युगलिक होते हैं एवं सुखोपभोग करते हुए विचरते हैं। इनकी आवश्यकताएँ

भी कल्पवृक्षों से ही पूरी होती हैं।

**3. सुखमा-दुःखमा-दूसरा आरा समाप्त होने पर दो कोटाकोटि सागरोपम का बहुत सुख और थोड़ा दुःख नामक तीसरा आरा आरम्भ होता है।** इस आरे में भी वर्ण गन्ध, रस और स्पर्श की उत्तमता में क्रमशः अनन्तगुणी हानि हो जाती है। घटते-घटते एक कोस का देहमान, एक पल्योपम का आयुष्य और 64 पसलियाँ रह जाती हैं। इस आरे में भी युगलिक ही होते हैं तथा सुखपूर्वक विचरते हैं।

इन तीनों आरों के तिर्यञ्च भी युगलिक होते हैं। तीसरे आरे के दो तिहाई भाग के व्यतीत हो जाने पर काल, स्वभाव के प्रभाव से कल्पवृक्षों से पूर्ण वस्तुओं की प्राप्ति नहीं होती है। इसी कारण युगल मनुष्यों में परस्पर झगड़ा होने लगता है। इस विवाद को अन्त करने और झगड़ों को मिटाने के लिए क्रम से पन्द्रह कुलकरों की उत्पत्ति होती है। ये कुलकर अपने समय के प्रभावशाली विद्वान मनुष्य होते हैं तथा तत्कालीन समाज के मर्यादा पुरुष तथा समाज व्यवस्थापक होते हैं। इसी आरे में न्याय-नीति प्रारम्भ हो जाती है तथा अपराधी को दण्ड देना शुरू हो जाता है। दण्ड व्यवस्था इस प्रकार होती है-प्रथम पाँच कुलकरों के समय तक 'हकार' की दण्ड नीति प्रचलित होती है। जब कोई मनुष्य कोई अशोभनीय कार्य करता है तो उसे कुलकर 'हा' ऐसा शब्द कहते हैं अर्थात् उसके कृत्य पर खेद प्रकट करते हैं। अपराधी के लिए यही दण्ड पर्याप्त होता है। इससे वह लज्जित हो जाता है।

इसके आगे के पाँच कुलकरों तक 'मकार' की दण्ड-नीति चलती है। अपराधी को 'मा' शब्द कह दिया जाता है। 'मा' का अर्थ है-मत अर्थात् ऐसा मत करो, इस प्रकार कह देना ही अपराध का दण्ड हो जाता है।

अन्तिम पाँच कुलकरों के समय में दण्ड की कुछ कठोरता बढ़ जाती है। उस समय अपराधी को 'धिक' शब्द कहकर दण्ड दिया जाता है। इन दण्डों से लज्जित होकर उस समय के युगलिक मनुष्य अपराध से विरत हो

जाते हैं।

यद्यपि कल्पवृक्षों की फलदायिनी शक्ति क्रमशः क्षीण हो जाती है तथापि इस समय तक कल्पवृक्षों से ही निर्वाह होता है। इसलिए पहले से तीसरे आरे के समय तक यह भूमि अकर्मभूमि कहलाती है और यहाँ के मनुष्य जोड़े से ही उत्पन्न होते हैं, इसलिए वे युगलिक कहलाते हैं।

जब तीसरे आरे के समाप्त होने में चौरासी लाख पूर्व, तीन वर्ष एवं साढे आठ महीने शेष रह जाते हैं तब अयोध्या नगरी में पन्द्रहवें कुलकर से प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव भगवान का जन्म होता है। जब काल के प्रभाव से कल्पवृक्षों से कुछ भी प्राप्ति नहीं होती है तब मनुष्य क्षुधा से पीड़ित और व्याकुल होते हैं, उस समय उनके प्राणों की रक्षा के लिए नृप ऋषभदेव उन्हें धान्य खाने-पकाने की विधि तथा पुरुषों की 72 और स्त्रियों की 64 कलाएँ, 18 लिपियाँ एवं 14 विद्याएँ सिखलाते हैं। तीर्थकर प्रभु अपने आयुष्य का एक पूर्व कम रहने पर संयम ग्रहण कर लेते हैं एवं अन्त में अपने चारों घाती कर्मों की निर्जरा करते हुए केवलज्ञान और केवलदर्शन को प्राप्त करते हैं एवं मोक्ष पधारते हैं।

इसी आरे में साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका और केवलज्ञानी होते हैं तथा नरक, तिर्यञ्च, मनुष्य, देव और मोक्ष इन पाँचों गतियों में जाने वाले होते हैं।

**4. दुःखमा-सुखमा-तीसरा आरा समाप्त होते ही 42,000 वर्ष कम एक कोटाकोटि सागरोपम का दुःखमा-सुखमा (दुःख ज्यादा सुख थोड़ा) नामक चौथा आरा आरम्भ होता है, तब पहले की अपेक्षा वर्णादि की एवं शुभ पुद्गलों की अनन्त-गुणी हानि हो जाती है। देहमान क्रमशः घटते-घटते 500 धनुष का और आयुष्य एक करोड़ पूर्व का हो जाता है। पसलियाँ सिर्फ 32 होती हैं।** छहों संहनन तथा छहों संस्थानों वाले और पाँचों गतियों में जाने वाले मनुष्य होते हैं। 23 तीर्थकर, 11 चक्रवर्ती, 9 बलदेव, 9 वासुदेव, 9 प्रतिवासुदेव भी इसी आरे में होते हैं।



## 5. दुःखमा

चौथा आरा जब समाप्त हो जाता है तब 21,000 वर्ष का दुःखमा नामक पाँचवाँ आरा आरम्भ होता है। चौथे आरे की अपेक्षा वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श में अर्थात् शुभ पुद्गलों में अनन्तगुणी हीनता हो जाती है। आयु घटते-घटते 125 वर्ष की, शरीर की अवगाहना सात हाथ की तथा पसलियाँ 16 रह जाती हैं। पाँचवें आरे में निम्न दस बातों का अभाव हो जाता है-

(I) केवल ज्ञान (II) मनःपर्यव ज्ञान (III) परम अवधिज्ञान (IV) परिहारविशुद्धि चारित्र, (V) सूक्ष्म सम्पराय चारित्र (VI) यथाख्यात चारित्र (VII) पुलाकलब्धि (VIII) आहारकलब्धि (IX) क्षायिक सम्यक्त्व और (X) जिनकल्प।

इस आरे के अन्त समय में अनेक बोलों में फेरफार हो जाता है तथा इसमें क्रमशः अधिक-अधिक प्रचण्ड रूप प्राप्त होता जाता है। पंचम आरे के अन्तिम दिन देवेन्द्र (शक्रेन्द्र) का आसन कम्पायमान होता है और इन्द्र आकाशवाणी करते हैं-“लोगों! कल छठा आरा लगेगा, सावधान हो जाओ। धर्म कृत्य करना हो तो कर लो।” इस प्रकार इन्द्र की वाणी सुनकर धर्मात्मा पुरुष ममत्व का त्याग करके अनशन व्रत (संधारा) ग्रहण कर समाधिस्थ हो जाते हैं। फिर संवर्तक वायु चलती है, उस भयानक वायु के कारण वेताद्वय पर्वत, ऋषभकूट, लवणोदधि की खाड़ी, गंगा नदी और सिन्धु नदी इन पाँच के अतिरिक्त समस्त पर्वत, किले, महल और घर टूट-टूट कर भूमिगत (जमींदोज़) हो जाते हैं। पहले प्रहर में जैनधर्म का विच्छेद, दूसरे प्रहर में अन्य सभी धर्मों का विच्छेद, तीसरे प्रहर में राजनीति का विच्छेद और चौथे प्रहर में बादर अग्नि का विच्छेद हो जाता है।

## 6. दुःखमा-दुःखमा

पंचम आरे की पूर्णाहुति होते ही जब 21,000 वर्ष का छठा आरा आरम्भ होता है, तब भरत क्षेत्र का अधिष्ठाता देव पंचम आरे के विनष्ट होते हुए मनुष्यों में से कुछ मनुष्यों को उठा ले जाता है। वेताद्वय पर्वत के दक्षिण और उत्तर भाग में जो गंगा एवं सिन्धु नदी है

उसके आठों किनारों (तटों) में से प्रत्येक के किनारे पर नौ-नौ बिल हैं। सब मिलकर  $8 \times 9 = 72$  बिल हैं। प्रत्येक बिल में तीन-तीन मञ्जिल हैं। उक्त देव उन मनुष्यों को इन बिलों में रख देता है।

छठे आरे में पहले की अपेक्षा वर्ण, रस, गन्ध और स्पर्श एवं शुभ पुद्गलों की पर्याय में अनन्तगुणी हानि हो जाती है। आयु क्रम से घटते-घटते 20 वर्ष की और शरीर की ऊँचाई सिर्फ एक हाथ की रह जाती है। शरीर में आठ पसलियाँ रह जाती हैं। रात्रि में शीत और दिन में ताप अत्यन्त प्रबल होता है तथा मनुष्यों को अपरिमित आहार की इच्छा होती है। वे केवल सूर्योदय और सूर्यास्त के समय एक मुहूर्त के लिए बिलों से बाहर निकल पाते हैं। उस समय गंगा और सिन्धु नदियों का पानी साँप के समान बाँकी गति से बहता है। गाड़ी के पहिये के मध्य भाग जितना चौड़ा और आधा पहिया डूबे जितना गहरा प्रवाह रह जाता है। उस पानी में कच्छ-मच्छ बहुत होते हैं। वे मनुष्य उन्हें पकड़-पकड़ कर और नदी की रेत में गाड़कर अपने बिलों में भाग जाते हैं। शीत-ताप आदि के प्रभाव से जब वे पक जाते हैं तो दूसरी बार आकर उन्हें निकाल लेते हैं। उस पर सबके सब मनुष्य टूट पड़ते हैं और लूटकर खा जाते हैं। मृतक मनुष्य की खोपड़ी में पानी लाकर पीते हैं। इस काल में मनुष्य दीन, हीन, दुर्बल, दुर्गन्धित, रुग्ण, अपवित्र, नग्न, आचार-विचार से हीन और माता, भगिनी, पुत्री आदि के साथ संगम करने वाले होते हैं।

छह वर्ष की स्त्री सन्तान का प्रसव करती है। वे कुतिया और शूकरी के समान बहुत परिवार वाले और महाक्लेशमय होते हैं। धर्म-पुण्य से हीन वे दुःख में सम्पूर्ण आयु व्यतीत करके तिर्यञ्च या नरक गति के मेहमान बन जाते हैं।

## उत्सर्पिणीकाल

अवसर्पिणीकाल के जिन छह आरों का वर्णन किया गया है। वही छह आरे उत्सर्पिणी काल में होते हैं। अन्तर यह है कि उत्सर्पिणी काल में वे उल्टे क्रम से होते हैं। उत्सर्पिणी काल दुःखमा-दुःखमा आरे से आरम्भ

होकर सुखमा-सुखमा पर समाप्त होता है। जिसका क्रम निम्न प्रकार होता है-(I) दुःखमा-दुःखमा 21,000 वर्ष, (II) दुःखमा 21,000 वर्ष, (III) दुःखमा-सुखमा 42,000 वर्ष कम एक कोटाकोटि सागरोपम (IV) सुखमा-दुःखमा दो कोटाकोटि सागरोपम (V) सुखमा-तीन कोटाकोटि सागरोपम (VI) सुखमा-सुखमा चार कोटाकोटि सागरोपम का होता है।

इन छह आरों का विस्तृत वर्णन पूज्य श्री अमोलकऋषिजी म.सा. द्वारा रचित 'जैनतत्त्व प्रकाश' में उपलब्ध है। कोटाकोटि = करोड़ की संख्या को करोड़ की संख्या से गुणा करने पर जो गुणनफल आता है, उसे कोटाकोटि कहते हैं।

पूर्व = 70 लाख 56 हजार करोड़ वर्षों (70,56,00,00,000,000) का एक पूर्व होता है।

सागरोपम-पल्योपम इन्हें उपमा से समझाया गया है-एक योजन लम्बे, एक योजन चौड़े, एक योजन गहरे गोलाकार गड्ढे में देवकुरु, उत्तरकुरु क्षेत्र के मनुष्य के एक दिन से लेकर सात दिन तक के जन्मे हुए बाल के

बालाग्र ऐसे बारीक करके कि तीक्ष्ण शस्त्र से भी उसके दो टुकड़े न हो सके, वे ढूँस-ढूँस कर भर दिये जायें। ऐसे ढूँस दिये जायें कि चक्रवर्ती की सेना उनके ऊपर से निकले तब भी दबे नहीं। फिर उस गड्ढे में से सौ-सौ वर्ष बीत जाने पर एक-एक बालाग्र निकाला जाए। इस प्रकार निकालते-निकालते जितने समय में सारा गड्ढा खाली हो जाए, एक भी बाल उसमें शेष न रहे, उतने काल को एक पल्योपम कहते हैं और दस कोटाकोटि पल्योपम का एक सागरोपम होता है।

इस प्रकार जैनदर्शन के अनुसार यह लोक अनादिकाल से है और अनन्त काल तक रहेगा, ऐसा केवलज्ञानियों ने अपने ज्ञान से जानकर बताया है जिसका वर्णन आगमों में उपलब्ध है। विज्ञान द्वारा इसको जानना सम्भव नहीं है, चूँकि यह इन्द्रियों का विषय नहीं होकर उत्कृष्ट आत्मज्ञान (केवलज्ञान) होने पर ही जानना सम्भव है।

-145, प्रथम मज्जिम, माचाला मार्ग, पारस  
होटल के सामने, एच.डी.एफ.सी. बैंक के पास,  
उदयपुर-312002 (राजस्थान)

## धार्मिक संस्कार शिविर

श्री महेश नाहटा

शिविर क्या है ?

- ◆ बच्चों के सर्वांगीण विकास की सर्वोत्तम प्रक्रिया है।
- ◆ ग्रीष्मावकाश का सदुपयोग है।
- ◆ नैतिक, आध्यात्मिक क्रान्ति का नाम है।
- ◆ चरित्र-निर्माण की प्रयोगशाला का नाम है।
- ◆ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप की आराधना का नाम है।
- ◆ छिपी हुई प्रतिभाओं को आगे लाने का नाम है।
- ◆ विनय, विवेक, अनुशासन सीखने का नाम है।
- ◆ हर काम अपने हाथ से करने का नाम है।

- ◆ टी.वी. सिनेमा, वीडियो के खतरनाक खेल से बचने का नाम है।
- ◆ अपने आप से मुलाकात करने का नाम है।
- ◆ योग, प्राणायाम, ध्यान में खो जाने का नाम है।
- ◆ व्यसनमुक्त, संस्कारयुक्त जीवन जीने का नाम है।
- ◆ बाल, युवा, वृद्ध, महिला सभी को दिशा बोध देने का नाम है।
- ◆ संयम, सदाचार, संस्कार सीखने की पाठशाला है।
- ◆ मौन, मैत्री, प्रमोद की पाठशाला है।
- ◆ जैन संस्कृति, सभ्यता और आचार-विचार का अध्ययन केन्द्र है।

-नगरी, धमत्तरी (छत्तीसगढ़)

# Convergences and Divergences in Jain Philosophy and Modern Science

*Dr. Priyadarshana Jain*

## Introduction

Man today lives in a very scientifically and technologically advanced environment exploring the minutest world of atoms and micro-organisms and also the vast infinite space before him; yet he is confronted with many challenges that his ancestors never faced or dreamt of!

Both Science and Jain Philosophy provide answers and solutions to the mysteries of the world but their ways and approaches are different. Both provide excellent insights of the complex reality. Yet there are convergences and divergences in Jain Philosophy and Science. Although the Jains claim that Jain Philosophy is scientific, universal and relevant for all times and for all people, yet the scientific and intellectual community is yet to take cognizance of the deep spirituo-eco-philosophy of the Tirthankaras.

The Jains have nothing against the scientific temperament provided it promotes

non-violence, self-restraint and peace at the individual and collective level. No doubt science and technology have made life easy and comfortable but we should not forget that misuse of them has made us spiritually bankrupt and psychologically anxious, fearful and insecure. In this context we need the philosophy of the enlightened spiritual scientists who promoted *vītarāga-vijñānatā* above everything else. Just as fire is neither good nor bad, it is what it is; it depends on the end user who may use it to bake a cake or to burn a forest. In the same way science and technology are neither good nor bad, it depends on the user to use it to promote universal brotherhood and peaceful coexistence or a world torn with war and terror.

In this paper an analysis of the scientific nature of Jain principles is made although not directly compared with so-called modern science. The points of divergences are significantly analyzed first:

## Points of Divergences

S. No.	Nomenclature	Jain Philosophy	Modern Science
1.	Source	The source is omniscience, which is revelation of omniscient / kevala-jñāni.	The source is experimentation, observation, derivation and inference.
2.	Kind of knowledge	The knowledge of omniscients is Pratyaksha/ direct.	The knowledge here is Paroksha/ indirect, ie.through the medium of senses and mind.

S. No.	Nomenclature	Jain Philosophy	Modern Science
3.	View	The revelations of omniscients are eternal, ie. they are essentially the same for all people at all places at all times (sarva-jana, sarvatra, sarvada) and they reveal the working of the order of the whole universe. Hence their view is the eternal view.	The findings of science are based on hypothesis, assumptions and inference and so are subject to interpretations and change. Hence its view is partial view.
4.	Metaphysics	Jain metaphysics explains the working of the universe through the concepts like dravya-guṇa-paryāya, utpāda-vyaya-dhrauvya, 7/9 tattvas, six-dravyas, etc.	Science too talks of origination, destruction, change, permanence, etc but the essence is lost in the approach and is yet to present a model of the universe and come closer to talking of six dravyas. Although they explore and talk of dimensions related to space, time, matter etc.
5.	Life forms	Jainism accepts life in earth, water, fire, air and plants. It says that the entire universe is filled with micro-organisms and there is not a single space point where life is not found.	Science is yet to establish the presence of life as in earth, water, fire, air bodied beings. Maybe soon, it will!! And this will be good for the health of the individual and the planet.
6.	Weapons	The Acharanga Sutra reveals that the six-life forms are weapons for each other and the greatest weapon is the bhava-shastra ie, the weapon of non-restraint and fire is called dirgha-loka-shastra, ie.weapon of mass destruction not just of the human world but of the entire eco-system.	Man ought to be careful in using fire but there is a race of building weapons of mass destruction. Man is literally playing with fire in multifarious forms and this is causing serious global health issues.

S. No.	Nomenclature	Jain Philosophy	Modern Science
7.	Virus and Vaccine	Jainism strongly asserts that the virus of perversion/ ignorance/ passion (kashaya) is in all of us and the vaccine which is the antidote for all viruses is the rightness of knowledge, vision and conduct which is also to be discovered within.	Science keeps discovering different kinds of micro and macro forms of living and keeps bringing new kinds of vaccines.
8.	8.4 million	Jain spiritual scientists have revealed that there are infinite living beings grouped in 8.4 million species. This number is given in Hindu, Buddhist and Sikhs texts.	Science does not talk in terms of 8.4 million species, although 3 million species are found by it, study of which is done in biology, micro-biology, biotechnology etc.
9.	Existences	Jainism talks about four gati, five jati and so on. The Indus seals bear the swastika which is symbolic of the four-fold existences.	Science talks of classes of beings in some way but not in the form of four-fold existence, etc.
10.	Fundamentals	The whole universe comprises of living and non-living beings called jiva and ajiva respectively. The focus here is to primarily differentiate one form from the other and to embark upon the path of liberation.	The first lesson of science is that of living and non-living. But the focus here is not liberation or spiritual accomplishment.
11.	Basic assumption	Jain philosophy starts with the basic assumption of the existence of soul, karma, rebirth etc.	As a subject, modern science may talk of some of these concepts but they do not prescribe to them as beliefs and their knowledge is not imparted in a regular way in science forums.

S. No.	Nomenclature	Jain Philosophy	Modern Science
12.	Happiness	Jain philosophy inspires its followers to seek real and eternal happiness which is independent, transcendental and immanent.	Science too does not tell you to seek material happiness. But by applying science, man has developed technology that has made life more comfortable than ever before. This is good, but not enough! But the dependence on technology has its pros and cons which should be taken into consideration.
13.	Exploration	Jainism is needed to explore the self and realize one-self in order to liberate oneself from the cycle of transmigration.	Science on the other hand does not talk of the pursuit of liberation, although it guides you to explore the microcosm and macrocosm.
14.	The Path	Jainism advocates the path of liberation which constitutes of right faith, right knowledge and right conduct.	Some scientists do accept liberation. But science as a discipline does not stress on it.
15.	Kind of Science	Jain philosophy is primarily the philosophy of vītarāga-vijñānatā ie. the science of detachment and enlightenment.	Actually science cannot equate with philosophy because people use science and technology and promote attachment only.
16.	Structure of the Universe	The Jain logo/symbol presents the crux of Jain philosophy in the form of purushakara/human form, which is the structure of the universe.	Science or any other religion for that matter is yet to give a model of the universe. They are yet to establish the structure of the universe.
17.	Geography & Cosmology	Jain Karaṇānuyoga gives the details of cosmology, geography and so on which are revealed in the upangas which are the secondary canons.	Science too gives the details of cosmology, geography and so on but parallels cannot be drawn between Jainism and scientific thought because they do not converge. The reason for this is that all the revelations of omniscients are not available to us and science too is a discipline of never ending search.

S. No.	Nomenclature	Jain Philosophy	Modern Science
18.	Challenges and the time cycle	The time cycle - kaal chakra gives details of the ascending and descending time cycles where mankind makes progressive growth and degradation.	This can be seen more so in modern times and hence there is talk of global warming, climate change, sustainable development, species extinction, etc.
19.	Purpose	The purpose of the study of Jain philosophy ought to be self-realization, self-purification and self-conquer.	Although medical science is advanced today and helps you to get rid of diseases and ailments. But what about liberation from birth and death. Science predominantly does not address this question.
20.	Karma	The theory of karma and karmic bondage are systematically presented in the sacred Jain texts and one can get answers to the diverse phenomenon occurring in day to day life.	Science may infer about karma but it is yet to recognize the existence of karmic particles and give justification for the injustice happening everywhere.
21.	Creation	Jainism says that the creator is embedded in the creation. Every moment creation and destruction is taking place at the conscious and material levels, yet both consciousness and matter are eternal. This complex reality is to be understood from different point of views.	Science tries to explore only the creation and gives theories of big bang, God particle etc, although different religions propound different creation theories.
22.	Philosophy of Anekanta	Of the 3 principles of Jainism Anekanta is the most important one because when this principle is applied the actual ahimsa and aparigraha begin to be understood.	Science too says that reality is complex and there are many dimensions.

S. No.	Nomenclature	Jain Philosophy	Modern Science
23.	Limitation of Speech	Jainism says that even an omniscient cannot reveal reality in totality. They only know it in totality. Due to the limitation of speech even an omniscient has used the 'Syad' pada to disclose the reality.	Science too has its limitation and talks of things relatively.
24.	Science and Art	Jainism is both a science and art. It is an independent discipline which talks of bheda-vijñāna—science of differentiation of the self from the non-self and teaches the art of right living through ahimsā-sanyama-tapa and art of embracing the inevitable death through sallekhanā.	Science cannot be equated with art but all art forms involve certain scientific temperament in logical application.
25.	Branches of Study	In order to understand real Jainism one has to master the four anuyogas only then one can discover the wisdom of the Jinas embedded in the Jain Scriptures.	Science too is divided into many branches and one may master a few branches but not the entire science as such.
26.	Faith	One has to systematically study Jain Philosophy otherwise it will lead to blind faith and perversion remains unchecked.	The utility of science has to be measured from spiritual, psychological, axiological, environmental and other viewpoints for man to live in peace and harmony.
27.	Values	Only when a person values his true self above everything else the greatest sin of mithyatva/perversion can be checked. Only then he starts valuing the universal values and is ready to even die for them.	Violence and crime are glorified by the misuse and overuse of science and technology if a person does not value the universal values. Eg. Squid game, violent games, gun culture, growing violence and terror, etc.



S. No.	Nomenclature	Jain Philosophy	Modern Science
28.	Application of Logic	Philosophy gives a view of life and religion is a way of life. Jainism is both a philosophy and a religion as ratna-traya first tells you to have a right view of reality and then take to it steadfastly. Having the right view is possible through the understanding of the tools of logic. This makes Jain principles scientific, practical and universal. Without understanding the scientific basis of Jain principles one cannot be a true Jain.	Science too promotes logical understanding of things. But when man blinded by his ignorance and prompted by greed is destroying the planet. He has become a slave to the gadgets and in his pursuit to do things more sophisticatedly he has lost sight of simple yet important things in life.
29.	Hand in hand	The word religion comes from the root verb 'religare' which means to connect. True religion should help man to connect with god/godhood, his pure self, other men and the environment at large. So it is rightly said that religion without science is blind and science without religion is lame. Both go hand in hand. And the great Jain principles of ahimsa, anekanta and aparigraha and the three jewels help man to connect holistically within and the vast cosmos through vitaraga-vijñāna.	Science is yet to unravel the mysteries coded in the religious texts. Today the young generation too talks of minimalism and Science tells us to use the resources judiciously but to talk of vītarāgata, etc is a bit too much for the materialist.
30.	Ways	The message of Jain philosophical thought is experience of reality through vastu-svarupa-vichar and become truly independent.	The way of science is experiment leading to innovations, inventions, etc. Man is becoming more and more dependent on these inventions at the cost of mental and physical health.

### Few Points of Convergences

1. Both Jain philosophy and science promote scientific analysis and reject blind faith and superstitions.
2. Both disciplines want the followers to question everything, analyze and then come to a conclusion.
3. There is ample scope for research and application in both fields.
4. Both talk of minimizing the usage of natural resources which are limited.
5. Both address the environmental issues and cry for urgent concern.
6. Newer researches come closer to proving the facts established by the Jain philosophy.
7. As science develops one can get more and more points to elaborate in the philosophical world.
8. Both establish the application and importance of deductive and inductive logic.

### Conclusion

1. Today in the realms of science, religion and philosophy, rationality seems to be overtaken by the forces of unreason. Modern education focuses more on material improvements and accomplishments rather than on holistic growth of mind, body and spirit. Vast strides in material world do not match growth in moral values and so peace and harmony remain mere ideals globally.
2. Today we need an inclusive education philosophy where the right balance amongst science, technology, religion and

philosophy is found.

3. Science and philosophy should teach man the art of dynamic equilibrium wherein all life forms are respected and no life is abused for all life is interconnected. Even if one strand in the web of biosphere is broken, the entire web can collapse.
4. Both science and philosophy should help man to decode the roots of violence and terror to help humanity which is at crossroads.
5. Many Jains are not scientists yet the scientific temper is very high in the Jain canonical literature as they are revealed by the spiritual scientists called Tirthankaras. Yet tall claims should not be made that Jainism can solve all the problems of the world. Although illustrations and examples of modern science can be used to put forward the metaphysical and ethical content coded in this eternal dharma.
6. The Jains should not harp on childhood learning and claim supremacy of their faith and tradition, rather take to systematic study and presentation of the Jain concepts using modern technology and promote real intelligence over artificial intelligence.
7. Both science and philosophy should integrate and strive to promote humanity, spirituality and divinity rising above narrow interpretations for the larger good of all stakeholders.

*-Associate Prof and Head, Dept of Jainology,  
University of Madras, Chennai 600005 (Tamilnadu)*

### Replacing negative thoughts with positive

- |                               |   |   |
|-------------------------------|---|---|
| 1. I can't do this.           | ◆ | I can do this and try to succeed.         |
| 2. I am not confident enough. | ◆ | I am confident.                           |
|                               |   | I will embrace learning as a way to grow. |

*- 'Jainism Part-2'*

## श्रमण जैन परम्परा में चातुर्मास की अवधारणा

प्रो. फूलचन्द जैन 'प्रेमी'

अपने भारत देश में वैदिक एवं श्रमण-ये दोनों संस्कृतियाँ प्राचीन काल से ही समृद्ध रही हैं और इन दोनों में ही चातुर्मास का अत्यधिक महत्त्व है। श्रमण जैन परम्परा में तो चातुर्मास को चार मास के लम्बे महापर्व के रूप में आयोजित किए जाने का विधान है। वर्षाकाल के आरम्भ से ही चार माह के लिए एक ही स्थान पर लम्बे प्रवास में साधु-साध्वियों के ज्ञान, ध्यान और संयम साधना का लाभ समाज को प्राप्त होता है। चौबीसवें एवं अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर के अनेक चातुर्मासों का विवरण हमें प्राकृत जैनागमों से प्राप्त होता है। इस चातुर्मास काल में आष्टाहिक पर्व, रक्षाबन्धन, पर्युषण, दशलक्षण महापर्व, क्षमावाणी तथा तीर्थंकरों के पञ्च कल्याणकों जैसे अनेक पर्व भी मनाए जाते हैं।

वस्तुतः यत्र-तत्र गमनागमन रूप विहारचर्या श्रमण जीवन की एक अनिवार्य एवं महत्त्वपूर्ण चर्या है। इसीलिए श्रमण को अनियत विहारी कहा जाता है। क्योंकि उत्तराध्ययनसूत्र (4/6) में कहा है कि भारण्ड-पक्खीव चरेऽप्पमत्तो अर्थात् श्रमण को भारण्ड पक्षी की तरह ग्रामानुग्राम विभिन्न क्षेत्रों में अनासक्त भाव से निरन्तर विचरण करते हुए अपनी साधना में लीन रहना चाहिए। इससे सम्यग्दर्शन की शुद्धि, स्थिरीकरण, रत्नत्रय की भावना, शास्त्राभ्यास, शास्त्र कौशल, समाधिमरण के योग्य क्षेत्रों का अन्वेषण जैसे सहज लाभ प्राप्त हो जाते हैं। किन्तु वर्षाकाल के चातुर्मास में चार माह तक निरन्तर एक स्थान पर प्रवास करने का भी शास्त्रीय प्रावधान है।

### चातुर्मास की अवधारणा

श्रमण जैन परम्परा में चातुर्मास अर्थात् वर्षावास, जैन मुनिचर्या का आचारगत अनिवार्य और महत्त्वपूर्ण

योग है। इसे वर्षायोग, वर्षावास अथवा चातुर्मास भी कहा जाता है। श्रमण के आचेलक्य आदि दस स्थितिकल्पों में एक पर्युषणा कल्प है, जिसके अनुसार वर्षा काल के चार महीने में भ्रमण अर्थात् आवागमन, विहार आदि का त्याग करके एक स्थान पर रहने का विधान है।<sup>1</sup> वर्ष के बारह महीनों को मौसम की दृष्टि से प्रमुख तीन भागों में विभाजित किया गया है-

1. ग्रीष्म-चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ और आषाढ़।

2. वर्षा-श्रावण, भाद्रपद, आश्विन तथा कार्तिक।

3. शीत-मार्गशीर्ष, पौष, माघ तथा फाल्गुन।

यद्यपि ये तीनों ही विभाजन चार-चार माह के हैं, किन्तु वर्षाकाल के चार महीनों का एकत्र नाम चातुर्मास, वर्षावास आदि रूप में प्रसिद्ध है। श्वेताम्बर जैनागम परम्परा में पर्युषणा कल्प नाम से वर्षावास का वर्णन प्राप्त होता है। बृहत्कल्पभाष्य में इसे 'संवत्सर' कहा गया है।<sup>2</sup> वस्तुतः वर्तमान युग में पर्यावरण की अवस्था में बहुत कुछ बदलाव हो गया है। अब न तो वर्षाकाल में पूरी तरह वर्षा का भरोसा रहता है, न शीतकाल में भरपूर ठण्ड का और न इसी तरह अन्य ऋतुओं का।

वर्तमान युग में तो गर्मी के बढ़ते प्रकोप से सभी त्रस्त रहते हैं। पर्यावरण प्रदूषण का असर सर्वत्र देखा जा सकता है। किन्तु अब से सात-आठ दशक पूर्व तक ऐसी स्थिति नहीं थी। पहले आवागमन के आज जैसे साधन भी नहीं थे। बड़ी-बड़ी सड़कों का जाल नहीं था। वर्षाकाल में प्रायः सदा आकाश मण्डल में घटाएँ छायी रहती थीं तथा प्रायः वर्षा भी निरन्तर होती रहती थी। इसलिए वर्षावास में साधु-साध्वियों का विचरण-विहार निषिद्ध था। आज भी वर्षाकाल में यत्र-तत्र विहार के मार्ग रुक

जाते हैं, नदी, नाले उफन पड़ते हैं। वनस्पतिकाय आदि हरित्काय मार्गों और मैदानों में फैल जाती है। सूक्ष्म-स्थूल जीव-जन्तु उत्पन्न हो जाते हैं। अतः छोटे-बड़े जीवों की चलने-फिरने से सम्भाव्य विराधना और आत्म विराधना से बचने के लिए ग्रन्थों में चातुर्मास में एकत्र-वास का विधान किया गया है। यही समय एक स्थान पर स्थिर रहने का सबसे उत्कृष्ट समय होता है। श्रमण और श्रावक-दोनों के लिए इस चातुर्मास का धार्मिक, आध्यात्मिक और संयम-साधना के विकास की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्व है। इसीलिए श्रमण या उनके संघ के चातुर्मास (वर्षा योग) को श्रावक उसी प्रकार प्रिय और हितकारी अनुभव करते हैं, जिस प्रकार चक्रवा चन्द्रोदय को, कमल सूर्य को और मयूर मेघोदय को।

### चातुर्मास का औचित्य

अपराजितसूरि ने कहा है कि वर्षाकाल में स्थावर और जंगम सभी प्रकार के जीवों से यह पृथ्वी व्याप्त रहती है। उस समय भ्रमण करने पर अधिक असंयम होता है। वर्षा और शीत वायु (झंझावात) से संयम की विराधना होती है। वापी आदि विविध जलाशयों में गिरने का भय रहता है। जलादि में छिपे हुए ढूँठ, कण्टक आदि से अथवा जल, कीचड़ आदि से कष्ट पहुँचता है और अपना जीवन भी खतरे में पड़ सकता है।<sup>3</sup>

आचारांग में कहा है कि वर्षाकाल आ जाने पर तथा वर्षा हो जाने से मार्गों में बहुत से प्राणी एवं बीज उत्पन्न हो जाते हैं। बहुत हरियाली उत्पन्न हो जाती है। ओस और पानी बहुत स्थानों में भर जाता है। काई आदि स्थान-स्थान पर व्याप्त हो जाती है। बहुत से स्थानों पर कीचड़ या पानी से मिट्टी गीली हो जाती है। मार्ग रुक जाते हैं, मार्ग पर चला नहीं जा सकता, मार्ग सूझता नहीं है, अतः इन परिस्थितियों को देखकर मुनि को वर्षा काल में एक ग्राम से दूसरे ग्राम विहार नहीं करना चाहिए। अपितु वर्षाकाल में यथावसर प्राप्त वसति में ही संयत रहकर वर्षावास को व्यतीत करना चाहिए।<sup>4</sup> बृहत्कल्पभाष्य के अनुसार वर्षावास में गमन करने से पृथ्वी, जल, तेज,

वायु, वनस्पति और त्रस-इन षट्कायिक जीवों का घात तो होता ही है, साथ ही वृक्ष की शाखा आदि सिर पर गिरने, कीचड़ में रपट जाने, नदी में बह जाने, काँटा आदि लगने की सम्भावना रहती है।<sup>5</sup>

श्रमण जैनमुनि को प्रत्येक कल्पनीय कार्य करते समय अहिंसा और विवेक की दृष्टि रखना अनिवार्य है। वर्षाकाल में विहार करते रहने में अनेक बाधाओं के साथ ही जीव-हिंसा की बहुलता सदा रहती है, इसीलिए चार माह तक एक स्थान पर स्थिर रहकर वर्षायोग धारण का विधान है।

### चातुर्मास का समय

सामान्यतः आषाढ़ से कार्तिक पूर्वपक्ष तक का समय वर्षा और वर्षा से उत्पन्न जीव-जीवाणुओं तथा अनेक प्रकार के तृण, घास और जन्तुओं के पूर्ण परिपाक का समय रहता है। इसीलिए चातुर्मास (वर्षावास) की अवधि आषाढ़ी पूर्णिमा से आरम्भ होकर कार्तिकी पूर्णिमा तक मानी जाती है।

वर्षावास के समय में लगभग एक सौ बीस दिन तक एक स्थान पर रहना उत्सर्ग मार्ग है। विशेष परिस्थिति अथवा कारण होने पर अधिक और कम दिन भी ठहर सकते हैं।<sup>6</sup> अधिक ठहरने के प्रयोजनों में वर्षा की अधिकता, शास्त्राभ्यास, शक्ति का अभाव अथवा किसी की वैयावृत्य करना आदि हैं।<sup>7</sup> आचारांग में भी कहा है कि वर्षाकाल के चार माह बीत जाने पर अवश्य विहार कर देना चाहिए, यह तो श्रमण का उत्सर्ग मार्ग है। फिर भी यदि कार्तिक मास में पुनः वर्षा हो जाए और मार्ग आवागमन के योग्य न रहे तो चातुर्मास के पश्चात् वहाँ पन्द्रह दिन और रह सकते हैं।<sup>8</sup>

समय की दृष्टि से वर्षावास के जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट-ये तीन भेद बताये हैं।<sup>9</sup> इनमें सांवत्सरिक प्रतिक्रमण (भाद्रपद शुक्ला पंचमी) से कार्तिकी पूर्णिमा तक सत्तर दिनों का जघन्य वर्षावास कहा जाता है। श्रावण से कार्तिक मास तक चार माह का मध्यम

चातुर्मास है तथा आषाढ़ से मार्गशीर्ष तक छह माह का उत्कृष्ट वर्षावास कहलाता है। इसके अन्तर्गत आषाढ़ बिताकर वहीं चातुर्मास करें और मार्गशीर्ष में भी वर्षा चालू रहने पर उसे वहीं बितायें। स्थानांग वृत्ति में कहा है कि प्रथम प्रावृत् (आषाढ़) में और पर्युषणा कल्प के दौरान निवास करने पर विहार न किया जाए, क्योंकि पर्युषणाकल्प पूर्वक निवास करने के बाद भाद्रपद शुक्ला पंचमी से कार्तिक तक साधारणतः विहार नहीं किया जा सकता, किन्तु पूर्ववर्ती पचास दिनों में उपयुक्त सामग्री के अभाव में विहार कर भी सकते हैं।<sup>10</sup>

बृहत्कल्पभाष्य में वर्षावास समाप्त कर विहार करने योग्य समय के विषय में कहा है कि जब ईख बाड़ों के बाहर निकलने लगें, तुम्बियों में छोटे-छोटे तुम्बक लग जायें, बैल शक्तिशाली दिखने लगें, गाँवों की कीचड़ सूखने लगे, रास्तों का पानी कम हो जाए, जमीन की मिट्टी कड़ी हो जाय तथा जब पथिक परदेश को गमन करने लगे तो श्रमण को भी वर्षावास की समाप्ति और अपने विहार करने का समय समझ लेना चाहिए।<sup>11</sup>

### चातुर्मास के योग्य स्थान

श्रमण को वर्षायोग के धारण का उपयुक्त समय जानकर धर्म-ध्यान और चर्या आदि के योग्य प्रासुक स्थान पर चातुर्मास व्यतीत करना चाहिए। आचारांगसूत्र में चातुर्मास योग्य स्थान के विषय में कहा है कि वर्षावास करने वाले साधु या साध्वी को उस ग्राम, नगर, खेड, कर्बट, मडंब, पट्टण, द्रोणमुख, आकर (खदान), निगम, आश्रय, सन्निवेश या राजधानी की स्थिति भलीभाँति जान लेनी चाहिए। जिस ग्राम, नगर यावत् राजधानी में एकान्त में स्वाध्याय करने के लिए विशाल भूमि न हो, मल-मूत्र त्याग के लिए योग्य विशाल भूमि न हो, पीठ (चौकी) फलक, शय्या एवं संस्तारक की प्राप्ति सुलभ न हो और प्रासुक (निर्दोष) एवं एषणीय आहार-पानी सुलभ न हो, जहाँ बहुत से श्रमण, ब्राह्मण, अतिथि, दरिद्र और भिखारी पहले से आए हुए हों और भी दूसरे आने वाले हों, जिससे सभी मार्गों पर जनता की

अत्यन्त भीड़ हो और साधु-साध्वी को भिक्षाटन, स्वाध्याय, शौच आदि आवश्यक कार्यों के लिए अपने स्थान से सुखपूर्वक निकलना और प्रवेश करना भी कठिन हो, स्वाध्याय आदि क्रिया भी निरुपद्रव न हो सकती हो, ऐसे ग्राम-नगर आदि में वर्षावास व्यतीत नहीं करना चाहिए।

प्राकृत आगम कल्पसूत्र की कल्पलता टीका के अनुसार जैन साधु-साध्वियों के चातुर्मास के योग्य स्थान में निम्नलिखित गुण होना चाहिए-जहाँ विशेष कीचड़ न हो, जीवों की अधिक उत्पत्ति न हो, पंचम समिति के सम्यक् पालन हेतु शौच-स्थल निर्दोष हो, रहने का स्थान शान्तिप्रद एवं स्वाध्याय योग्य हो, गोरस की अधिकता हो, जनसमूह भद्र हो, राजा धार्मिक वृत्ति का हो, भिक्षा सुलभ हो, श्रमण-ब्राह्मण का अपमान न होता हो, ऐसे ही अनुकूल और निरापद स्थान चातुर्मास के सर्वथा योग्य होते हैं।

### वर्षायोग ग्रहण एवं उसकी समाप्ति की विधि

यद्यपि आचार्य वट्टकेर द्वारा रचित मूलाचार आदि प्राचीन ग्रन्थों में वर्षायोग ग्रहण आदि की विधि का स्पष्ट उल्लेख नहीं है, किन्तु उत्तरवर्ती विद्वान् आशाधर प्रणीत ग्रन्थ अनगार धर्माभूत में कहा है कि चातुर्मास प्रारम्भ की प्रथम रात्रि के प्रथम प्रहर में पूर्व आदि चारों दिशाओं में प्रदक्षिणा क्रम से लघु चैत्यभक्ति चार बार पढ़कर, सिद्धभक्ति, योगिभक्ति, पंचगुरुभक्ति और शान्तिभक्ति करते हुए आचार्य आदि साधुओं को वर्षायोग ग्रहण करना चाहिए तथा चातुर्मास की अन्तिम रात्रि के पिछले प्रहर में इसी विधि से वर्षायोग को छोड़ना चाहिए।<sup>12</sup> आगे बताया है कि वर्षायोग के सिवाय अन्य हेमन्त आदि ऋतुओं में अर्थात् ऋतुबद्ध काल में श्रमणों का एक स्थान में एक मास तक रुकने का विधान है।

अनगारधर्माभूत में ही आगे कहा है कि जहाँ चातुर्मास करना अभीष्ट हो, वहाँ आषाढ़ मास में वर्षायोग के स्थान पर पहुँच जाना चाहिए तथा मार्गशीर्ष महीना बीतने पर वर्षायोग के स्थान को छोड़ देना

चाहिए। कितना ही प्रयोजन होने पर भी वर्षायोग के स्थान में श्रावण कृष्णा चतुर्थी तक अवश्य पहुँच जाना चाहिए। इस तिथि का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। यदि कोई कारण हो तो भी कार्तिक शुक्ला पंचमी तक वर्षायोग के स्थान से अन्य स्थान को नहीं जाना चाहिए। यदि किसी दुर्निवार उपसर्ग आदि के कारण वर्षायोग के उक्त प्रयोग में अतिक्रम करना पड़े तो साधु को प्रायश्चित्त लेना चाहिए।<sup>13</sup>

वर्षायोग धारण के विषय में श्वेताम्बर परम्परा के कल्पसूत्र में कहा है कि मासकल्प से विचरते हुए निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियों को आषाढ़ मास की पूर्णिमा को चातुर्मास के लिए रहना कल्पता है। क्योंकि निश्चय ही वर्षाकाल में मासकल्प विहार से विचरने वाले साधुओं और साध्वियों के द्वारा एकेन्द्रिय से लेकर पञ्चेन्द्रिय तक के जीवों की विराधना होती है।<sup>14</sup> कल्पसूत्रनिर्युक्ति में भी कहा है कि आषाढ़ मास की पूर्णिमा तक नियत स्थान पर पहुँचकर श्रावण कृष्ण पंचमी से वर्षावास प्रारम्भ कर देना चाहिए। उपयुक्त क्षेत्र न मिलने पर श्रावण कृष्ण दशमी से पाँच-पाँच दिन बढ़ाते-बढ़ाते भाद्रपद शुक्ल पंचमी तक तो निश्चित ही वर्षावास प्रारम्भ कर देना चाहिए, फिर चाहे वृक्ष के नीचे ही क्यों न रहना पड़े, किन्तु इस तिथि का उल्लंघन नहीं होना चाहिए।<sup>15</sup>

### चातुर्मास में भी विहार करने के कारण

भगवती आराधना ग्रन्थ की विजयोदया टीका में अपराजितसूरि के अनुसार वर्षायोग धारण कर लेने पर भी यदि दुर्भिक्ष पड़ जाए, महामारी फैल जाये, गाँव अथवा प्रदेश में किसी कारण से उथल-पुथल हो जाए, गच्छ का विनाश होने के निमित्त आ जाये तो साधु-साध्वी देशान्तर में जा सकते हैं। क्योंकि ऐसी स्थिति में वहाँ ठहरने से रत्नत्रयधर्म और संयम की विराधना होगी। आषाढ़ की पूर्णमासी बीतने पर प्रतिपदा आदि के दिन देशान्तर गमन कर सकते हैं।<sup>16</sup> स्थानांगसूत्र में इसके पाँच कारण बताये हैं- 1. ज्ञान के लिए, 2. दर्शन के लिए, 3. चारित्र के लिए, 4. आचार्य या उपाध्याय आदि की

सल्लेखना/ समाधिमरण के अवसर पर तथा 5. वर्षा क्षेत्र से बाहर रहे हुए आचार्य अथवा उपाध्याय आदि का वैयावृत्त्य करने के लिए।<sup>17</sup>

साथ ही यह भी कहा है कि निर्ग्रन्थ और साध्वियों को चातुर्मास के पूर्वकाल में ग्रामानुग्राम विहार नहीं करना चाहिए। संघ में रहकर साधना, संयम और ज्ञानाभ्यास करना चाहिए। किन्तु इन पाँच कारणों से विहार किया भी जा सकता है- 1. शरीर, उपकरण आदि के अपहरण का भय होने पर, 2. दुर्भिक्ष होने पर, 3. किसी के द्वारा व्यथित किये जाने पर अथवा ग्राम से निकाल दिये जाने पर, 4. बाढ़ आ जाने पर तथा 5. अनायों द्वारा उपद्रव किये जाने पर।<sup>18</sup>

इस प्रकार श्रमण के लिए चातुर्मास अर्थात् वर्षावास का समय उसी प्रकार कषायरूपी अग्नि एवं मिथ्यात्व रूपी ताप को त्याग एवं वैराग्य की शीतल धारा से तथा स्वाध्याय और ध्यान की जलवृष्टि से शान्त करने का होता है, यथा-जल की शीतलधारा बरसकर धरती की तपन शान्त करती है। इस तरह जैन परम्परा में चातुर्मास का धार्मिक, आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्रों में महत्त्व तो है ही, इससे राष्ट्रप्रेम के साथ ही व्यक्ति और समाज को एक सूत्र में पिरोने का, वैर-भाव दूर करके मैत्री, सौहार्द एवं समरसता का वातावरण निर्मित करने का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य सिद्ध होता है।

### सन्दर्भ

1. वर्षाकालस्य चतुर्षु मासेषु एकत्रैवावस्थानं भ्रमणत्यागः, भगवती आराधना विजयोदया टीका 421, पृष्ठ 618, मूलाचार वृत्ति 10/18
2. बृहत्कल्पभाष्य 1/36
3. भ. आ. वि. टीका 421, पृष्ठ 618
4. आचाराङ्गसूत्र 2/3/1/111
5. बृहत्कल्पभाष्य भाग 3 गाथा 2736-2730
6. भ. आ. वि. टीका 42
7. भ. आ. वि. टीका 421
8. आचाराङ्ग 2/3/1/113 पृष्ठ 1064
9. ठाणं टिप्पण 5/61-62. पृष्ठ 625
10. स्थानाङ्गवृत्ति पृष्ठ 294, 295

11. बृहत्कल्पभाष्य भाग 2, 1/1539-40  
 12. अनगार धर्मांमृत 9/66-67  
 13. अनगार धर्मांमृत 9/68-69  
 14. कप्पइ निगंथाणं वा निगंथीणं वा एवं विहेणं विहाररेणं विहरमाणं आसाढपुण्णिमाए वासावासं वसित्तए-कल्पसूत्र, सूत्र 17 पृष्ठ 74 (कल्पमंजरी टीका सहित)।  
 15. कल्पसूत्र नियुक्ति गाथा 16, कल्पसूत्र चूर्ण पृष्ठ 89  
 16. भ. आ. वि. टीका 421, अनगार धर्मांमृत ज्ञानदीपिका  
 9/80-81 पृष्ठ 689  
 17. ठाणं 5/10. पृष्ठ 575  
 18. ठाणं 5/99 पृष्ठ 574  
 -राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित, पूर्व जैनदर्शन विभागाध्यक्ष, श्रमण विद्या सङ्काय, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी (उत्तरप्रदेश)  
 'अनेकान्त विद्या भवन', बी- 23/45, पी-6, शारदजनगर कॉलोनी, खोजवाँ, वाराणसी - 221010

(क्रमशः शेषांश पृष्ठ 9 का)

**20. परोपकारी**-वह अपने सामर्थ्य के अनुसार परोपकार में संलग्न होता है, दूसरों का उपकार करके आनन्द का अनुभव करता है। परोपकारी व्यक्ति सबका प्रिय पात्र होता है, उसकी प्रतिकूलताएँ स्वतः दूर हो जाती हैं।

**21. अंतरंग षड् अरि परिहारक**-वह अपने भीतर में विद्यमान काम, क्रोध, लोभ, मान, मद, हर्ष आदि शत्रुओं को नियंत्रित करने के प्रति जागरूक रहकर आत्मनिर्मलता का अनुभव करता है।

**22. इन्द्रियवशी**-अपनी पाँचों इन्द्रियों और मन को वश में रखने वाला श्रावक सुख के मार्ग का वरण करता है, बल्कि यह कहा जाये कि सुख और शान्ति उसकी गोद में स्वतः चले आते हैं।

**23. पापभीरु**-चोरी, परस्त्रीगमन, जुआ, मांस-सेवन आदि पापों के आचरण से दूर रहने वाला श्रावक अनेक दुःखों से बच जाता है।

अन्य जिन गुणों का उल्लेख किया गया है, उनमें एक यह है कि श्रावक का घर अत्यधिक खुले एवं अत्यधिक गोपनीय स्थान पर नहीं होना चाहिए तथा उसमें अनेक निर्गमन द्वार नहीं होने चाहिए। उसे झगड़ा-फसाद के स्थानों से एवं निन्दनीय कार्यों से दूर रहना चाहिए। उसे चिन्तनशील होकर तत्त्वज्ञान में रुचि रखनी चाहिए।

इन सब गुणों से सम्पन्न गृहस्थ का जीवन सुखी, शान्त एवं सुन्दर होता है, इसमें सन्देह नहीं। इसलिए मैं ऐसा श्रावक बनूँ तथा आगे की सीढ़ियाँ चढ़कर जीवन को सफल करूँ।

## जिनवाणी विशेषांक 'दान के विविध आयाम' के लाभार्थी बनें

जिनवाणी मासिका पत्रिका के अब तक 20 विशेषांक प्रकाशित हो चुके हैं। इन सबका प्रकाशन संघ-सदस्यों, श्रावक-श्राविकाओं, जिनवाणी प्रेमियों के अर्थ सहयोग से होता रहा है। इस बार भी आपके सहयोग से यह दान विशेषांक सबके कर कमलों में पहुँचे, ऐसी भावना है।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित इस विशेषांक में आप स्वेच्छा से अपना अर्थ सहयोग निम्नांकित श्रेणियों में प्रेषित कर ज्ञान-प्रचार में लाभार्थी बन सकते हैं-1. रुपये 5,100/- (पाँच हजार एक सौ मात्र) 2. रुपये 11,000/- (ग्यारह हजार मात्र) 3. रुपये 21,000/- (इक्कीस हजार मात्र)

आप यह राशि 'जिनवाणी' (JINWANI) के स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया के खाता संख्या 51026632986 आई.एफ.एस. SBIN0031843 में जमा करा सकते हैं। जमा की गई राशि पर 80जी में कर छूट की सुविधा प्राप्त है। अतः राशि जमा कराकर आप अपना पेन कार्ड संख्या भी प्रेषित करें तथा जमा की गई राशि का विवरण/स्क्रीन शॉट, पता एवं मोबाइल नं. 93124625596 (अशोक कुमार सेठ, मन्त्री), 9314635755 (अनिल कुमार जैन) के व्हाट्स एप्प पर अवश्य प्रेषित करें।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री

## चातुर्मास के लगने से पहले....!

श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

प्रिय विकासजी, सादर जय जिनेन्द्र! आपका पत्र मिला ..जिसमें मुख्य रूप से आपने यह लिखा है कि अनन्त गुरुकृपा से श्रीसंघ ने इस बार मुझे चातुर्मास समिति का राष्ट्रीय संयोजक नियुक्त कर दिया है एवं इससे सम्बन्धित जो भी तैयारियाँ हो रही हैं..उसका संक्षिप्त विवरण भी इस पत्र में संलग्न है। वैसे तो मैंने अपनी टीम के साथ मिल बैठकर खूब विचार-विमर्श किया है ...लेकिन फिर भी ऐसा लग रहा है कि हम भोजनशाला से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं को भूल रहे हैं। अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि ...आप कृपया हमें बताने का श्रम करायें कि...इसके अलावा भी हम ऐसे कौनसे कदम उठायें ...जिससे कि संघहित एवं सर्वहित तो कायम रहे ही ..साथ ही कैसे अनर्थदण्ड से बचते हुए अधिक निर्जरा का लाभ कमाया जा सके ?

प्रिय विकासजी ..सर्वप्रथम आपको श्रीसंघ द्वारा चातुर्मास समिति का राष्ट्रीय संयोजक नियुक्त किये जाने पर अन्तर्मन से शुभकामनाएँ। इस पत्र में आपके द्वारा लिखे गए तैयारियों के विवरण को मैंने ध्यान से पढ़ा ...इसमें अनेक विषयों को आपने कवर किया है ...फिर भी इसके अलावा कुछ महत्वपूर्ण विचार ध्यान में आ रहे हैं। ये विचार किसी क्षेत्र विशेष या व्यक्ति विशेष की कमी बताने हेतु नहीं ...बल्कि समीक्षा भाव से जिनशासन के हित में लिखे हैं...जो कि इस प्रकार हैं-

पिछले वर्ष कुछ क्षेत्रों के चातुर्मासों में सन्त-सती मण्डल की सेवा-पर्युपासना हेतु जाने का सुअवसर मिला। भोजनशालाओं के अन्दर ..दृश्य कुछ ऐसे थे कि...कई श्रावक-श्राविकाएँ भोजन कर रहे हैं (जिनमें शिविर में भाग लेने आई युवा बहनें भी थीं) भोजन परोसने वाले सहयोगी (कर्मचारी) भाइयों में से...कुछ मुँह में गुटखा दबाये हुए हैं ..किसी के शर्ट के बटन भी

अधखुले हैं ...इधर-उधर गुटखे के खाली पाउच बिखरे हुए हैं ...कुछ भाई जो व्यस्त नहीं हैं ..वे कोने में अधलेटे अपने-अपने मोबाइल में तेज आवाज में फ़िल्मी वीडियो देख रहे हैं अथवा गाने सुन रहे हैं ...ये सब देखकर मन में अत्यन्त वेदना हुई ...पर आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि पहले भी ऐसे दृश्य देखने का अनुभव था ही। वहाँ पर विराजमान सन्त भगवन्तों की अनुमति लेकर एवं स्थानीय संघ के पदाधिकारीगण की सहमति से भोजनशाला के कर्मचारियों के लिए दोपहर के भोजन के पश्चात् एक कक्षा का आयोजन रखा। व्यसनमुक्त जीवन और सद्व्यवहार पर लगभग एक घण्टे की पावरफुल कक्षा हुई। बात सीधे दिल से निकली थी ...सो सीधी उन लोगों के दिल पर लगी और भावुकता उनकी आँखों से आँसुओं के रूप में बहने लगी .. सभी सहयोगियों ने मेरे साथ ही चलकर सन्त-महापुरुषों के दर्शन तो किये ही ..साथ ही उनके मुखारविंद से...जीवनपर्यन्त के लिए सभी तरह के नशों का त्याग कर लिया। उसके बाद भी दो अन्य क्षेत्रों में मेरा जाने का अवसर हुआ ..तो वहाँ की भोजनशालाओं में नियुक्त सहयोगी भाई-बहनों ने भी ऐसी ही कक्षा को सुनकर ...वहाँ विराजमान महासती मण्डल से व्यसनमुक्त जीवन जीने के नियम लिए। अजैन बन्धुओं द्वारा इतने बड़े नियम ग्रहण करते देखकर मन में अत्यन्त हर्ष होता है ..पर साथ में यह दुःख भी होता है कि अनेक धर्मस्थानों के परिसरों में ..भोजनशालाओं में ..संघ के कुछ श्रावक भी मुँह में गुटखा चबाते हुए ..उसकी दुर्गन्ध फैलाते हुए ...परोसगारी करते नज़र आते हैं।

विकासजी, ऐसी सब परिस्थितियों को देखते हुए यह अत्यन्त आवश्यक है कि चातुर्मास लगने से पहले ही ...



- ☉ चातुर्मास समिति द्वारा सभी धर्मस्थानों के प्रवेश द्वार पर, अतिथिगृहों अथवा भोजनशालाओं के प्रवेश द्वार पर स्थायी रूप से यह पोस्टर लगा दिया जाए— गुटखा आपके मुँह में हो या जेब में हो या बैग में ..कृपया बाहर फेंक कर ही अन्दर पधारें। इस पोस्टर को लगाने के साथ ही ..उपर्युक्त स्थानों पर कोई भी व्यक्ति....चाहे संघ का पदाधिकारी हो, सदस्य हो अथवा कर्मचारी ..गुटखे के साथ उसका प्रवेश वर्जित होना चाहिए! (इस पोस्टर की डिजाइन भी बनी हुई है ..जो 9841211443 पर व्हाट्स एप्प करके माँगा जा कर..प्रिंट करवाई जा सकती है)
- ☉ चातुर्मास लगने से पहले ही ..समिति के तत्वावधान में..स्थानीय संघ द्वारा भोजनशाला में नियुक्त कर्मचारियों का एक ट्रेनिंग सेशन अवश्य रखा जाना चाहिए ..जिसमें उन सभी को पूर्ण व्यसनमुक्त रहकर, अपने पहनावे को लेकर, व्यवहार को लेकर, मोबाइल के सार्वजनिक उपयोग को लेकर इत्यादि..विशेष सावधानी बरतने के निर्देश दिए जाए एवं सम्बन्धित पदाधिकारीगण द्वारा सम्पूर्ण चातुर्मास में सटीक नज़र और पर्याप्त सावधानी रखी जाए। इसका मुख्य कारण यह है कि ..भोजन ग्रहण करने वाली ज्ञानार्थी बहनें, शिविर में भाग लेनी वाली बालिकाएँ अथवा संघ-समाज की कोई भी बहू-बेटी स्वयं को भोजनशाला में असुरक्षित अथवा असहज महसूस नहीं करे।
- ☉ संघ यह व्यवस्था करे कि भोजनशाला के कर्मचारी गण को एक साथ अथवा बारी अनुसार ..दोपहर के भोजन के पश्चात् फ्री टाइम में ...यथासम्भव चातुर्मासार्थ विराजमान चारित्र-आत्माओं के दर्शन एवं मांगलिक श्रवण का लाभ मिले ..प्रतिदिन हो सके तो अति उत्तम अथवा सप्ताह में कम से कम एक दिन तो यह लाभ मिले ही ..जिससे उनके जीवन में निर्जरा सहित पुण्य की वृद्धि हो ...साथ ही उनके जीवन में भी छोटे-बड़े व्रत नियमों का आगमन हो सके। इसी तरह के एक सार्थक प्रयास में पिछले वर्ष ..संघ की भोजनशाला में कार्यरत सभी सहयोगी गण (भोजन बनाने वाले भाई, परोसगारी और साफ़-सफाई करने वाले भाई एवं बर्तन माँजने वाली बहनें भी) ने एक साथ धर्मस्थान में आकर तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. के पावन मुखारविंद से जीवन में कैसी भी परिस्थिति आये, पर कभी आत्महत्या नहीं करेंगे यह दृढसंकल्प तो ग्रहण किया ही ..साथ ही जीवन में सभी तरह के नशीले पदार्थों के त्याग का नियम लिया और मांगलिक श्रवण का महान् लाभ भी प्राप्त किया।
- ☉ भोजनशाला के सहयोगियों को धोवन-पानी बनाने की विधि की सही ट्रेनिंग दिए जाने की नितान्त आवश्यकता है। अनेकों बार ऐसा भी देखने में आया है कि पानी के केम्पर में..ऊपर से राख की चिमटी डालकर उसे धोवन मान लिया जा रहा है। समिति के मार्गदर्शन में..स्थानीय जानकार श्रावक-श्राविकाओं द्वारा ट्रेनिंग दिलवाकर...उन सहयोगियों को निर्दोष धोवन पानी बनाने की प्रेरणा देना अत्यन्त जरूरी है।
- ☉ हम सभी अच्छी तरह से जानते हैं कि पानी की एक बूंद में असंख्यात जीव हैं...पर इस सत्य को यथार्थ के धरातल पर माना जाना भी आवश्यक है। भोजनशाला में लगे नलों से अथवा पास बने बाथरूमों के नलों से ... यदि बूंद-बूंद भी पानी लीक हो रहा है ..तो उनका बिना विलम्ब ठीक किया जाना आवश्यक है।
- ☉ बाथरूमों के दरवाजें भी सही हों और दरवाजों पर लगी चिटकनी भी सही होनी चाहिए तथा बाथरूमों का स्वच्छ (Hygiene) होना बहुत आवश्यक है। अनेक बार शिविर के बाद बहनों से मिले फीडबैक का एक सारांश यह भी है कि...नई पीढ़ी इस बात को लेकर बहुत क्लीयर है कि हमें भोजन में आइटम कम हो तो भी कोई दिक्कत नहीं है

...लेकिन गन्दे बाथरूमों का उपयोग करने में हमें भयंकर दिक्कत और अरुचि महसूस होती है। इसलिए इस ओर विशेष ध्यान देने और सही सुधार करने की तुरन्त आवश्यकता है।

अनेकों बार ऐसा देखने में आया है कि भोजनशाला में कभी-कभी बहुत कम जने ही भोजन कर रहे होते हैं ...फिर भी कर्मचारी सभी तरफ की सारी लाइटें, पंखें, कूलर ऑन कर देते हैं ...जो कई-कई घण्टों तक भी चालु ही रहते हैं। ऐसा कब तक? उन्हें ट्रेनिंग में यह सिखाया जाना चाहिए कि जहाँ जरूरत है वहाँ सारे लाइट पंखें भी ऑन करने पड़ते हैं..लेकिन जहाँ जरूरत नहीं हो ..वहाँ एक भी लाइट, पंखा, कूलर व्यर्थ नहीं चले। ऐसे ही एक कार्य और भी किया जा सकता है कि उपयोग आने वाली लाइटों के स्विच पर मार्कर से L1 आदि एवं पंखों के स्विच के ऊपर F2 - F3 आदि लिख दिया जाएँ..तो जरूरत वाले लाइट पंखा ही ऑन होंगे...इससे जो लोग ..एक साथ सारे स्विच ऑन कर देते हैं..वे भी अवश्य ही व्यर्थ के अनर्थदण्ड से बच पाएँगे। (यह प्रयोग स्वयं के घरों से ही शुरू कर दिया जाना चाहिए)।

यथा सम्भव हर भोजनशाला में एक अथवा दो बड़ी परात में लकड़ी के बुरादे की व्यवस्था होनी चाहिये .. जिससे कि जागरूक श्रावक-श्राविका भोजन के पश्चात् ...अपनी थाली कटोरी इत्यादि बर्तनों को

बिना पानी के साफ़ करने में उपयोग कर सके। अभी पिछले महीने तड़ा (आन्ध्रप्रदेश) में आयोजित ...दो दिवसीय स्वाध्याय शिविर उड़ान में...यह प्रयोग अत्यन्त सफल रहा एवं स्वाध्यायी जनों की पूर्ण जागृति से...बर्तनों के माँजने में व्यर्थ होने वाले लगभग हजारों लीटर पानी की बचत हो गई।

प्रिय विकासजी ...इन बिन्दुओं के अलावा यहाँ पर चिन्तन करने वाली बात यह है कि हमें सिर्फ चातुर्मास में ही नहीं ...बल्कि चातुर्मास काल के बाद भी ..संघ समाज द्वारा सञ्चालित भोजनशालाओं की तरफ विशेष ध्यान देना होगा और यह सिर्फ चातुर्मास समिति के संयोजक या पदाधिकारीगण की ही ड्यूटी नहीं ..बल्कि प्रत्येक श्रावक-श्राविका का कर्तव्य है कि भोजनशालाओं में जाने पर विशेष जागृति रखें और रखवायें। इससे हम व्यावहारिक एवं आर्थिक नुकसानों से तो बचेंगे ही ..पर उससे भी महत्त्वपूर्ण अनर्थदण्ड रूपी पाप के नुकसानों से भी बच पायेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जागृति के इन छोटे-छोटे ऋदमों को अपनाकर..हम अवश्य ही संघ-समाज में कुछ सकारात्मक परिणाम प्राप्त करेंगे। एक बार फिर से संघसेवा में आपके उत्साह की अनुमोदना एवं आप और आपकी टीम को सफलता हेतु अग्रिम बधाइयाँ ...इति शुभम्....।

आपका कल्याण मित्र 'तीर्थ'  
- 'जिनशासन', 14, अग्रहारम स्ट्रीट, चिन्तादरीपेट,  
चेन्नई-600002 (तमिलनाडु)

## असली सुन्दरता

श्री शुभम बोहरा

आजकल हर कोई व्यक्ति अपना चेहरा सुन्दर बनाने में लगा है। जबकि असली सुन्दरता तो चरित्र की है, जिसे प्राप्त करने में वर्षों लग जाते हैं। बचपन से लेकर जीवन भर चरित्र की रक्षा करनी पड़ती है। बहुत तपस्या करनी पड़ती है। हर पल सावधान रहना पड़ता है कि थोड़ी-सी भी गलती हो गई, तो चरित्र नष्ट-भ्रष्ट हो जाएगा। इसलिए जिस चरित्र का निर्माण बहुत

लम्बे समय में और बहुत तपस्या करके होता है, अधिक प्रशंसा तो उसी की होनी चाहिए। क्योंकि उसमें श्रम और समय बहुत अधिक लगता है। इसलिए दूसरों का सुन्दर चेहरा देखकर उससे अधिक प्रभावित न हो जाएँ तथा उसकी प्रशंसा में न डूब जाएँ। बल्कि जिसका चरित्र उत्तम हो, सुन्दर हो, जो वास्तव में तपस्वी हो, ऐसे व्यक्ति के चरित्र की प्रशंसा अधिक करें, यही न्याय है। इसी से सबका सुख बढ़ेगा।

-नयनतारा गेस्ट हाउस, जलपाँव-425001

## संयम की संरक्षा : जिज्ञासा-समाधान

संकलित

जिज्ञासा-कभी-कभी लगता है साधु संघ में महत्त्व नहीं मिलता और कभी-कभी लगता है मुझे उपेक्षित किया जाता है, ऐसी स्थिति में मुझे क्या करना चाहिए?

**समाधान-**अंग्रेजी में एक सूक्ति लिखी थी-“Be Important, don't fight for Importance.” अर्थात् मूल्यवान एवं महत्त्वशाली बनो, पर महत्त्व और मूल्य मिले, इसकी लालसा मत रखो। कोहिनूर हीरा कभी रास्ते पर पड़ा नहीं रहता, उसे कोई भी अपने हाथों में उठा ही लेता है। यहाँ तक कि मार्बल पत्थर का टुकड़ा भी कभी गलियों में पड़ा नहीं रहता, कारण कि वह मूल्यवान है, इसलिए महत्त्व तो उसे मिल ही जाता है। अपने जीवन में गुण अधिक होते हैं, इसलिए महत्त्व स्वतः ही प्राप्त हो जाता है। अतः महत्त्व पाने से अधिक प्रयास गुण विकास का करना चाहिए।

पहले तो यह भी स्पष्ट होना चाहिए कि महत्त्व प्राप्ति की इच्छा भी अध्यात्महीन चिन्तन है। साधक को साधना करते हुए अनुभूति होती है-‘मैं अपने आप में परिपूर्ण परमात्म-स्वरूप आत्मा हूँ।’ वह अपना जीवन परायी आँखों में नहीं खोजता, वह तो स्वयं अपनी आत्मानुभूतियों में आनन्दित रहता है। पर से पृथक् एकत्व भावना में रमणता उसे इष्ट होती है। साधक कर्म-सिद्धान्त पर विश्वास रखने वाला भी होता है। बाहर में यशकीर्ति-महिमा-महत्ता की चाहना ‘मान-कषाय’ का उदय है। मान-कषाय भीतर में हलचल, क्षुब्धता, नीरसता, अरति, अनुत्साह, ईर्ष्या, असन्तुष्टि, दिखावे की इच्छा, झूठा व्यवहार, असत् प्रदर्शन, अमैत्री, चित्त-विक्षेप आदि दोषों को उगाने वाला और हरा-भरा करने वाला बनता है। यह इच्छा, साधना की भावनाओं के ऊपर तेजाब जैसा कार्य भी करती है। महत्त्व पाने की इच्छा, नामासक्ति आदि

व्यक्तित्व के प्रति आसक्ति हैं। अस्तित्व को पाने के लिए प्रयासरत साधकों की दृष्टि में व्यक्तित्व नगण्य होता है, उन्हें व्यक्तित्व का मोह नहीं रहता।

हमें सहजता की साधना करनी चाहिए। जो है, वह है और जो नहीं है तो नहीं है। इस तरह स्वीकृत भाव को बढ़ाना चाहिए। हमारी तो एकमात्र चाहना शुद्ध मुक्त दशा को पाना है, अन्य सारी चाहनाओं का विलय होने पर ही यह चाहना फलती-फूलती है। हमें कोई महत्त्व दे या न दे उससे हमारी मोक्ष-प्राप्ति में न तो बाधकता खड़ी होती है और न ही साधकता। जो महत्त्व नहीं मिलने पर खेदित होता है वह महत्त्व मिलने पर हर्षित होता ही है। वह अहंकार है अर्थात् साधना का शत्रु है। प्रशंसा की चाहना वही करता है जो प्रशंसनीय नहीं होता है। प्रशंसनीय साधक प्रशंसा की चाहना नहीं रखता।

साधु संघ में सभी मोक्ष पथिक होते हैं, वे राग-द्वेष को जीतते हुए साधना में विकास हेतु प्रयासरत होते हैं। किसी को महत्त्व देना, किसी को नहीं, इस तरह का लक्ष्य उनका नहीं होता है। अन्तर दिखता है तो वह सामने वाले की पुण्यवानी के कारण दिखता है। चार ज्ञान के धारी प्रभु के अन्तेवासी गौतम स्वामी को सुबाहुकुमार इतने इष्ट-कान्त लगे कि उनके विषय में भगवान से प्रश्न पूछा तो फरमाया गया-शुभ प्रकृति अर्थात् शुभ-आदेय-सुभग-यशकीर्ति आदि का उदय रहता है तो हममें कम योग्यता होने एवं कुछ विशेष न करने पर भी सभी हमें महत्त्व देते हैं, प्रशंसा करते हैं, हमसे बात करने के लिए इन्तजार करते हैं, हमें देख-देखकर खुश होते हैं। हमें हर कार्य में प्राथमिकता देते हैं और अगर हमारे अशुभ कर्म का उदय रहे तो इनसे विपरीत प्राप्ति होती है। सामने वाले तो कुछ नहीं करते, मात्र हमें दर्पण दिखाते हैं कि तुम्हारा भूतकाल ऐसा था।

हम ही अज्ञानवश दर्पण दिखाने वालों से राग-द्वेष कर लेते हैं। इस धरती पर लगभग चालीस-पचास वर्ष कुछ और जीना है, कोई महत्त्व दे तो क्या, न दे तो क्या? हमारे मरण के बाद तो कुछ महीनों या सालों में सब हमें भूलने ही वाले हैं। अतः इन सब द्वन्द्वात्मक चिन्तन से ऊपर उठकर आत्म-भावों में रमण करना चाहिए।

**जिज्ञासा**—यदि प्रभावना की ही नहीं जाए तो क्या गलत है, हमने तो स्व-कल्याण के लिए संयम लिया है। हम क्यों सर्वकल्याण के लिए जवाबदार बनें?

**समाधान**—शासन में ऐसे भी कई महापुरुष हुए हैं जो पर-कल्याण को स्वयं के जीवन में पूर्ण गौण रखते हैं। उन साधकों के जीवन में कुछ विशेषताएँ होती थीं। वे किसी से कुछ चाह नहीं रखते थे, पूर्ण निःस्पृह थे। उन्हें मान-अपमान की किञ्चित् भी परवाह नहीं थी। किसी से प्रीति, आत्मीयता, महत्त्व अथवा सम्मान मिले, कोई उनका सहयोगी बने, कोई उन्हें समय-समय पर सेवा दे, ये समस्त मानसिक स्थितियाँ उनकी मिट चुकी थीं। कोई उन्हें सम्भाले या न सम्भाले, कोई चातुर्मास की विनति करे या न करे, उनके नाम की, उनके गुरु के नाम की जय बोली जाए या न बोली जाए, प्रवचन में कोई आए या न आए, विहार में रात्रि पड़ाव की कोई व्यवस्था करे या न करे, कोई शिष्य बने या न बने, कोई उनकी भक्ति करे या न करे, समाज में उनकी प्रशंसा हो या निंदा हो, इन सभी से उन्हें कुछ फर्क नहीं पड़ता था। ऐसे उच्चकोटि के साधकों पर संघ-समाज की कोई जवाबदारी या जिम्मेदारी नहीं रहती है।

जिन्हें संघ-समाज, सम्प्रदाय से सुरक्षा, व्यवस्था, सहयोग, आत्मीयता, सार-सम्भाल आदि की अपेक्षाएँ हैं उन पर संघ-समाज का दायित्व भी रहता है। सरल बात है, चाहिए तो दो, नहीं चाहिए तो भले ही मत दो। हम अपने आपको उस उच्च दर्जे में ले जाएँ, फिर भले ही संघ-समाज, सम्प्रदाय की सेवा नहीं करें तो भी चलता है। उनका तो जीवन ही युगों-युगों तक शासन की महान् प्रभावना कर देता है।

हम परायों की जिम्मेदारी क्यों सिर पर लें, इस विषय में चिन्तन अपेक्षित है। भगवान ने तो सभी को आत्मवत् समझने को कहा है, अन्य में परायेपन की अनुभूति, रुक्षता बढ़ाएगी। आत्मा के मैत्री गुण को घटाएगी। पर-कल्याण लक्ष्य भले ही न बने, पर प्रत्येक सज्जन में भी जब परोपकारिता होती है तो सन्तजन में तो अनिवार्य रूप से होनी चाहिए। वे जो भी पर-कल्याण करते हैं उसके पीछे उनका एक गुण कार्यरत रहता है, वह है—अनुकम्पा।

सम्यक्त्व के पाँच लक्षणों में अनुकम्पा एक है। साधु जगवत्सल एवं जगहितैषी गुणों से युक्त होते हैं। प्रभावना उनका लक्ष्य नहीं होता, पर हितबुद्धि सदैव रहती है। जैसे नदी अपने स्वभाव में बहती है, तो इसके कारण किनारों पर हरियाली स्वतः होती है।

ऐसी भी मान्यता है कि पर-सेवा में लगने वालों को स्व-कल्याण के लिए समय ही नहीं मिलता।

साधक-जीवन का लक्ष्य मात्र निर्जरा करना ही है। साधक हर पल स्वयं निर्णय करे कि उस क्षण अधिक निर्जरा किसमें हो रही है। प्रभावना के नाम पर विकथा, जनसम्पर्क आदि न करें। कोई मोक्ष-पिपासु आए तो उसे राह दिखा दें एवं स्वयं के आत्म-कार्य में तल्लीन हो जायें। निवृत्ति काल में प्रवृत्ति के क्षण अगर याद आ रहे हैं तो समझना चाहिए, राग बढ़ रहा है, ऐसी स्थिति में तुरन्त स्वयं पर लगाम लगानी चाहिए। कुछ दिनों का मौन, तप आदि करके पुनः आत्मस्थ होना चाहिए। लक्ष्य स्पष्ट है तो आत्म-कल्याण के लिए समय नहीं मिलने की समस्या नहीं रहती है, पर हमें प्रवेश (इन) के साथ बाहर निकलने के द्वार (एग्जिट) भी पता होना चाहिए।

अन्त में लक्ष्य तो यही बना रहे कि हमारी आराधना ही प्रभावना का हेतु बने, हम स्वयं को उस उच्च दशा में प्रवेश करवायें। यह देव-गुरु-धर्म की कृपा से ही सम्भव है।



## कैसे हो आपसी समायोजन?

श्री पारसमल चण्डालिया

प्राचीन भारतीय संस्कृति में संयुक्त परिवार का विशिष्ट महत्त्व था। परिवार के सारे सदस्य आपसी तालमेल-समन्वय-समायोजन (Adjustment) से जीवन यापन करते थे। यही कारण था कि कम साधन सुविधाओं में भी वे सुखी और खुशहाल थे। आज परिस्थितियाँ बदल गयी हैं, संयुक्त परिवार टूटकर एकल परिवार में परिणत हो रहे हैं। लोगों की धारणा बनी है कि-हम दो हमारे दो। छोटा परिवार सुखी परिवार।

माता-पिता के साथ रहना किसे अच्छा नहीं लगता है? लेकिन पाश्चात्य संस्कारों के दुष्प्रभाव, उम्र के चढ़ते पड़ाव एवं तेजी से बदलती दुनिया में इस पहलू को बनाए और बचाए रखना कठिन है, खासकर तब जब आज के युवा पढ़ाई या नौकरी की वजह से कई साल दूर रहकर घर लौट रहे हों। बदलावों और जिम्मेदारियों के बीच अपने ही घर में पुनः ढलने में कई युवा खुद को असमर्थ पाते हैं। आवश्यकता है पुराने एवं नये आयामों को नए सिरे से समझने की। तकनीकी के इस दौर में कुछ चीजों ने बहुत तेजी से बदल कर नया रूप लिया है। आज की युवापीढ़ी इसी बदलाव से गुज़र रही है। स्कोप, परफेक्शन, आयाम, रफ्तार, अशान्ति और सिंगल यूनिट के बदलाव की ये छह बातें युवाओं के जीवन में नये ढंग से उतर रही हैं। अतः अभिभावकों द्वारा बच्चों के लालन-पालन में भी इनकी तैयारी रखनी जरूरी है, क्योंकि बच्चे इन्हें जीएंगे। ये बातें उनकी ज़िन्दगी का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन रही हैं। अतः बच्चों को इन बातों के लिए मानसिक रूप से तैयार करना होगा। अब घर और बाहर की दुनिया में व्यवहार को लेकर विशेष सावधानी रखनी पड़ेगी।

माता-पिता तो आज भी अपनी सन्तान से वैसे ही

सम्बन्ध, वैसे ही लाड़-प्यार और वात्सल्य प्रदान करना चाहते हैं। किन्तु युवापीढ़ी की भी अपनी समस्याएँ हैं, जिनके कारण वे अपने पारिवारिकजनों/माता-पिता से मधुर सम्बन्ध नहीं रख पा रहे हैं। दो पीढ़ियों को आपस में जोड़े रखने के लिए दोनों पक्षों की ओर से प्रयास जरूरी हैं। खासतौर से युवा पीढ़ी बुजुर्गों की मानसिकता को समझने की कोशिश करे। यदि आज के युवा निम्न बातों पर अमल करे तो आपसी रिश्ते मधुर बन सकते हैं तथा पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी में समायोजन और आपसी तालमेल बढ़ सकता है।

**1. रिश्तों की महत्ता समझें-बच्चों और माँ-बाप का रिश्ता अटूट रहना चाहिये, अपने माता-पिता के साथ रिश्ते की प्रगाढ़ समझ रखना सबके लिए कल्याणकारी साबित होता है। इस रिश्ते की महक और अहसास को समय-समय पर वैसे ही हवा-धूप लगानी पड़ती है जैसे बरसों के बाद कपड़ों को।**

**2. कृतज्ञ बनें, कृतघ्न नहीं-माँ-बाप कितनी मुश्किलें उठा कर बच्चों को बड़ा करते हैं, उन्हें पढ़ा-लिखाकर कमाने लायक बनाते हैं, इन बातों को सदैव याद रखते हुए उनके उपकारों को मानें, उपकार चुकाने का प्रयास करें, उन्हें साता-समाधि पहुँचाएँ, किन्तु कृतघ्न और कठोर बन कर उनके कोमल हृदय को ठेस नहीं पहुँचाएँ।**

**3. सुनाने का नहीं, सुनने का लक्ष्य रखें-बहुत से ऐसे मौके आयेंगे, जहाँ बातचीत और मोल-भाव करके फैसला दोनों पक्षों के हक में लिया जा सकता है। साफतौर से बयान करें अपनी सोच का और उनका नज़रिया सुनने की क्षमता रखें। सामने वालों की बात ध्यान से सुनें, जल्दबाजी में उत्तर देकर बहस नहीं**

करें, शान्ति से सुनने के बाद निर्णय लेना रिश्तों को भी सफलता प्रदान करता है।

**4. नम्र बनें एवं बड़ों की कद्र करें**—उम्र सिर्फ आपकी नहीं उनकी भी बढ़ रही है। माथे की शिकन दूसरे की झुर्रियों को धुन्धला न कर सकें, इसलिए गुञ्जाइश रखें एक ही बात को दो से ज्यादा मर्तबा समझने या बताने की। विनम्रता उन्हें आपके प्रति कठोर और आपको उनके लिए चिड़चिड़ा नहीं होने देगी। बड़ों की कद्र करने से वातावरण मधुर बनता है।

**5. घर के संस्कारों को अपनाएँ**—अनुशासन और आज्ञापालन बुरा नहीं है, अजीब है अपने ही घर में नियम पालन करना। पर इस सच से हिचकिचाना कि हर व्यक्ति के अपने तौर-तरीके हैं, बेकार बहस को जन्म देना है। आप किन चीजों के लिए रोक-टोक नहीं सुनना चाहते और वे किन मसलों को नज़र अन्दाज नहीं कर सकेंगे, यह जानना अहम है। ध्यानपूर्वक मानी गई सीमाएँ नजदीकियाँ बढ़ाती हैं।

**6. समझने की कोशिश करें, समझाने की नहीं**—समझने की हद हो सकती है समझाने की नहीं। नए विषय को छेड़ें तो सतही तौर पर न कहें। बेहतर जानकारी बेहतर परिणाम की प्रस्तावना है। ऊँची आवाज में बात कहने का हुनर आज की युवा पीढ़ी ने भले ही सीखा हो, पर अनुभव में तो वे बुजुर्गों से पीछे ही हैं, उनकी पीढ़ी आज भी भूमिका जानने का समय रखती है।

**7. आपसी संवाद जरूरी है**—मन को मापने का सरल तरीका है सवाल पूछना। तिल का ताड़ न बने, इसके लिए आवश्यक है कि सामने वाले से खुलकर पूछ लिया जाए कि उनकी सोच, प्रतिक्रिया या अनुभव किसी मुद्दे पर क्या है? मनगढ़ंत अनुमान और खयाली पुलाव घरों की नींव कच्ची बनाते हैं। अतः आपसी संवाद कायम रखना आवश्यक है। बिना आपसी संवाद के दूरियाँ और मनमुटाव बढ़ते जाते हैं।

**8. स्वच्छन्द नहीं, आज्ञाकारी बनें**—आपकी आजादी खोई नहीं है, उसके नियम बदल रहे हैं। घर से

दूर किसी अन्य शहर में रहने की आदत, बिना किसी की इजाजत के आने-जाने की स्वतन्त्रता हमारी जवाबदेही को थोड़ा दूषित कर देती है। सालों बाद घर लौटने के बाद भी बड़ों को पूछने का हक है, कहाँ गये, कहाँ से आये, हम तो भोजन पर तुम्हारा इंतजार कर रहे थे, जैसे सवाल हमें खटकने लगते हैं, पर इनकी नेकदिली को अपनी चिन्ताओं का कारण न बनाएँ।

**9. परस्पर सहयोगी बनें**—घर गृहस्थी का चाहे कुछ भी कार्य हो, बड़ों के सहयोगी बनें। उनकी राय में अपनी राय को महत्त्व दें। हर कार्य उनके ऊपर नहीं छोड़ें, मदद माँगें और मदद करें। खुद को आत्मनिर्भर बनाने के जतन में हम कभी-कभी भूल जाते हैं कि हमारे माँ-बाप बहुत हर्षित हैं जब हम उनसे सहायता माँगते हैं। उन्हें महसूस करवाते हैं कि वे हमारी दिनचर्या में अहमियत रखते हैं। साथ ही जब उन्हें किसी काम में उलझा देखें तो मदद का हाथ बढ़ाएँ। अपनी सोच का दायरा विशाल बनाएँ। कमरे का दरवाजा ढाँक लेने से गृहस्थी की विषमताएँ समाप्त नहीं हो जातीं।

**10. अनुभवों का लाभ उठाएँ**—आज की पढ़ी-लिखी युवापीढ़ी अपने को होशियार समझ कर बड़ों को Old is Fool समझती है, किन्तु Old is Gold है। बड़ों की छत्रछाया पुण्यवाणी से ही मिलती है। वे सौभाग्यशाली होते हैं जिन्हें माँ-बाप के साथ जीने का अवसर मिलता है। कमाना तो जिन्दगी भर ही है। काम कभी खत्म नहीं होंगे, तो क्यूँ न जितना वक्त साथ बिताने को मिले, उसमें नए अनुभव बोएँ और नई यादें बटोरें। व्यस्तता में भी बड़ों के साथ बैठने का समय निकालें। बड़ों के अनुभवों को सुन कर समझकर छोटे-छोटे लम्हों में बड़ी-बड़ी स्मृतियाँ तैयार करें। उपर्युक्त बातों पर अमल करते हुए पुरानी और नई, इन दो पीढ़ियों को आपस में जोड़कर घर-परिवार को स्वर्ग बनाया जा सकता है।

-7/14, उत्तरी नेहरु नगर, विडुल बस्ती,  
ब्यावर-305901, जिला-अजमेर (राज.)

## ज्ञान एवं सदुपयोग हैं सुख के साधन

श्री धर्मन्द्र कुमार जैन

संसार में प्रत्येक प्राणी सुख चाहता है तथा सुख-प्राप्ति के लिए रात-दिन उसकी भागा-दौड़ी, माथा फौड़ी और हाथा-जोड़ी हो रही है। तथापि अनवरत परिश्रम कर रहे मानवों में विरले ही सुख को प्राप्त करते हैं। सुख भी दो प्रकार का है-एक परिवर्तनशील सुख जो प्राप्त होकर कभी भी दुःख में बदल जाता है और दूसरा अपरिवर्तनशील जो कभी भी दुःख रूप में परिवर्तित नहीं होता है। दूसरी तरह से इन्हें क्रमशः सुखाभास और वास्तविक सुख भी कह सकते हैं। प्रथम परिवर्तनशील सुख या सुखाभास का सम्बन्ध पर पदार्थों से है तथा अपरिवर्तनशील सुख या शाश्वत सुख का सम्बन्ध भीतर से है।

सामान्यतया देखने में आता है कि संसार में गरीब भी सुखी हैं, अमीर भी सुखी हैं, गरीब भी दुःखी हैं और अमीर भी दुःखी हैं। बड़े-बड़े नगरों में, महानगरों में रहने वाले समस्त प्रकार की भौतिक सुविधाओं का उपभोग करने वाले, व्यवसाय अथवा नौकरी आदि के द्वारा लाखों का पैकेज प्राप्त करने वाले बंगला-कार-कोठी युक्त व्यक्ति भी दुःखी हैं। हम ग्रामीण परिवेश को लें तो दिन भर सर्दी, गर्मी और वर्षा की परवाह न करते हुए कड़ी मेहनत करके अन्नादि के द्वारा किसान अपना एवं दूसरों का पालन-पोषण करता है। गाँवों में सुख-भोग तथा विलासितापूर्ण जीवन-यापन करने के साधन नहीं हैं। यदि साधन हैं भी तो विद्युत पावर की अधिकांशतः अनुपलब्धि के कारण उनका सुख भोग नहीं कर पाते हैं अर्थात् वे भी पूर्णरूपेण सुखी नहीं हैं। वे निरन्तर शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। अतः सुख-दुःख का सम्बन्ध अपनी सोच, अपना चिन्तन या मानसिक स्थिति से है। यदि सोच सकारात्मक है तो जो साधन वर्तमान में प्राप्त हैं, वे पर्याप्त हैं, इस चिन्तन से वह सुखी रह सकता है।

सद्ज्ञान के सद्भाव में हम चिन्तन करते हैं तो प्रतीत होता है कि हमारे दुःख और सुख का कारण कोई अन्य नहीं बल्कि हम स्वयं हैं, क्योंकि कोई भी व्यक्ति किसी को सुख-दुःख देने में समर्थ नहीं है। सामने वाला तो निमित्त बनता है, जबकि उपादान हमारा स्वयं का होता है। शासनेश प्रभु महावीर की अन्तिम देशना उत्तराध्ययनसूत्र के माध्यम से साधक को प्रेरणा दी गई है-

अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य।

अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्टिय-सुप्पट्टिओ।।

-उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 20, गाथा 37

अर्थात् यह अपनी आत्मा ही प्राप्त सुखों और दुःखों का कर्ता है, स्वयं ही भोक्ता है, क्योंकि कर्म कर्ता का ही अनुसरण करते हैं, अन्य का नहीं। सन्मार्ग में स्थित आत्मा हमारा मित्र होता है और उन्मार्ग में स्थित आत्मा हमारा अमित्र अर्थात् शत्रु होता है। जब हम आलोचना पढ़ते हैं तो उसमें एक दोहा है-

सुख-दुःख दोनों बसत हैं, ज्ञानी के घट माँहि।

गिरि-सर दीसै मुकुर में, भार-भीजबो नाहीं।।

अर्थात् ज्ञानवान् के हृदय में सुख और दुःख दोनों रहते हैं तथापि वह उनसे प्रभावित नहीं होता। वह सुख-दुःख से अपना सम्बन्ध नहीं जोड़ता। वह जानता है कि मेरे कर्मों के उदय के कारण ऐसा हो रहा है। जैसे दर्पण प्रतिबिम्ब के रूप में पर्वत के भार से भारी और सरोवर के जल से गीला नहीं होता। उसी प्रकार जो साधक कर्तृत्व और भोक्तृत्व भाव का त्याग कर जाता और द्रष्टा भाव में रहता है तो कर्मोदय से उत्पन्न होने वाले सुख-दुःख से वह प्रभावित नहीं होता है। किन्तु यह ज्ञान के सद्भाव में ही होता है। यदि ज्ञान का अभाव है तो प्रत्येक परिस्थिति में व्यक्ति दुःखी रहता है। ज्ञानी और अज्ञानी

में बहुत बड़ा अन्तर होता है। ज्ञानी की सोच सकारात्मक होती है जबकि अज्ञानी नकारात्मक सोचता है। ज्ञानी अपनी सकारात्मक सोच के द्वारा दुःख में भी सुख का दर्शन करता है जबकि अज्ञानी नकारात्मक सोच द्वारा सुख में दुःख तलाशता है। ज्ञानी दुःख का कारण स्वकृत कर्मों को मानता है और अज्ञानी दूसरे व्यक्ति, वस्तु और परिस्थितियों को दुःख का कारण मानता है। इसीलिए प्रभु महावीर ने उत्तराध्ययनसूत्र के छठे अध्ययन की प्रथम गाथा में फरमाया है—जावंतऽविज्जा पुरिसा, सव्वे ते दुक्ख संभवा अर्थात् जहाँ ज्ञान है वहाँ सुख है और जहाँ अज्ञान है, वहाँ दुःख है।

सदुपयोग में दो शब्द हैं सत् + उपयोग। इसका अर्थ है—श्रेष्ठ उपयोग। सदुपयोग जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मानव को विकास के पथ पर अग्रसर करता है, अतः सदुपयोग सर्वांगीण विकास का पर्याय है। इस मानव जन्म में पूर्वकृत अकृत पुण्यवानी से मनुष्य को सुन्दर तन, पाँचों पूर्ण इन्द्रियाँ, श्रेष्ठ कुल, आर्य क्षेत्र आदि प्राप्त होते हैं, किन्तु निज ज्ञान के प्रकाश में अर्थात् सम्यग्ज्ञान के सद्भाव में ही इनका सदुपयोग हो सकता है। जाने हुए ज्ञान का जीवन में आचरण करने पर ही व्यक्ति प्राप्त तन, मन, धन, इन्द्रियाँ, योग्यता, सामर्थ्य आदि का सदुपयोग करने में समर्थ होता है। युवा यह जानता है कि गुटखा, जर्दा, शराब आदि का सेवन करने से स्वास्थ्य खराब होता है, परिश्रम से अर्जित धन बर्बाद होता है, आर्थिक कष्ट सहने पड़ते हैं, कभी-कभी गम्भीर रोग हो जाने पर जीवन से भी हाथ धोना पड़ता है, इन सबका ज्ञान होने पर भी वह इनका त्याग नहीं करता, निरन्तर दोषों का सेवन करता रहता है। इसका तात्पर्य यह है कि उसने ऊपरी सतह पर यह ज्ञान कर लिया कि उक्त दोष हानिकारक हैं, कष्टदायी हैं तथापि वह अन्तर्हृदय से इनको दोषरूप में स्वीकार नहीं करता और उनको छोड़ता नहीं है।

आचार्य हस्ती प्राप्त संसाधनों का दुरुपयोग करने के दुष्परिणाम फरमाते हुए कहते हैं—“जो पूँजी पाकर उसका सदुपयोग नहीं करता और दूसरों की सहायता

नहीं करता प्रत्युत दुर्व्यसनों का पोषण करता है, वह इस लोक में निन्दित होता है और परलोक को भी पापमय बनाकर दुःखी होता है।”

तन का सदुपयोग है कि हम अक्षम, असहाय, जरूरतमन्द की यथाशक्ति सेवा करें, मदद करें, अपने सुख को बाँटें तो उनकी खुशी ही हमारी खुशी होगी, उनका सुख ही हमारा सुख होगा। अपने सुख की आसक्ति छोड़ने पर ही व्यक्ति दूसरों की सेवा का आनन्द ले सकता है।

मन का सदुपयोग है—मन से सदा सकारात्मक चिन्तन करें, सबका भला सोचें, किसी का बुरा नहीं सोचें, किसी को बुरा न समझें, यदि व्यक्ति बुरा समझता है तो सर्वप्रथम ऐसा करके स्वयं को बुरा सिद्ध करता है, क्योंकि अपने अन्दर बुराई उत्पन्न हुए बिना किसी दूसरे को बुरा समझना सम्भव नहीं है। मन का सदुपयोग करने में व्यक्ति स्वतन्त्र है, स्वाश्रित है, ऐसा करने के लिए उसे किसी धन आदि अन्य साधन की अपेक्षा नहीं है।

वाणी का सदुपयोग है—सत्य बोलना, मधुर बोलना, आवश्यकता के अनुरूप बोलना, समय के अनुसार बोलना। अपने सुवचनों के द्वारा वह सभी का आदरास्पद एवं प्रिय बन जाता है और कुवचनों के द्वारा वह अप्रिय बन जाता है। अप्रिय से कोई व्यवहार नहीं रखना चाहता, बात नहीं करना चाहता। सद्बचन सभी को सुख साता पहुँचाने वाले होते हैं, शीतलता प्रदान करते हैं। इसके विपरीत दुर्वचन परपीड़ा, कलह, तनाव, हिंसा, भय आदि के कारण बनते हैं। कौरवों एवं पाण्डवों में कलह का कारण दुर्वचन ही था।

ज्ञान का बल भी बड़ा है। ज्ञान के बल का सदुपयोग है—आत्मविकास और पर कल्याण। ज्ञान का सदुपयोग करने पर व्यक्ति स्वयं को तो सुखी और समृद्ध बनाता ही है, साथ ही वह दूसरों को भी सुखी एवं प्रसन्न बनाता है। ज्ञान के बल पर चारों ओर भौतिक विकास दिखाई देता है, पर यह विकास तो बाह्य भौतिक विकास है। इसके अलावा आध्यात्मिक क्षेत्र में भी ज्ञान का उत्तरोत्तर विकास करते हुए साधक मुक्ति रूप चरम



लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। ज्ञान बल का सदुपयोग होने पर व्यक्ति किसी भी स्थिति में चाहे सम्पन्न हो या विपन्न, उच्च पद पर हो या निम्न पद पर, मजदूर हो या मालिक हो, राजा हो या मन्त्री हो, बड़ा हो या छोटा हो कभी दुःखी नहीं होता, क्योंकि शाश्वत सुख बाह्य साधनों पर आधारित नहीं है। इसका वास्तविक ज्ञान होने पर साधक प्रत्येक परिस्थिति में अपने आपको सदा शांत, प्रसन्न एवं निर्भय बनाये रहता है अर्थात् ये सब स्वतः उसके जीवन में अभिव्यक्त हो जाते हैं। ज्ञानी की विद्या, धन और शक्ति सदुपयोग के लिए ही होते हैं। नीतिशतक के रचनाकार भर्तृहरि कहते हैं-

विद्या विवादाय, धनं मदाय, शक्तिः परेषां परपीडनाय।  
खलस्य साधोर्विपरीतमेतत्, ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय॥

सज्जन विद्या का सदुपयोग ज्ञान के लिए, धन का

सदुपयोग दान के लिए तथा बल का सदुपयोग सन्तप्त प्राणियों की रक्षा के लिए करते हैं। इसके विपरीत दुर्जन ज्ञान का उपयोग विवाद-कलह के लिए, धन का उपयोग अहंकार के लिए तथा शक्ति दूसरों को सताने के लिए लगाते हैं।

अपने सर्वांगीण विकास के पथ पर चलने का इच्छुक जब तक अपने जाने हुए ज्ञान को अपने व्यवहार में नहीं लाता, अपने जीवन का अभिन्न अंग नहीं बनाता तब तक वह उपलब्ध वस्तु, योग्यता, सामर्थ्य, तन, मन, धन, इन्द्रियाँ, शरीर, बुद्धि आदि का सदुपयोग नहीं कर पाता है। यह स्वाभाविक तथ्य है कि जब किसी का सदुपयोग नहीं होता तब दुरुपयोग होने लगता है। दुरुपयोग ही स्व-विनाश का एवं समस्त दुःखों का कारण है।

## भावी आचार्यश्री महेन्द्र

### गुणगान

महासती श्री पदमप्रभाजी म.सा.

संघ सिरताज की, महेन्द्र गुरुराज की,  
गायें गुण गाथा, हो हो गायें गुण गाथा॥टेर॥

जोधाणा की पुण्यधरा पर, लोढ़ा कुल चमकाये हैं,  
पारसमलजी के लाड़ले नन्दन, माँ सोहनी के जाये हैं।

रत्नसंघ शान की, भावी के भगवान की।

गायें गुण गाथा, गायें गुण गाथा॥1॥

धन वैभव का त्याग किया,

भर यौवन में संयम धारा,

दृढ़ साहस कर मानो,

तुमने कर्मों को है ललकारा।

शौर्य भरे गान की, हम सबके अभिमान की।

गायें गुण गाथा, गायें गुण गाथा॥2॥

संयम लेकर गुरु सेवा का, जीवन ध्येय बनाया है,  
स्वाध्याय जप-तप में रमकर, आत्म को महकाया है।

तप शूरा अनगार की, शासन के सिणगार की।

गायें गुण गाथा, गायें गुण गाथा॥3॥

महान् अध्यवसायी कहाये,

भावों की निर्मलता से,

अन्तेवासी बने गुरु के,

आज्ञा और आराधनता से,

गुरु समर्पित शिष्य की, आगम के हर दृश्य की।

गायें गुण गाथा, गायें गुण गाथा॥4॥

क्या गाये हम गुरु गुण गाथा, जीवन महिमा मण्डित है,

खंती मुक्ति यति धर्म की, साधना अखण्डित है,

ओजस्वी व्यक्तित्व की, यशस्वी कृतित्व की।

गायें गुण गाथा, गायें गुण गाथा॥5॥

हर सोच तेरी साकार बने,

हर स्वप्न तेरा फलवान बने,

तेरे शासन की श्रीवृद्धि, हर आत्म गुणवान बने

युग युग जीओजी, मेरे गुरुदेवजी।

गायें गुण गाथा, गायें गुण गाथा॥6॥

-संकलनकर्ता : श्री धनसुरेश जैन, महावीर नगर,  
सवाईमाधोपुर (राजस्थान)

## आओ मिलकर कर्मों को समझें (28)

### (प्रत्याख्यानावरण-कषाय चतुष्क)

श्री धर्मचन्द्र जैन

**जिज्ञासा**— प्रत्याख्यानावरण कषाय किसे कहते हैं?

**समाधान**— जो कषाय पूर्ण-प्रत्याख्यान पर आवरण लाये, उसे प्रत्याख्यानावरण कषाय कहते हैं। दूसरे शब्दों में यह सर्वविरति, साधुपना या चारित्र ग्रहण करने में बाधक बनता है। जब तक प्रत्याख्यानावरण कषाय चतुष्क का विपाक उदय रहता है तब तक उस जीव को वास्तविक रूप में सर्वविरति प्राप्त नहीं हो पाती है। किन्तु इस कषाय के उदय होने पर एक देश त्याग रूप श्रावक व्रतों के पालन करने में बाधा नहीं आती। तत्त्वार्थ भाष्य अध्ययन 9 में कहा भी है—प्रत्याख्यानावरण-कषायोदयात् विरताविरति-र्भवत्युत्तमचारित्रलाभस्तु न भवति। अर्थात् प्रत्याख्यानावरण कषाय के उदय से विरताविरति प्राप्त हो जाती है, किन्तु उत्तम चारित्र का लाभ प्राप्त नहीं होता है। प्रत्याख्यानावरण कषाय के चार भेद होते हैं— क्रोध, मान, माया और लोभ।

**जिज्ञासा**— प्रत्याख्यानावरण कषाय चतुष्क को किन-किन उपमाओं से बतलाया गया है?

**समाधान**— प्रज्ञापना पद 23, कर्मग्रन्थ भाग-1 आदि में प्रत्याख्यानावरण कषाय चतुष्क को निम्न उपमाओं से इस प्रकार बतलाया है—

**प्रत्याख्यानावरण क्रोध**—जैसे धूल में खींची गई रेखा थोड़ी सी हवा चलते ही कुछ समय में मिट जाती है, वैसे ही इस प्रकार का क्रोध कुछ उपाय करने से शान्त हो जाता है।

**प्रत्याख्यानावरण मान**—जिस प्रकार सूखे काष्ठ में तेल की मालिश करने पर नरमाई आने की सम्भावना हो सकती है, इसी प्रकार यह मान भी कुछ परिश्रम और उपाय करने पर दूर हो जाता है।

**प्रत्याख्यानावरण माया**—जिस प्रकार चलती हुई गाय की मूत्र धारा टेड़ी-मेड़ी हो जाती है, वह गोमूत्रिका पवन आदि से सूख जाती है, उसके बाद मिट जाती है। उसी प्रकार से यह कुटिल स्वभाव रूप माया भी थोड़ा प्रयत्न करने से दूर हो जाती है।

**प्रत्याख्यानावरण लोभ**—जिस प्रकार गाड़ी के पहिये का खञ्जन (कीट) साधारण परिश्रम से छूट जाता है, उसी प्रकार यह लोभ कुछ परिश्रम से दूर हो जाता है।

**जिज्ञासा**— प्रत्याख्यानावरण कषाय चतुष्क का स्वरूप जीवन-व्यवहार में किस प्रकार समझा जा सकता है?

**समाधान**—प्रत्याख्यानावरण क्रोध—क्रोध का त्याग कर क्षमा एवं शान्ति धारण करने से अन्तरात्मा में प्रसन्नता, निश्चिन्तता, निर्भयता आदि स्वाभाविक सुखों की उपलब्धि होती है, ऐसा जानते हुए भी क्रोध का त्याग नहीं कर पाना, क्षमा धारण नहीं कर पाना, प्रत्याख्यानावरण क्रोध है।

**प्रत्याख्यानावरण मान**—मान के त्याग से मृदुता, हृदय की कोमलता, विनम्रता आदि गुणों की प्राप्ति होती है, ऐसा जानते हुए भी मान या मद का त्याग नहीं करना, त्याग करने के लिए प्रयत्नशील नहीं होना, सजग नहीं होना, प्रत्याख्यानावरण मान है।

**प्रत्याख्यानावरण माया**—माया के त्याग से स्वाधीनता, सरलता, सरसता आदि गुणों की प्राप्ति होती है, ऐसा जानते हुए भी माया का त्याग नहीं करना, उसके त्याग का प्रयत्न नहीं करना, प्रत्याख्यानावरण माया है।

**प्रत्याख्यानावरण लोभ**—लोभ का त्याग करने से सन्तोष, शान्ति, ऐश्वर्य आदि गुणों की प्राप्ति होती

है, ऐसा जानते हुए भी लोभ का त्याग नहीं करना, प्रयत्नशील नहीं रहना प्रत्याख्यानावरण लोभ है।

दूसरे शब्दों में ऐसा कहा जा सकता है कि सर्वविरति धर्म को धारण करने में ही शान्ति, स्वाधीनता का अक्षय-अखण्ड सुख है। इस सुख के लिए विषय-भोगों की दासता का त्याग करना, संयम धारण करना, इन्द्रिय तथा मन को भोगों से दूर हटाना प्रत्याख्यानावरण कषाय चतुष्क का क्षय एवं क्षयोपशम है।

**जिज्ञासा**—प्रत्याख्यानावरण कषाय चतुष्क के बन्ध, उदय, उदीरणा, सत्ता को गुणस्थानों की अपेक्षा से किस प्रकार समझ सकते हैं ?

**समाधान**—प्रत्याख्यानावरण कषाय चतुष्क का बन्ध 1 से 5 गुणस्थानवर्ती सभी जीवों के होता है। उदय भी 1 से 5 गुणस्थानवर्ती सभी जीवों के रहता है, किन्तु इतना अवश्य है कि एक बार में क्रोध, मान, माया, लोभ इन चारों में से किसी एक कषाय का ही विपाक उदय रहता है। प्रदेश उदय तो चारों कषायों का एक साथ चलता ही रहता है। प्रदेशोदय उपशम श्रेणि वालों में नवें गुणस्थान तक, जब तक उसका उपशम न हो जाय तब तक रहता है तथा क्षपक श्रेणि वालों में नवें गुणस्थान तक जब तक उसका क्षय न हो जाय तब तक बना रहता है।

उदय के समान ही उदीरणा होती है अर्थात् जब तक विपाकोदय रहता है तब तक प्रत्याख्यानावरण कषाय की उदीरणा होती रहती है। प्रत्याख्यानावरण कषाय चतुष्क की सत्ता उपशम श्रेणि की अपेक्षा 1 से 11 गुणस्थान तक रहती है तथा क्षपक श्रेणि करने वाले जीवों में 1 से 9 गुणस्थान तक रहती है। 9वें गुणस्थान में उस-उस कषाय का क्षय होने के पूर्व तक सत्ता रहती है। क्षय होने के बाद सत्ता नहीं रहती है।

**जिज्ञासा**—क्या प्रत्याख्यानावरण कषाय चतुष्क के उदय से जीव मनुष्य गति में ही उत्पन्न होता है ?

**समाधान**—प्रत्याख्यानावरण कषाय चतुष्क के उदय रहते जीव के परिणामों में उतार-चढ़ाव चलता रहता है। जिन क्षणों में जीव आगामी भव की आयु का बन्ध करता

है, उन क्षणों में जीव के जैसे परिणाम होते हैं अर्थात् प्रत्याख्यानावरण कषाय के जिस स्तर का उदय चल रहा है तथा उस समय जीव के परिणामों की धारा जैसी चल रही है, उसके अनुसार गति, जाति आदि से सम्बद्ध आयु का बन्ध होता है। जैसी आयु बन्धी है, उसी के अनुसार जीव को आगामी भव में जाकर जन्म लेना होता है। कर्मग्रन्थादि में जो कहा है कि प्रत्याख्यानावरण कषाय के उदय में जीव मनुष्यायु का बन्ध करता है, वह सामान्य अथवा व्यवहार नयापेक्षा से कथन समझना चाहिए।

वैसे तो प्रत्याख्यानावरण कषाय का उदय पहले से पाँचवें गुणस्थान तक रहता है। पहले गुणस्थान वाले जीव परिणामानुसार चारों में से किसी एक गति का आयु बन्ध कर सकते हैं। दूसरे गुणस्थान वाले नरकायु को छोड़कर शेष तीन आयु का, चौथे गुणस्थान वाले मनुष्यायु और देवायु का तथा पाँचवें गुणस्थान वाले आराधक, श्रावक-श्राविका देवगति (वैमानिक) का आयुबन्ध करते हैं।

**जिज्ञासा**—प्रत्याख्यानावरण कषाय चतुष्क की उदय स्थिति कितनी होती है ?

**समाधान**—कर्मग्रन्थादि में प्रत्याख्यानावरण कषाय चतुष्क की स्थिति (काल मर्यादा) चार माह की बतलायी गई है। यह स्थिति व्यवहार नय की अपेक्षा से, स्थूल दृष्टि से अथवा प्रत्याख्यानावरण कषाय जन्य संस्कारों के प्रभाव की अपेक्षा से समझनी चाहिए। चार माह की स्थिति से यह भी समझा जा सकता है कि श्रावक-श्राविका अपने गृहीत व्रत-नियमों में लगे हुए दोषों की शुद्धि यदि चार मास में भी नहीं कर पाते हैं तो उनका श्रावकपना सुरक्षित रहने में भी बाधा आ सकती है।

वास्तव में तो प्रत्याख्यानावरण कषाय चतुष्क में से किसी एक कषाय का उदय तो लगातार अन्तर्मुहूर्त्त से अधिक नहीं रहता, किन्तु एक-एक कषाय के बदलते हुए प्रत्याख्यानावरण कषाय का उदय देशविरति श्रावक गुणस्थान में जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त से लेकर उत्कृष्ट देशोन क्रोड़ पूर्व तक लगातार रह सकता है।

—रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राजस्थान)

## गुण पूजा ही श्रेयस्कर है

श्री मदनसिंह कूमट

संसार की व्यवस्थाएँ समय-समय पर कई प्रकार से चलती रही हैं। कभी व्यक्ति प्रमुख होकर उसके संकेतों से व्यवस्था का सञ्चालन हुआ तो कभी गुणों के आधार पर व्यक्ति का चयन होकर उसके संकेतों से व्यवस्था चली है। अधिकतर प्राचीन व्यवस्थाओं का अवलोकन करें तो भारत में राजतन्त्र की व्यवस्था हावी रही है। उस काल में राजा नामक नायक ही सर्वाधिकार प्राप्त व्यक्ति होता था। इस तन्त्र में किसी के चयन की कोई व्यवस्था नहीं थी, शक्तिशाली व्यक्ति ही राजतन्त्र का सञ्चालक होता था। उसकी पीढ़ियाँ ही राज्य का सञ्चालन करती थी। गुण-अवगुण की दृष्टि से किसी को हटाया जाये, ऐसी व्यवस्था राजतन्त्र में नहीं थी। भारतीय व्यवस्था में पुरुष प्रधान स्थिति होने के कारण राजा का बेटा ही राजा हुआ करता था। इंग्लैण्ड में सम्राट् की प्रथम सन्तान पुरुष हो या स्त्री, साम्राज्य की उत्तराधिकारी होती थी, लेकिन ऐसी व्यवस्था भारतवर्ष में नहीं थी, क्योंकि यहाँ पुत्र (पुरुष वर्ग) ही साम्राज्य का उत्तराधिकारी होता था। उसी के संकेतों पर ही कभी-कभी धर्म व्यवस्थाएँ भी प्रभावित होती थी। धर्म व्यवस्थाओं में भी कहीं व्यक्ति पूजा हावी रही तो कहीं गुण पूजा।

व्यक्ति पूजा में यह खतरा है कि न जाने व्यक्ति की मति कब विकृत हो जाये और वह कब ऐसा निर्णय ले ले, जो समाज एवं राष्ट्र के लिए अहितकर सिद्ध हो। इतिहास के पन्नों को पलटें तो कई ऐसे उदाहरण मिल जायेंगे, जिनके कारण समाज एवं राष्ट्र को व्यक्ति पूजा के कारण हानि उठानी पड़ी। कुछ काल पूर्व का ही इतिहास देखे तो हिटलर की महत्त्वाकांक्षा और तानाशाही ने जर्मन राष्ट्र को बर्बादी के कगार पर पहुँचा

दिया। नेपोलियन की महत्त्वाकांक्षा ने इटली राष्ट्र को हानि पहुँचाई।

यह आवश्यक नहीं है कि राज्याधिकारी गुणी ही हो। यदि राज्याधिकारी गुणी होगा तो वह अपनी प्रजा के हित में सोचेगा। उसकी लालसा साम्राज्य बढ़ाने और अपने को शक्तिशाली सिद्ध करने की नहीं होगी, वरन् अपने पास उपलब्ध संसाधनों से जन हितार्थ कार्य करने की भावना रहेगी। विकास की दिशा में उसका चिन्तन होगा।

सम्राट् अशोक के इतिहास को देखें तो कलिंग युद्ध के पश्चात् उसका जीवन सम्पूर्णतः अहिंसात्मक हो गया। प्रेम, मैत्री भावना से मानव जीवन के विकास के लिए जो उसने कार्य किये, वे सभी इतिहास के पन्नों पर उसकी गुणगाथा का ही बखान करते हैं। गुणी व्यक्ति निज स्वार्थ को प्राथमिकता न देकर जन हित के लिए चिन्तन करता है। वह सबके हित में ही अपना हित सोचता है।

जैनदर्शन का अवलोकन करें तो वहाँ गुण पूजा का ही महत्त्व रहा है। जो गुणी रहा है वही सदा वन्दनीय रहा है। व्यक्ति विशेष के नामोल्लेख भी हुए हैं, तो वे उनके गुणों के कारण ही हुए हैं। उदाहरण के लिए जैनदर्शन के सर्वश्रेष्ठ सर्वमान्य महामन्त्र के पदों को ही लें तो इसमें पायेंगे कि वहाँ किसी व्यक्ति को लेकर वन्दन की स्थिति नहीं है। प्रथम पद नमो अरिहंताणं अर्थात् अरिहन्त को नमन। अरिहन्त किसी व्यक्ति का नाम नहीं है, वरन् राग-द्वेष के विजेता अरिहन्त हैं। साम्यभाव में रहकर जो लोगों का मार्गदर्शन करने की क्षमता रखता है, वही अरिहन्त है। इस पद में किसी व्यक्ति का नाम नहीं है, वरन् गुणों के धारक को वन्दन

किया गया है। दूसरे पद की भी यही स्थिति है। यहाँ भी जिस व्यक्ति ने अपने कर्म क्षय कर शुद्ध स्वरूप को प्राप्त कर परमात्मा पद पा लिया है वही सिद्ध है और नमनीय है। यहाँ किसी व्यक्ति विशेष का नाम लेकर वन्दना नहीं की गई है। तीसरे, चौथे और पाँचवें पद में भी यही स्थिति है कि जो भी गुणों का धारक है वही पद का धारक हो सकता है। यदि व्यक्ति साधना के क्षेत्र में खरा नहीं है, तो वह साधु भी नहीं कहला सकता। आचार्य, उपाध्याय एवं सामान्य साधु में आगम में उल्लिखित गुण होंगे तभी जन-गण के लिए वे मान्य होंगे, वन्दनीय होंगे और तभी वे उस पद के धारक बन सकेंगे।

महावीर अरिहन्त कब कहलाये, दीक्षा के पश्चात् जब साढ़े बारह वर्ष की कठिन साधना की और अनेक परीषहों को समभाव से सहन कर केवलज्ञान को प्राप्त किया। फिर केवलज्ञान के माध्यम से मनुष्य को संसार से उभरने का मार्ग प्रस्तुत किया, तब वह अरिहन्त पद को प्राप्त कर तीर्थंकर कहलाये। गुणी होने के बाद वे पूजित

हुए। जैन दर्शन गुण पूजक है, व्यक्ति पूजक नहीं।

भारत में राजतन्त्र व्यवस्था को समाप्त कर जनतन्त्र की व्यवस्था को अपनाने के पीछे भी यही कारण रहा है। एक तन्त्र अर्थात् व्यक्ति तन्त्र में व्यक्ति पूजा को महत्त्व मिला और उससे हानियाँ देखने को मिली। इसलिए जनतन्त्र का प्रादुर्भाव हुआ। गुणी को उचित सम्मान मिले, ऐसी व्यवस्था सभी के लिए लाभ प्रदायी बन सकें, इसलिए जनतन्त्र बना।

शारीरिक बल आवश्यक होता है, पर गुणों के अभाव में उसमें दुरुपयोग की सम्भावना बनी रहती है, अन्याय को बढ़ावा मिल सकता है। बल से कमजोर की सहायता हो तो बल का होना स्तुत्य है, परन्तु बल का कमजोर के शोषण के लिए उपयोग समाज को हानि पहुँचाता है, वहाँ न्याय व्यवस्था चिन्तनीय बन जाती है। मनुष्य जीवन में सुख-शान्ति बनी रहे और विकास की प्रक्रिया निरन्तर बनी रहे तो गुण पूजा को अपनाना ही उचित होगा।

## साधक की अभिलाषा

श्री जितेन्द्र चौरड़िया 'प्रेक्षक'

जिनशासन रणांगन में रखकर कदम,  
करने को जंग कर्मों से आओ चलें।  
कर्म बलवान कितने भी होंवें तो क्या,  
आत्म-शक्ति पे न जोर इनका चले॥1॥

राग और द्वेष कर्मों के दो बीज हैं,  
इनके चंगुल में फँसना न हर्गिज है।  
भाव मध्यस्थता के बनाये रखें,  
बचने की कर्म-बन्ध से, ये तरकीब है॥2॥

कितने जन्म और मरण कर लिये आज तक,  
भटके दण्डक और गतियों में भी अनगिनत।  
क्या कभी हमने सोचा ये क्यों हो रहा ?  
क्योंकि दृष्टि न सम्यक् हुई आज तक॥3॥

सबसे घातक हमारे लिए अज्ञान है,  
जिसके कारण हम स्व पर से अनजान हैं।  
ज्ञान सम्यक् जो हो जाए हममें प्रकट,  
तब ही अन्तर में लगता भेद-विज्ञान है॥4॥

द्वार आस्रव के संवर से बन्द हो अगर,  
फिर है आत्मा तुझको काहे का डर।  
दावानल निर्जरा का दहकता रहे,  
तय होता रहे मोक्ष का ये सफ़र॥5॥

जितने राजा हुए थे अतीतकाल में,  
सब समाते गए काल के गाल में।  
आज अस्तित्व केवल उन्हीं का बचा,  
रखा 'प्रेक्षक' जिन्होंने धर्म सम्भाल के॥6॥

-स्री-16/1, कृष्ण-कुंज, हल्दे रोड़, भीलवाड़ा-311

001 (राज.)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं



## नूतन साहित्य



श्री गौतमचन्द जैन

**नमस्कार-मीमांसा (अनुप्रेक्षा किरण-4)**-गुजराती लेखक-श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य। हिन्दी-सम्पादक-श्री विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म., **प्रकाशक**-दिव्य सन्देश प्रकाशन, द्वारा सुरेन्द्र जैन, ऑफिस नं. 304, तीसरी मञ्जिल, बे.व्यू. बिल्डिंग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम. बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबा देवी, मुम्बई-400002, फोन 8484848451 (केवल व्हाट्स एप्प), **पृष्ठ**-162 + 10 = 172, **संस्करण**-सम्बत् 2079, **मूल्य**-150 रुपये। **अव्य-प्राप्ति स्थान**-(1) चेतन हसमुखलालजी मेहता, भायन्दर-9867058940, (2) प्रवीण गुरुजी, बेंगलोर-9036810930, (3) राहुल वैद, दिल्ली-9810353108,

प्रस्तुत पुस्तक 'नमस्कार-मीमांसा' में नमस्कार महामन्त्र का माहात्म्य बतलाते हुए नमस्कार की साधना, उसकी सिद्धि का उपाय, नमस्कार से पाप नाश एवं नमस्कार और सामायिक, नमस्कार में अष्टाङ्ग योग एवं नवतत्त्व का समावेश आदि विविध विषयों का समावेश किया गया है। पुस्तक में लेखक ने गहन चिन्तन एवं अनुभूति के आधार पर नमस्कार मन्त्र से सम्बन्धित 132 सारगर्भित लेख सुगम शैली में प्रस्तुत किये हैं। लेखों में यथास्थान आवश्यकतानुसार महत्त्वपूर्ण वाक्यों को लाल स्याही से रेखांकित किया गया है। पाठों के अन्त में हिन्दी के सुभाषित भी कोष्ठक में दिये गये हैं, जो प्रेरणादायी हैं। सभी मोक्षार्थी पाठकों एवं साधकों के लिए पुस्तक पठनीय, चिन्तनीय एवं आचरणीय है।

**चतुर्थस्तुतिनिर्णय एवं ईसाइमत समीक्षा**-ग्रन्थकार-आचार्य श्रीमद् विजयानन्दसूरीश्वरजी महाराज (प्रसिद्ध नाम पूज्य आत्मारामजी महाराज)। सम्पादक-जितेन्द्र बी. शाह, **प्रकाशक**-भोगीलाल लहेरचन्द इन्स्टिट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, विजय वल्लभ स्मारक जैन मन्दिर

कॉम्प्लेक्स, जी.टी. करनाल रोड़, अलीपुर, दिल्ली-110036, फोन 011-27202065, **पृष्ठ**-205 + 37 = 242, **संस्करण**-2021, **मूल्य**-4,000 रुपये (कुल आठ वोल्यूम का सेट)।

प्रतिक्रमण एवं देववन्दन में श्वेताम्बर मूर्तिपूजक तपागच्छ आदि में चार स्तुति बोलने का विधान है। परन्तु आचार्यश्री राजेन्द्रसूरि एवं मुनि धनविजयजी ने चार थुई के स्थान पर तीन थुई का प्रवर्तन किया था। वे तीन थुई (स्तुति) को ही शास्त्र सम्मत सिद्ध करने का प्रयास करते थे। अतः श्री आत्मारामजी ने अनेक पूर्वाचार्यों के प्रमाण देकर पहले भाग में चार थुई के मत की सत्यता की स्थापना की है। प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रथम भाग के प्रकाशन के पश्चात् अनेक विरोधियों ने इसके विरोध में लिखा था इसलिये दूसरे भाग में आचार्यश्री आत्मारामजी ने उन सब आक्षेपों का निराकरण प्रस्तुत किया है। पुस्तक का प्रश्नोत्तर शैली में लेखन किया गया है।

पुस्तक के अंश 'ईसाइमत समीक्षा' में आचार्यश्री आत्मारामजी महाराज ने ईसाइमत के शास्त्रों का अध्ययन कर उनकी समालोचनात्मक समीक्षा की है। उस समय एक ईसाई ने गुजराती भाषा में जैनमत-समीक्षा नामक एक पुस्तक लिखी थी, जिसमें जैनधर्म और समाज के विषय में अनेक मिथ्या आक्षेप लगाये थे। उनके उत्तर के रूप में यह ग्रन्थ आचार्य श्री आत्मारामजी ने लिखा था। पुस्तक में आचार्यश्री ने ईसाइमत की प्रचलित व्याख्या करते हुए उसकी वास्तविकता जनता के समक्ष रखी और जैनधर्म के सिद्धान्तों एवं मान्यताओं से भी आम जनता को अवगत कराया तथा जैनधर्म एवं समाज पर लगाये गये आरोपों का खण्डन किया। इससे आचार्यश्री के जैनधर्म के साथ-साथ ईसाइमत के शास्त्रों के गम्भीर ज्ञान का भी पता चलता है। पुस्तक में ईसाइमत की पुस्तकों का स्पष्ट उल्लेख कर परीक्षण किया गया है। अन्त में आठ कर्मों के स्वरूप का विवेचन भी किया गया है।

-पूर्व संयुक्त ख़ाद्य आयुक्त, 70, 'जयणा', विश्वकर्मा नगर-द्वितीय, महाराष्ट्र फॉर्म, जयपुर

## समाचार विविधा

### पूज्य आचार्य भगवन्त एवं भावी आचार्यश्री की सन्निधि में पावटा, जोधपुर में साधना-आराधना का ठाट और चातुर्मास हेतु शक्तिनगर की ओर विहार एवं पदार्पण

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, प्रवचन प्रभाकर, आगमज्ञ, जिनशासन गौरव, आचार्य भगवन्त श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा सामायिक-स्वाध्याय भवन, गली नम्बर 6, शक्तिनगर एवं व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा-7, कांकरिया स्थानक, पावटा, जोधपुर में सुखे-समाधौ विराजित हैं।

**विविध अनुष्ठान-**(1) 29 अप्रैल, 2023 वैशाख शुक्ला नवमी को शान्त-दान्त-गम्भीर, आत्मार्थी, प्रबल पुरुषार्थी उपाध्यायप्रवर श्रद्धेय श्री मानचन्द्रजी म.सा. का 33वाँ उपाध्याय पद दिवस तप-त्याग, धर्म-ध्यानपूर्वक पावटा स्थानक में मनाया गया तथा वैशाख शुक्ला त्रयोदशी 3 मई, 2023 को 61वाँ दीक्षा-दिवस मनाया गया। उपाध्यायप्रवर के रत्नत्रय की साधना-आराधना एवं जीवन से जुड़े संस्मरणों एवं प्रेरणाओं का उल्लेख करते हुए प्रेरणा प्रदान की गई कि उनके गुणों में से एक गुण भी ग्रहण किया जाये तो जीवन सार्थक हो सकता है। प्रवचन सभा में परम श्रद्धेय भावी आचार्य श्री सहित सन्त मुनिराजों ने श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर के गुण स्मरण के साथ प्रेरणास्पद भाव फरमाये।

(2) 4 मई, 2023 वैशाख शुक्ला चतुर्दशी गुरुवार को पावटा स्थानक में परमश्रद्धेय भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. का 49वाँ दीक्षा-दिवस तप-त्याग, धर्मध्यानपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर श्रावक-श्राविकाओं द्वारा तीन-तीन सामायिक, एकाशन, आयम्बिल, उपवास एवं रात्रिकालीन संवर-पौषध की आराधना की गई। भावी आचार्य प्रवर के 49वें दीक्षा दिवस पर प्रवचन में श्रद्धेय श्री दीपेशमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि भावी आचार्य प्रवर ने संघ को परिवार की तरह पल्लवित-पुष्पित किया है। जैसे परिवार का मुखिया बड़ों को आदर एवं छोटों को प्रेम देता है, छोटी-छोटी बातों को पचाने की क्षमता रखता है और समय देने वाला होता है। उसी प्रकार भावी आचार्यप्रवर भी संघ में मुखिया की इन विशेषताओं को आत्मसात् किये हुए हैं। श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि भावी आचार्यप्रवर ने तीर्थकरों की आज्ञा का पालन कर तथा गुरुओं की सेवा करके आचार्य हस्ती एवं आचार्य हीरा इन दो श्रेष्ठ आत्माओं को प्रसन्न करने हेतु अपना जीवन समर्पित किया। सदैव प्रभु एवं गुरु की आज्ञा में क्रदम बढ़ाये। उत्तराध्ययनसूत्र के प्रथम 'विनय अध्ययन' को पूर्ण रूपेण भावी आचार्यश्री ने अपने जीवन में घटित कर रखा है। महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. ने भावी आचार्य प्रवर की अनेक विशेषताओं के आधार पर उनका गुणगान किया। भावी आचार्य प्रवर के Perfect, Neatness, Caring, Fast, Sharing, Punctual, Responsible, Peaceful गुणों का वर्णन उनके जीवन प्रसंगों के आधार पर किया। श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा. ने भावी आचार्य प्रवर के जीवन के 3 सिद्धान्तों का वर्णन किया-1. अयोगी बनने से पहले सहयोगी बनो, 2. किसी भी कार्य को छोटा मत समझो, पर अपने आप को कभी बड़ा मत समझो, 3. कोई भी कार्य फल की कामना से मत करो, अपितु कर्तव्य भावना से करो। श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. ने भावी

आचार्यप्रवर के जीवन में समयज्ञता के गुण को परिभाषित करते हुए फरमाया कि भावी आचार्यप्रवर आज जिस समय पर जिस कार्य में संलग्न हैं, आज से अनेक दिवस पहले या बाद में भी उस समय पर उसी कार्य में संलग्न मिलते हैं। वे 'काले कालं समायरे' उक्ति के जीवन्त उदाहरण हैं। प्रवचन सभा के अन्त में **श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.** ने संयम जीवन की महत्ता बताते हुए भावी आचार्यप्रवर के निर्मल संयम-पालन एवं उनके सम्यक् पुरुषार्थ का वर्णन किया। भावी आचार्यप्रवर के विशिष्ट व्यक्तित्व के विषय में सन्तों द्वारा प्रभावी वक्तव्य दिया गया, लेकिन भावी आचार्यप्रवर निःस्पृही साधक की तरह अपने गुणगान सुनने हेतु प्रवचन सभा में ही नहीं पधारे।

(3) 10 मई, 2023 को परमाराध्य **आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 33वाँ आचार्य पदारोहण दिवस** ज्येष्ठ कृष्णा 5 बुधवार को तप-त्याग, धर्म-ध्यानपूर्वक मनाया गया। इस उपलक्ष्य में शिक्षण बोर्ड द्वारा आयोजित खुली पुस्तक प्रतियोगिता के 'फॉर्म भरो और भराओ अभियान' का आह्वान किया गया। यह परीक्षा 28 मई, 2023 को आयोजित हुई। प्रवचन में तीन-तीन सामायिक की गई। 28 मई की परीक्षा श्राविका मण्डल एवं युवक परिषद् के तत्वावधान में सम्पन्न हुई। प्रवचन सभा में आराध्य आचार्य भगवन्त के गुणगान करते हुए **श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा.** ने आचार्य भगवन्त की चार विशेषताओं का वर्णन किया- 1. परिस्थितियों से प्रभावित नहीं होना, 2. निर्णय लेने की क्षमता एवं लिये हुए निर्णय पर अडिग रहना, 3. आत्मीयता और अनुशासन, 4. सम्यक् क्रियाकलाप। तत्पश्चात् **श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा.** ने आचार्य भगवन्त पर रचित संस्कृत काव्य के द्वारा आचार्य भगवन्त को धर्मरूपी धुरा को धारण करने वाले धुरीण, धर्मयोग अर्थात् सेवा, तपस्या एवं स्वाध्याय प्रियता, उनकी निष्पक्षता, उग्र विहार आदि गुणों का गुणगान किया। **श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.** ने आचार्य भगवन्त की अष्ट सम्पदाओं में से शरीर सम्पदा का वर्णन करते हुए उनकी अनेक विशेषताओं का गुणगान किया। लघुता से प्रभुता प्राप्त होती है, इस सूक्ति को आचार्य भगवन्त के जीवन-प्रसंगों से पुष्ट किया। प्रवचन सभा के अन्त में **भावी आचार्यप्रवर** ने फरमाया- "आज त्रिवेणी का संगम है- आचार्य श्री विनयचन्द्रजी म.सा. एवं वर्तमान आराध्य प्रवर आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का आचार्य पदारोहण दिवस है। साथ ही तीसरा प्रसंग है कि आचार्यप्रवर को जोधपुर पधारे आज पूरा एक वर्ष हो गया है।" 32 योग संग्रह में से 'पापों का प्रायश्चित्त लेने का संग्रह करें', इस बोल का विस्तृत विवेचन करते हुए भावी आचार्यश्री ने फरमाया- "आचार्य भगवन्त की पापभीरुता एवं प्रतिसेवना के प्रायश्चित्त ग्रहण करने की तत्परता देखने योग्य होती है। वे स्वाध्याय के माध्यम से शीघ्र ही ग्रहण किये गए प्रायश्चित्त को पार लगा देते हैं। आचार्य भगवन्त ने क्रियोद्धार के 21 बोलों की मर्यादा का दृढ़तापूर्वक पालना करके इस 5वें आरे में साधना की मिसाल कायम की है।" इस प्रकार महापुरुषों द्वारा आचार्य भगवन्त के विस्तृत रूप से गुणों का गुणगान किया गया।

**अन्य सम्प्रदाय के सन्त सतीवृन्द का दर्शनार्थ पावटा आगमन**-श्रमणसंघीय प्रवर्तक श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा. एवं श्रमणसंघीय महासती श्री यशकँवरजी म.सा. की सुशिष्या श्री मैनाकँवरजी म.सा. आदि ठाणा 11 मई को, श्रमण संघीय श्रद्धेय श्री विनयमुनिजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री साहिलमुनिजी के साथ श्रद्धेय श्री अर्पणमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री श्रुतमुनिजी म.सा. 12 मई को पूज्य गुरुदेव के सुख-साता पृच्छा हेतु पावटा पधारे।

बच्चों की दैनिक पाठशाला प्रतिदिन चल रही है तथा श्राविका मण्डल द्वारा प्रत्येक पूर्णिमा को गुरु भक्ति एवं दर्शन-वन्दन का क्रम अनवरत परमाराध्य आचार्य भगवन्त की सेवा में चल रहा है।

**युवक परिषद् द्वारा-ग्रीष्म कालीन धार्मिक शिक्षण एवं संस्कार शिविर**-युवक परिषद् द्वारा आयोजित



ग्रीष्मकालीन शिविर पावटा सहित सभी उपनगरों से आने वाले बालक-बालिकाओं के लिए 16 मई से 4 जून तक चल रहा है। शिविरार्थियों को आचार्य भगवन्त एवं भावी आचार्य श्री सहित चारित्रात्माओं के दर्शन-वन्दन एवं मांगलिक श्रवण हेतु समय-समय पर अवसर प्रदान किया जा रहा है। इनमें 360 शिविरार्थी धार्मिक ज्ञानार्जन कर रहे हैं एवं छोटे-छोटे बालक-बालिकाएँ निकटवर्ती 14 केन्द्रों पर जाकर लगभग 450 की संख्या में धार्मिक ज्ञानार्जन कर रहे हैं।

पावटा स्थानक में प्रत्येक रविवार को प्रातःकाल प्रवचन से पूर्व एक घण्टे 7:30 से 8:30 बजे की रविवारीय कक्षाओं में विविध विषयों पर श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा. द्वारा प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक ढंग से तत्त्वों को सरल, सुगम बोधगम्य भाषा में समझाया गया एवं धर्मोन्मुखी प्रेरणाएँ की गई।

पावटा में प्रातःकालीन प्रार्थना श्रद्धेय श्री दीपेशमुनिजी म.सा., प्रवचन श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी एवं परम श्रद्धेय भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. फरमा रहे थे।

**व्याख्यात्री महासती श्री दर्शनलताजी म.सा.** आदि ठाणा-3 का आचार्य भगवन्त के सान्निध्य में पावटा पदार्पण हुआ एवं दर्शन-वन्दन का लाभ प्राप्त करके उन्होंने 20 मई को मार्गदर्शन प्राप्त किया और वे अपने चातुर्मास क्षेत्र की ओर 25 मई को मंगल पाठ श्रवण कर विहार कर गये।

**पावटा से गुरुदेव का विहार**-पावटा स्थानक से 21 मई को परमाराध्य आचार्य भगवन्त, भावी आचार्यश्री सहित ठाणा-6 से पादविहार कर विद्याश्रम विद्यालय में विराजे, 22 मई को चोरडिया भवन एवं बाफना भवन में पर्दापण कर विराजे तथा 23-24 मई को कांकरिया स्थानक पावटा सी. रोड़ में विराजे। 23 मई को **व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा.** आदि ठाणा-7 दक्षिण भारत से उग्र विहार करके गुरुचरणों में पधारे। 25 मई को प्रातःकाल लगभग 6:30 बजे सामायिक-स्वाध्याय भवन शक्तिनगर गली न. 6 में पावन पर्दापण हुआ।

विहार एवं शक्तिनगर स्थानक में प्रवेश के समय जोधपुर के सभी उपनगरों से श्रद्धालुओं की सहभागिता श्रद्धा, भक्तिपूर्वक धर्मोल्लासमयी जयघोषों से गुंजायमान हो उठी। प्रवेश के साथ ही धर्मसभा में सभी ने सश्रद्धा वन्दन-नमन कर स्थान ग्रहण किया। अरिहन्त, सिद्ध स्तुति के साथ सभी को धर्म प्रेरणा करके मंगल पाठ सुनाया गया। पावटा, शक्तिनगर सहित सभी जगह से श्रद्धालुओं की विहारसेवा सराहनीय रही।

चिकित्सा आदि सेवा में राष्ट्रीय महामन्त्री श्री धनपतजी सेठिया, चिकित्सा समिति के श्री मनमोहनजी कर्णावट एवं जोधपुर संघाध्यक्ष श्री सुभाषजी गुन्देचा चहुँओर के सभी संघाड़ों में सन्त-सतीवृन्द के चिकित्सा स्वास्थ्य आदि सहित सभी सेवाओं में सतत गतिशील हैं।

राष्ट्रीय पदाधिकारीगण सहित स्थानीय श्रावक संघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद् सतत गुरुचरणों में दर्शन-वन्दन सहित मार्गदर्शन पाकर धर्मश्रद्धा, गुरुभक्ति एवं कर्तव्य बोधपूर्वक अपने-अपने दायित्वों का निर्वहन कर रहे हैं।

पावटा में जोधपुर संघ की रीति-नीति अनुसार सभी व्यवस्थाएँ, आवास-निवास, भोजन, सुव्यवस्थित सतत रही एवं अब शक्तिनगर में उत्साह-उमंग से सभी व्यवस्थाएँ उत्तरोत्तर बढ़-चढ़कर गतिशील हैं। पावटा एवं शक्तिनगर के संयोजकों की पूरी टीम की सेवाएँ सराहनीय हैं।

-गिररज जैन

## रत्नसंघ के सन्त-सतियों के चातुर्मास

(विक्रम सम्वत् 2080, ईस्वी सन् 2023)

जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्त पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी परमश्रद्धेय भावी आचार्यप्रवर श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने 27 मार्च 2023, 30 मार्च 2023 तथा 23 अप्रैल 2023 को जोधपुर में वि.सं. 2080 सन् 2023 हेतु साधु-मर्यादा के समस्त आगारों के साथ 23 चातुर्मास स्वीकृत किए थे। इसी कड़ी में दिनांक 25 मई 2023 को भी चातुर्मास स्वीकृत किये तथा पूर्व घोषित चातुर्मासों में स्थान की घोषणा की है, जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

1. **शक्तिनगर, जोधपुर**- जिनशासन गौरव परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा., भावी आचार्य, महान् अध्यवसायी परम श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा  
सम्पर्क सूत्र- 1. श्री सुभाषजी गुन्देचा, 9314700972, 2. श्री नवरतनजी गिडिया, 9414100759
2. **बिजयनगर, अजमेर**- मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा  
सम्पर्क सूत्र-1. श्री प्रेमचंदजी बोहरा, 9414008335 2. श्री प्रकाशचंदजी बडोला, 9214922300
3. **खेरली (राज.)**- सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा  
सम्पर्क सूत्र- 1. श्री मुकेशचंदजी जैन, 9414321710, 2. श्री प्रकाशचंदजी जैन, 8058986363
4. **शिरपुर (महा.)**- तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा  
सम्पर्क सूत्र- 1. श्री सुनीलजी बाफना, 9423493871, 2. श्री नवनीतजी राखेचा, 7588734421
5. **नागौर(राज.)**-श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा  
सम्पर्क सूत्र- 1. श्री अमीचन्दजी सुराणा, 9414289600, 2. श्री मनोजजी कांकरिया, 8118850814
6. **प्रतापनगर-जयपुर(राज.)**- साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा  
सम्पर्क सूत्र- 1. श्री प्रेमचंदजी दफ्तरी, 9414689575, 2. श्री ऋषभ कुमारजी जैन, 9982049866
7. **अजमेर (राज.) सकारण**- विदुषी महासती श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. आदि ठाणा  
सम्पर्क सूत्र- 1. श्री अनिलजी दुधेडिया, 9829073250 2. श्री हेमन्तजी नाहर, 9414258920
8. **जामोला(राज.)**- व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकँवरजी म.सा. आदि ठाणा  
सम्पर्क सूत्र- 1. श्री अशोकजी बोहरा, 9928028050, 2. श्री सुनीलजी बम्ब, 9928239795
9. **जंगमपुरा-इन्दौर(म.प्र.)**- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा  
सम्पर्क सूत्र- 1. श्री तेजमलजी जैन, 9893669515, 2. श्री विनोद कुमारजी जैन, 8435153308
10. **पुराना किशनगढ़ शहर(राज.)**- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा. आदि ठाणा  
सम्पर्क सूत्र- 1. श्री विनयचंदजी झामड, 8290475252, 2. श्री शोभागसिंहजी भण्डारी, 9214669308
11. **पावटा, जोधपुर (राज.)**- व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा  
सम्पर्क सूत्र- 1. श्री सुभाषजी गुन्देचा, 9314700972, 2. श्री नवरतनजी गिडिया, 9414100759
12. **काचीगुड़ा-हैदराबाद (तेलंगाना)**- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा  
सम्पर्क सूत्र- 1. श्री गौतमचंदजी दक, 9347373734, 2. श्री सज्जनराजजी गाँधी, 9396557077

13. नेहरु पार्क, जोधपुर (राज.)- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा  
सम्पर्क सूत्र- 1. श्री सुभाषजी गुन्देचा, 9314700972, 2. श्री नवरतनजी गिडिया, 9414100759
14. मेड़ता सिटी(राज.)- व्याख्यात्री महासती श्री दर्शनलताजी म.सा. आदि ठाणा  
सम्पर्क सूत्र- 1. श्री जबरचन्दजी चोरडिया, 2. श्री हस्तीमलजी डोसी, 9413368997
15. शिरपुर (महा.)- व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा  
सम्पर्क सूत्र- 1. श्री सुनीलजी बाफना, 9423493871, 2. श्री नवनीतजी राखेचा, 7588734421
16. भद्रावती (कर्ना.)- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा  
सम्पर्क सूत्र- 1. श्री दिलीपजी मेहता, 7019390051, 2. श्री बाबूलालजी लुंकड़, 7019580403
17. थांवला-अजमेर (राज.)- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा  
सम्पर्क सूत्र- 1. श्री शांतिलालजी डुंगरवाल, 9460495521, 2. श्री शोभागमलजी सोजतिया, 9460953783
18. मलकाजगिरी-हैदराबाद(तेलंगाना)- व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा  
सम्पर्क सूत्र- 1. श्री अशोकजी लुणिया, 9849857250 2. श्री अमोलजी मुणोत, 9849474140
19. नदबई (राज.)- व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा  
सम्पर्क सूत्र- 1. श्री प्रेमचंदजी जैन, 9413834870, 2. श्री पदमचंदजी जैन, 9887469215
20. कांकरिया स्थानक-जोधपुर (राज.)- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा  
सम्पर्क सूत्र- 1. श्री सुभाषजी गुन्देचा, 9314700972, 2. श्री नवरतनजी गिडिया, 9414100759
21. रामपुरा-कोटा (राज.)- व्याख्यात्री महासती श्री पदमप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा  
सम्पर्क सूत्र- 1. श्री पंकजजी मेहता, 9414187814, 2. बुद्धिप्रकाशजी जैन, 9414177139
22. शास्त्रीनगर-आकोला (महा.)- व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा  
सम्पर्क सूत्र- 1. श्री धर्मीचंदजी चौधरी, 8605287990, 2. श्री रमाकांतजी, 9421744516
23. पाली (राज.)- व्याख्यात्री महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा  
सम्पर्क सूत्र- 1. श्री कांतिलालजी लुंकड़, 9414122757, 2. श्री रजनीशजी कर्णावट, 9414120745
24. बजरिया (राज.)- व्याख्यात्री महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा  
सम्पर्क सूत्र- 1. श्री मुकेशजी जैन-पानवाले, 9414204721, 2. श्री पदमचंदजी गोटेवाला, 9414030572
25. प्रतापगढ़ (राज.)- व्याख्यात्री महासती श्री सरोजश्रीजी म.सा. आदि ठाणा  
सम्पर्क सूत्र- 1. श्री अम्बालालजी चंडालिया, 9929278162, 2. श्री यशवंतजी भटेवडा, 9460712225
- नोट:- विस्तृत चातुर्मास सूची जिनवाणी के आगामी अंक में प्रकाशित की जाएगी।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

### सन्त-सती मण्डल का विचरण-विहार

पाली- मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 ने पालासनी में अपनी प्रभावी प्रेरणा से विशेषकर जैनेतर लोगों को व्यसन मुक्ति के संकल्प करवा कर इस प्रवास को स्थानीय लोगों के लिए स्मरणीय बना दिया। परिवार के प्रमुख पुरुषों द्वारा अफीम आदि के त्याग के संकल्प से पूरा परिवार हर्षान्वित होकर स्वयं को उपकृत मानने लगा। 28 अप्रैल को गुरु हस्ती के पावन पुण्य स्मृति-दिवस पर स्थानक में सुबह से ही विशेष रौनक

रही। अपनी अपनी क्षमता के अनुसार सभी ने आराधना, साधना की। जैनैतर लोगों ने भी दान-पुण्य इत्यादि सत्कर्मों से भक्ति का अर्घ्य चढ़ाया और अपनी-अपनी समझ के अनुसार नियम लिए। दूसरी ओर जैन लोगों ने एकाशन व्रत और 5-5 सामायिक करके विशिष्ट गुरु-भक्ति का परिचय दिया। प्रवचन में पहले श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा. ने गुरु हस्ती के जीवन और विशेषताओं का संक्षिप्त परिचय दिया। फिर श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने जीवन में गुरु तत्त्व क्यों जरूरी है, इसकी विशेष चर्चा की। उन्होंने फरमाया कि जीवन-निर्माण में 2 ही व्यक्ति आदर्श होते हैं- पहले माता-पिता और दूसरे गुरु। गुरु के गौरव को महिमामण्डित करते हुए उन्होंने फरमाया कि गुरु हस्ती स्वयं एक आदर्श गुरु थे। वे गुरु संस्कृति की पावन परम्परा के उत्कृष्ट वाहक थे। शिष्य के जीवन-निर्माण में गुरु की क्या भूमिका होती है, यह पढ़ा तो बहुत था, लेकिन गुरु हस्ती के सान्निध्य में इसका प्रयोगात्मक रूप नज़र आया। उन्होंने हमें जो प्रदान किया उसको किञ्चित्मात्र भी यदि हम अपने जीवन में यथावत् रख पाए, तो निश्चय ही हम आराधक बन सकते हैं।

पुण्य स्मृति-दिवस के अगले दिन सन्त त्रय वहाँ से विहार करके मध्यवर्ती गाँवों को फरसते हुए पाली पधारे। कई वर्षों के बाद मुनिश्री के आगमन के कारण वीर दुर्गादास नगर, टैगोर नगर इत्यादि उप नगरों से लेकर सुराणा मार्केट तक में भी प्रवचन, वाचनी में उपस्थिति अनूठी थी। सभी जगह प्रवचन नित नवीन विषयों पर हुए हर पहले दिन से अगले दिन सवाई उपस्थिति रही। श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा. ने अपने प्रवचनों में महापुरुषों की गौरव गाथा और प्रेरक प्रसंगों का बखान किया और श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा. ने श्रावकों के आचार-विचार और दान के विविध आयामों को अपने प्रवचनों में स्पष्ट किया। श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने परमात्मा के वचन, संसार का रूप और आत्मा का स्वरूप इन तीन को जानना बहुत जरूरी है, इस विषय पर विस्तृत व्याख्या अपने प्रवचनों में की। कुछ प्रवचनों में 'बन्ध से सावधान, उदय में समता और सत्ता में साधना' विषय पर प्रभावशाली चर्चा हुई। उसके पश्चात् सुराणा मार्केट से विहार कर महावीर नगर पधारे जहाँ ज्ञानगच्छीय स्थानक दीप प्रज्ञा भवन में दो प्रवचन हुए। सभी सम्प्रदायों के धर्मावलम्बियों की उपस्थिति पर्युषण का आभास दे रही थी। फिर मरुधरकेसरी भवन में भी 'इस रात की सुबह नहीं' विषय पर प्रवचन रहा। मुनिश्री ने फरमाया कि जो भोगों से, प्रदर्शन से, फिजूलखर्ची से, आडंबर और बाह्य दिखावे से जुड़ता है, उसकी पुण्यवानी घटती है और घटती ही जाती है। केवल दुर्गति के अन्धे में ही उसको भटकने को मजबूर होना पड़ता है। आश्चर्य तो तब होता है कि जब पैसा पुलिस, वकील, डॉक्टर एवं प्रदर्शन के नाम पर खर्च हो, किन्तु स्वधर्मों के लिए या जरूरतमन्दों को देने को लोग तैयार नहीं हैं। प्रवचन सभा में लगभग सभी सामायिक वेश में उपस्थित थे। अनन्य गुरु-भक्तों के यहाँ श्री छगनलालजी लोढ़ा, श्री केवलचन्दजी गुलेच्छा, श्री मूलचन्दजी भंसाली, राजकुमारजी गुलेच्छा आदि सभी लोगों की भावना को ध्यान में रखकर विभिन्न क्षेत्रों को फरसकर अभी ब्यावर की तरफ बढ़ रहे हैं।

-रजनीश कर्नावट, मन्त्री

**धनारीकलाँ (जोधपुर)**-आचार्य भगवन्त गुरुदेव 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के सुशिष्य **श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा-4 जोधपुर से नागौर चातुर्मास को लक्ष्य में रखते हुए विहार कर पूर्ववर्ती ग्राम-कस्बों को धर्म के रंग में रंगने का पुरुषार्थ कर रहे हैं। **बावड़ी** में प्रभु महावीर जन्म-कल्याणक पर लगभग 25 घरों के क्षेत्र में 300 सामायिक, एकाशन, आयम्बिल, नीवी, उपवास लगभग 40 की संख्या में हुए। नवपद ओली आराधना में 2 श्राविकाओं ने पूर्ण ओली तप किया और नित्य 2 से 4 नीवी, 2 एकाशन, 1 आयम्बिल की साधना कर लोगों ने संतों के विराजने का पूर्ण लाभ लिया। प्रार्थना, प्रवचन, वाचनी तथा कक्षा में सभी लोग उपस्थिति दर्ज करने का लक्ष्य रखते। बावड़ी से डाँवरा, चाँदरख, नाँदिया, लवेरा, सोयला तथा मँगैरा आदि क्षेत्रों को पावन करते हुए 5 मई, 2023 को धर्मनगरी धनारी पधारे। **डाँवरा** में भी 9 दिन सन्तों का

विराजना हुआ, जैन और जैनेतर ग्रामवासियों ने अच्छा लाभ लिया। एक श्राविका जी ने पूरे 9 दिन किसी न किसी तप की आराधना की। नौ दिन में लगभग 15-20 उपवास, 8-10 नीवी, 5-6 एकाशन आदि धर्माराधना हुई। सन्तों के पधारने से धनारी कलाँ में चातुर्मास जैसा वातावरण बना हुआ है। घर में हो या बाजार में, हर जगह धर्म-ध्यान एवं तप-त्याग की चर्चा बनी हुई है। हर व्यक्ति एक-दूसरे को प्रेरित कर रहे हैं। प्रार्थना, प्रवचन तथा वाचनी में प्रशंसनीय उपस्थिति हो रही है तो रात्रिकालीन चर्चा में श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. की सेवा में युवक बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं। दिन में युवतियाँ एवं श्राविकाएँ अपना विशेष ज्ञानार्जन कर रही हैं। हर घर में एक ही आवाज सुनाई देती है -चलो, म.सा. के। भीषण जेठ मास की गर्मी में भी सन्तों की विशेष प्रेरणा से सभीजन अपना पुरुषार्थ कर रहे हैं। अब तक यहाँ पर सुश्री आस्थाजी सुपुत्री श्री राकेशजी सेठिया के 11 की तपस्या, श्री अभिषेकजी सुपुत्र बी. सन्तोषजी सेठिया, श्रीमती सुनीताजी धर्मपत्नी एच. सन्तोषजी सेठिया के 8 की तपस्या, सुश्री तनुश्रीजी सुपुत्री श्री महेन्द्रजी सेठिया के 5 की तपस्या, श्रीमती नैनीदेवीजी धर्मपत्नी एच. लूणकरणजी सेठिया के 4 की तपस्या तथा 20 दिन में 18 तेले की तपस्या हुई जिनके नाम हैं-श्री जिनेन्द्र पारख, सुश्री खुशी सेठिया, श्रीमती प्रियंका सेठिया, श्रीमती रेखा वैद, श्री मोतीलाल सेठिया, श्री प्रकाशचन्द पारख, श्री दिलीप कुमार पारख, श्री सुरेन्द्र सेठिया, श्री यश संचेती (डाँवरा), श्रीमती मनीषा सेठिया, श्रीमती रेखा चोरड़िया, श्रीमती अंजू बाफना (चेन्नई), श्री जेठमल सेठिया, सुश्री साक्षी वैद, श्रीमती चंदूदेवी वैद, सुश्री कोमल पारख और श्री दीपेश पारख। अब तक एक बेला श्री अंकितजी वैद, 20 उपवास 41 एकाशन, 27 बियासन, 3 आयम्बिल तथा 21 नीवी निर्बाध सम्पन्न हो चुकी हैं। श्री जेठमलजी सेठिया ने एक साथ म.सा. के मुखारविंद से तेले के पच्चकखाण ग्रहण कर दृढ़ता का परिचय दिया है।

ज्येष्ठ कृष्ण पंचमी को आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 33 वाँ आचार्य पद दिवस तप-त्याग के साथ मनाया गया। परम श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. की विशेष प्रेरणा से युवाओं ने प्रत्येक रविवार को सामूहिक रूप से स्थानक में आकर सामायिक करने का नियम ग्रहण किया तथा प्रतिदिन आयम्बिल करने की प्रेरणा की गई। श्री मदनलालजी सेठिया, श्री अजितराजजी सेठिया और श्री जिनेन्द्रजी पारख ने रात्रिकालीन संवर की आराधना की। 25 मई को कुड़छी(नागौर) की ओर विहार हुआ, जिसमें लगभग 40 लोगों ने विहार सेवा का लाभ लिया।

-प्रकाशचन्द पारख

**अजमेर-**आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री सुशीलाकँवरजी म. सा. आदि ठाणा-8 के सान्निध्य में 4 मई, 2023 को महान् अध्यवसायी सरस व्याख्यानी, भावी आचार्यप्रवर श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा का 49वाँ दीक्षा-दिवस स्वाध्याय भवन पुष्कर रोड़, अजमेर में दोपहर में 2.30 से 3.30 बजे तक नमस्कार महामन्त्र जाप एवं गुरु-भक्ति कार्यक्रम के साथ मनाया गया। इसके साथ ही भावी आचार्यश्री के जीवन से सम्बन्धित प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें श्राविकाओं का काफी अच्छा उत्साह था।

-हेमन्त नाहर

**सरस्वती नगर, जोधपुर-** व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा-7 का पावटा से उपनगरों में विचरण करते हुए 26 अप्रैल को स्वाध्याय भवन, सरस्वती नगर में पदार्पण हुआ। महासतीजी के सान्निध्य में 28 अप्रैल को आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. का पुण्य स्मृति-दिवस, 3 मई को उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का दीक्षा-दिवस, 4 मई को भावी आचार्यप्रवर श्री महेन्द्रमुनिजी म. सा. का 49वाँ संयम-दिवस और 10 मई को आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 33वाँ आचार्य पदारोहण दिवस सामूहिक पाँच-पाँच सामायिक, एकाशन, आयम्बिल एवं उपवास के साथ तप-त्यागपूर्वक मनाया गया। महासती मण्डल ने भजन के माध्यम से महापुरुषों के गुणगान किए। व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. ने अपने उद्बोधन में

महापुरुषों के गुणों एवं उनके जीवन से जुड़े कई वृत्तान्त प्रस्तुत किए। प्रवचन में श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति सराहनीय थीं। इसी दौरान प्रत्येक रविवार को युवाओं के सामूहिक सामायिक कार्यक्रम का अवसर भी प्राप्त हुआ जिसमें महासतीजी ने सामायिक की महत्ता का गणित संख्यानुसार अच्छा विवेचन किया। इसमें कई युवाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

-पारसमल ओस्तवाल

**दिविजय नगर, जोधपुर**-पूज्य आचार्य भगवन्त श्रद्धेय श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म. सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य धर्म-ध्यान एवं साधना-आराधना का टाट लगा हुआ है। प्रत्येक रविवार को महासतीजी के पावन सान्निध्य में धार्मिक कक्षा का आयोजन किया जाता है जिसमें युवाओं को धर्म-साधना से जोड़ने की ओर प्रेरित किया जा रहा है। अच्छी संख्या में युवक उपस्थित होकर लाभ उठा रहे हैं। श्राविका मण्डल के तत्त्वावधान में 28 से 30 अप्रैल को तीन दिवसीय आस्था-अनुशास्ता शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 15 वर्ष से ऊपर की अविवाहित बालिकाओं ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

-नवरत्न गिड़िया, मन्त्री

## संघीय संस्थाओं की संयुक्त रूप से मेवाड़ एवं मध्यप्रदेश क्षेत्र में प्रचार-प्रसार यात्रा सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ के संयुक्त तत्त्वावधान में 25 से 30 अप्रैल 2023 तक ब्यावर, गुलाबपुरा, कंवलियास, भीलवाड़ा, भादसोड़ा, जामुनियाकलां, प्रतापगढ़, सैलाना, रतलाम, बदनावर, हातोद, इमलीबाजार इन्दौर, कालानीनगर इन्दौर, जानकीनगर इन्दौर, उन्हैल, नागदाजंक्शन, जावरा, कुकड़ेश्वर, कंजार्दा, सिंगोली, बेगु, पारसोली, पहुँना आदि क्षेत्रों में प्रचार-प्रसार कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रवास कार्यक्रम में अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र के सह-संयोजक श्री राजेशजी भण्डारी-जोधपुर, शिक्षण बोर्ड के मेवाड़ क्षेत्र के क्षेत्रीय संयोजक श्री कन्हैयालालजी जैन-भीलवाड़ा, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ के प्रभारी श्री सुरेशजी हींगड़-जोधपुर की महनीय सेवाएँ प्राप्त हुईं। कार्यक्रम के अन्तर्गत शिक्षण बोर्ड की 23 जुलाई, 2023 की परीक्षा के लगभग 170 फार्म भरवाये गये। 19 नये स्वाध्यायी तैयार किये गये, पर्युषण पर्व में स्वाध्यायी आमन्त्रित करने हेतु 3 क्षेत्रों की माँग प्राप्त हुई। संस्कार केन्द्र की पाठशाला शुरू करने हेतु प्रभावी प्रेरणा की गई।

-आकाश चौपड़ा, सचिव

## शिक्षण बोर्ड की 23 जुलाई की परीक्षा में भाग लेकर ज्ञान-वृद्धि कीजिए

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कक्षा 1 से 12 तक की आगामी परीक्षा 23 जुलाई 2023, रविवार को दोपहर 12:30 से 3:30 बजे तक आयोजित की जाएगी।

1. परीक्षा, ज्ञानवृद्धि का प्रमुख साधन है। क्रमबद्ध एवं सही ज्ञान ही व्यक्ति को हित-अहित की जानकारी कराता है। अतः ज्ञान बढ़ाने एवं सुसंस्कार पाने हेतु आप स्वयं भी परीक्षा दे तथा अन्य भाई-बहनों को भी परीक्षा में भाग लेने की प्रभावी प्रेरणा कर धर्मदलाली का लाभ प्राप्त करें।
2. कम से कम 10 परीक्षार्थी होने पर नया परीक्षा केन्द्र प्रारम्भ किया जा सकता है।
3. परीक्षा से सम्बन्धित आवेदन-पत्र, पुस्तकें शिक्षण बोर्ड कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं।
4. सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार एवं मेरिट में आने वालों को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।
5. परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन-पत्र भरकर जमा कराने की अन्तिम दिनांक 23 जून, 2023 है। नियत समय में आवेदन-पत्र जमा कराना अनिवार्य है।

परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिये सम्पर्क करें-अशोक बाफना-संयोजक 94442-70145, आकाश चौपड़ा-सचिव 94130-33718, धर्मचन्द जैन-रजिस्ट्रार 93515-89694 शिक्षण बोर्ड कार्यालय-सामायिक स्वाध्याय भवन, 2, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003(राज) 0291-2630490, व्हाट्स एप्प नं.7610953735 Website :jainratnaboard.com, E-mail: shikshanboardjodhpur@gmail.com

## श्री जैन रत्न युवक परिषद्, तमिलनाडु के द्वारा ग्यारह दिवसीय ग्रीष्मकालीन धार्मिक एवं नैतिक संस्कार शिविर आयोजित

श्री जैन रत्न युवक परिषद्, तमिलनाडु के द्वारा 4 मई से 14 मई तक युवक परिषद् के अखिल भारतीय स्तर पर लगने वाले शिविर के अन्तर्गत ग्यारह दिवसीय ग्रीष्मकालीन धार्मिक एवं नैतिक संस्कार शिविर का आयोजन स्वाध्याय भवन, साहूकारपेट-चैन्नई में किया गया, जिसमें 145 शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर में धार्मिक एवं नैतिक विषयों की जानकारी शिविरार्थियों को प्रशिक्षकों के माध्यम से प्रदान की गई। शिविर काल में युवक-युवतियों एवं श्रावक-श्राविकाओं के लिए भी प्रतिदिन विशेष कक्षा रखी गई। शिविर के समापन समारोह का आयोजन 14 मई को किया गया।

समापन समारोह में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के क्षेत्रीय प्रधान, कार्याध्यक्ष, मन्त्री, कोषाध्यक्ष सहित पदाधिकारीगण एवं युवक परिषद् के पदाधिकारीगण तथा कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। शिविर समापन समारोह में सभी शिविरार्थियों एवं अध्यापकगण को प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। समारोह का सञ्चालन युवारत्न श्री भरतजी बाघमार ने किया। शिविर में श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा हेतु लगभग 50 आवेदन पत्र प्राप्त हुए। युवक परिषद् के सभी कार्यक्रमों में तमिलनाडु संघ के सभी सदस्यों का पूर्ण सहयोग तन-मन-धन से प्राप्त हो रहा है।

-आर. महावीरचन्द कर्णावट, शाखा सचिव

## आन्ध्रप्रदेश में द्विदिवसीय स्वाध्यायी शिविर 'उड़ान' सम्पन्न

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-तमिलनाडु के तत्त्वावधान एवं श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ-तमिलनाडु के सञ्चालन में 13 से 14 मई 2023 को स्वाध्यायियों का द्विदिवसीय आवासीय शिविर 'उड़ान' 72 जिनालय, तड़ा-आन्ध्रप्रदेश के उपाश्रय में रखा गया। स्वाध्यायियों के लिए उपयोगी उड़ान शिविर में स्वाध्यायी बन्धु कुशल वक्ता युवारत्न श्री तरुणजी बोहरा 'तीर्थ' ने विभिन्न विषयों पर सत्र लिए। उड़ान द्विदिवसीय आवासीय शिविर में 27 श्रावक एवं 18 श्राविकाएँ विभिन्न उपयोगी सत्रों से लाभान्वित हुए। 13 मई को प्रथम सत्र में तीन सामायिक साधना में उपस्थित सभी स्वाध्यायियों ने मंच पर आकर स्वाध्याय क्या, क्यों और कैसे? आदि से सम्बन्धित विचार रखते हुए स्वाध्यायी सेवा देने का संकल्प किया। द्वितीय सत्र में दो सामायिक साधना के अन्तर्गत शिविरार्थियों को सात विभिन्न ग्रुपों में विभाजित किया गया जिसमें अंतगडसूत्र, प्रतिक्रमण, प्रभु महावीर का जीवन एवं भजनों पर आधारित रोचक धार्मिक प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। सायंकालीन प्रतिक्रमण पश्चात् 'पिक एण्ड स्पीक' के अन्तर्गत शिविरार्थियों द्वारा अपने हाथों से विभिन्न विषयों पर निकाले गए कार्ड पर अंकित विषयों पर तुरन्त दो मिनट अपने भाव रखे गये। इस शिविर में अधिकतर प्रथम बार अभ्यास करने आये हुए का इस सत्र में पुरुषार्थ अनुमोदनीय था।

शिविर के द्वितीय दिवस 14 मई को प्रार्थना के पश्चात् सुबह 8.30 बजे से 12.30 एक साथ पाँच सामायिक का आयोजन हुआ, भीषण गर्मी में भी सभी शिविरार्थियों का उत्साह प्रमोदजन्य रहा, इस सत्र में श्री तरुणजी बोहरा 'तीर्थ' ने तीर्थ के चालीस मोती के अन्तर्गत विभिन्न विषयों पर ऐतिहासिक प्रसंगों, भजनों एवं मुक्तकों के साथ

धाराप्रवाह मार्मिक उद्बोधन दिया, जो कि स्वाध्यायी बन्धुवरो के लिए पर्युषण पर्वाराधना में उपयोगी साबित होगा। मध्याह्न के सत्र में दो सामायिक की साधना के अन्तर्गत पर्वाराधना की तैयारी, संयम-चालीसा, जिनशासन की पुकार आदि जोश भरने वाले प्रभावी कार्यक्रम सम्पन्न हुए। श्री राकेशजी खींसरा और श्री नरेन्द्रजी कांकरिया द्वारा दो जून की रोटी पर साधु एवं चक्रवर्ती के मध्य हुए संवाद की सुन्दर प्रस्तुति दी गई एवं अलग-अलग ग्रुपों में शिविरार्थियों ने जीवन में उपयोगी अहिंसा पालन हेतु विभिन्न विषयों पर चार्ट बनाए। सायंकालीन सत्र में आज की ज्वलन्त समस्या मोबाइल के दुरुपयोग से बचने, जिससे तेउकाय की विराधना कम से कम हो, उसके अनेक उपाय बताये। द्वि-दिवसीय आवासीय शिविर समापन के अवसर पर श्रावक संघ, तमिलनाडु के कार्याध्यक्ष आर. नरेन्द्रजी कांकरिया ने कहा कि प्रथम बार आवासीय स्वाध्यायी शिविर में भाग लिया, यह जीवनशैली को बदलने के लिए उपयोगी शिविर रहा। स्वाध्याय संघ, तमिलनाडु के संयोजक श्री नवरतनजी बागमार ने श्री तरुणजी बोहरा 'तीर्थ' एवं सभी शिविरार्थियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। इस शिविर को सफलतापूर्वक आयोजित करने में स्वाध्याय संघ-तमिलनाडु के सह-संयोजक एम. प्रसन्नजी भंसाली एवं आर. वीरेन्द्रजी कांकरिया की मुख्य भूमिका रही। इस शिविर में अल्पाहार और भोजन के पश्चात् सभी शिविरार्थियों ने अपनी-अपनी थाली, चम्मच, गिलास को बुरादे से साफ किया, जिससे पानी की बचत के साथ-साथ अप्काय के असंख्यात जीवों की विराधना से बचाव हुआ। शिविर में पीने के लिए कच्चे पानी का बिल्कुल भी प्रयोग नहीं किया गया। अनेक शिविरार्थियों ने जीवन भर सिल्क की साड़ी और परफ्यूम का उपयोग नहीं करने और भोजन के पश्चात् थाली धोकर पीने का संकल्प किया।

-एम. प्रसन्न भंसाली, सह-संयोजक

## मैसूर में ग्रीष्मकालीन धार्मिक संस्कार शिविर का समापन

स्थानकवासी जैन धार्मिक शिक्षण संघ, मैसूर के तत्त्वावधान में स्थानक भवन में 14 मई से 22 मई, 2023 तक नौ दिवसीय ग्रीष्मकालीन धार्मिक संस्कार शिविर का समापन श्री बुधमलजी बाघमार की अध्यक्षता में हुआ। शिविर में 130 बच्चों ने भाग लिया तथा 20 प्रशिक्षकों के सहयोग से उन्हें धार्मिक, नैतिक और व्यावहारिक ज्ञानार्जन कराया। बच्चों ने सामायिकसूत्र अर्थ सहित, पच्चीस बोल, प्रतिक्रमण, 67 बोल, गति-आगति, जैन सिद्धान्त, नवकार मन्त्र, ध्यान आदि का शिक्षण प्राप्त किया। समापन समारोह में बच्चों ने अपने सीखे हुए ज्ञान के अनुभव साझा किए एवं 32 आगमों पर नाटक, धार्मिक स्तवन एवं संगीत के माध्यम से प्रस्तुति दी। समारोह में मैसूर संघ अध्यक्ष श्री सुभाषचन्द्रजी धोका, विद्यारण्यपुरम संघ अध्यक्ष श्री मोहनलालजी कोठारी, सिद्धार्थ नगर संघ अध्यक्ष श्री प्रकाशजी पितलिया, युवा संगठन अध्यक्ष श्री राकेशजी बाँठिया, राजुल बहू मण्डल अध्यक्ष कंचनबाईजी चौधरी सहित अन्य मण्डल एवं संगठन के अध्यक्षों का स्वागत किया गया। शिक्षण संघ के मन्त्री श्री सतीशजी मुणोत ने कार्यक्रम का सफल सञ्चालन किया। शिविर के सहयोगियों, प्रशिक्षकों एवं परीक्षा में श्रेष्ठ रहे विद्यार्थियों का सम्मान किया गया।

-बुधमल बाघमार, मैसूर

## सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बेंगलोर का नूतन धार्मिक और सांस्कृतिक केन्द्र अनेक सुविधाओं से युक्त

बेंगलोर में आचार्यप्रवर श्री हस्ती दीक्षा-शताब्दी वर्ष में प्रारम्भ किए गये सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल-भवन को उन्हीं के पट्टधर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 60वें दीक्षावर्ष में लोकार्पण करने का सौभाग्य यहाँ के रत्नबन्धुओं को प्राप्त हो रहा है। साथ ही भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के 49वें दीक्षा-दिवस के उपलक्ष्य में बेंगलोर निवासी मण्डल-भवन के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने जा रहे हैं। इस चार मञ्जिला भवन का क्षेत्रफल



10,154 वर्गगज है। इसमें पूर्ण सुसज्जित 26 कमरे हैं जिनमें 78 विद्यार्थी रह सकते हैं। इसमें 8 कमरे अतिथियों एवं ट्रस्टियों के लिए रखे हैं। इसके प्रवचन हॉल में 700 श्रोतागण एक साथ बैठ सकते हैं। प्रवचन हॉल के पास पौषध-संवर हेतु 2 कमरे तथा ज्ञानार्जन हेतु एक लाइब्रेरी हॉल भी है। भवन के तीनों ओर 9 फीट का खाली स्थान रखा गया है। यहाँ परठने की व्यवस्था रखी गई है। साहित्य प्रदर्शनी के लिए 400 वर्गगज का हॉल है, जिसे बिक्री केन्द्र के रूप में उपयोग लाया जा सकता है। ऑफिस लॉबी अतिथियों के लिए सुसज्जित है। भूतल में पार्किंग की व्यवस्था है। इस भवन के निर्माण में सभी रत्नबन्धुओं ने पूर्ण सहयोग दिया है। अब तक करीब 3.5 लाख (प्रत्येक) के 80 ट्रस्टी बने हैं। भवन को ओक्यूपेशन सर्टिफिकेट भी प्राप्त हो गया है। यहाँ विभिन्न कलाओं का ज्ञानाभ्यास कराया जा सके, उच्च शिक्षा के लिए सुदूर प्रान्तों से आने वाले जैन विद्यार्थियों के लिए आवास उपलब्ध हो सके, धार्मिक आयोजन हो सके, विद्वत् संगोष्ठियाँ हो सके, धर्म देवों की सेवा का लाभ प्राप्त हो सके, इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर इस भवन का निर्माण करवाया गया है।

-चेतनप्रकाश डूंगरवाल्, बेंगलोर

### केन्द्रीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर 16 जून से जोधपुर में

स्वाध्यायियों के ज्ञान एवं आचरण में उत्तरोत्तर विकास करने हेतु श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ द्वारा समय-समय पर स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जाते हैं। इसी कड़ी में स्वाध्यायियों को सूचित करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा एवं महासती मण्डल आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में 16 से 20 जून, 2023 तक पंचदिवसीय शिविर का आयोजन जोधपुर में किया जा रहा है। इस शिविर में निम्नांकित योग्यता वाले स्वाध्यायी भाग ले सकेंगे-

1. श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर का स्वाध्यायी हो एवं पर्युषण पर्व में सेवा दे रहा हो।
2. नये स्वाध्यायी जिन्होंने वर्ष 2022-23 में स्वाध्याय संघ की सदस्यता ग्रहण की हो और पर्युषण पर्व में सेवा देने की भावना रखते हो।
3. सामायिक, प्रतिक्रमण कण्ठस्थ हों।

उक्त शिविर में कुशल प्रशिक्षकों द्वारा वक्तृत्व कला आदि का प्रभावी प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। शिविर में भाग लेने हेतु स्वाध्याय संघ, जोधपुर की स्वीकृति प्राप्त करना अनिवार्य है।

**शिविर सम्बन्धी जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र-**1. स्वाध्याय संघ कार्यालय 9414126279, 2. सुरेश हींगड़-प्रभारी 9444852330, 3. धीरज डोसी-प्रभारी 9462543360, 4. धर्मचन्द जैन-शिविर संयोजक 9351589694, 5. सुभाष हुण्डीवाल-संयोजक 9460551096, 6. सुनील संकलेचा-सचिव 9413844592

### इन्दौर में धार्मिक शिक्षण एवं नैतिक संस्कार शिविर सम्पन्न

श्री पद्मावती पोरवाल जैन संघ के तत्त्वावधान में पोरवाल युवा संघ, इन्दौर द्वारा धार्मिक शिक्षण एवं नैतिक संस्कार शिविर पोरवाल पैलेस, जंगमपुरा में 15 से 21 मई, 2023 तक आयोजित किया गया। इस शिविर में 2 से 10 वर्ष के बच्चों को नवकारमन्त्र, गुरु वन्दन, 24 तीर्थकरों के नाम आदि याद करवाये गये। 10 वर्ष से बड़े बच्चों को सामायिकसूत्र विधि सहित, नवतत्त्व, सामायिक-प्रतिक्रमण का महत्त्व, नैतिक शिक्षा की कहानियाँ आदि समझाये गये। श्रावक-श्राविकाओं को अनुभवी एवं योग्य शिक्षकों द्वारा तत्त्वज्ञान, कर्मसिद्धान्त का विवेचन कराया गया। चित्रकला-पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गई। अन्तिम दिन कैरियर काउंसलिंग तथा पुस्तक मेले का आयोजन किया गया। इस शिविर में 125 बालक-बालिकाओं एवं लगभग 40 श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग

लिया। सभी शिविरार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार एवं शिक्षकों को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

-पीयूष जैन, इन्दौर

## ब्यावर से सम्पूर्ण देश में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित पुस्तकों पर प्रतियोगिताओं का आयोजन

प्रासुक जल प्रेरणा केन्द्र, ब्यावर द्वारा 'महावीर को जानो' विषय पर अब तक 14 प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएँ आयोजित हुई हैं, जिनमें क्रमशः 15 मार्च से लेकर 28 मार्च तक लगभग 26,485 प्रतिभागियों ने भाग लिया है। इन प्रतियोगिताओं का आयोजन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित एवं आचार्यश्री हस्ती प्रणीत ग्रन्थ 'जैनधर्म का मौलिक इतिहास' पर आधारित 'जैन इतिहास के प्रसंग (भाग-7-8)' पुस्तकों पर किया गया। प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर तीर्थंकर महावीर के सम्बन्ध में प्रामाणिक जानकारी प्राप्त की। उसके पश्चात् अक्षय तृतीया पर 'जैन इतिहास के प्रसंग (भाग-1)' पर भगवान ऋषभदेव पर प्रतियोगिता आयोजित की गई। विगत माह से सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित 'उपासकदशांगसूत्र' के हिन्दी अनुवाद एवं विवेचन पर प्रतियोगिता का क्रम चल रहा है। इस कार्य में श्री सचिनजी गादिया का उत्साह प्रशंसनीय है।

## जयपुर में उच्च अध्ययन हेतु छात्रों को सुनहरा अवसर आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (सिद्धान्त-शाला) में वर्ष 2023 के प्रवेश हेतु रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ

नैतिक-आध्यात्मिक संस्कारों के साथ जयपुर में रहकर उच्च शैक्षणिक अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों हेतु संस्थान में प्रवेश के लिए रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ है। कक्षा 8वीं से ऊपर के छात्र संस्थान में प्रवेश हेतु आवेदन कर सकते हैं। संस्थान में विद्यार्थियों के लिए उचित आवास-भोजन व्यवस्था के साथ, कम्प्यूटर शिक्षण, इंग्लिश स्पीकिंग क्लासेज, सेमिनार एवं मोटिवेशनल कक्षाएँ आयोजित होती रहती हैं। शैक्षणिक अध्ययन के साथ संस्थान द्वारा निर्धारित धार्मिक पाठ्यक्रम का अध्ययन भी संस्थान में करवाया जाता है। जो छात्र संस्कारित एवं अनुशासित रहकर अध्ययन करना चाहते हैं, वे रजिस्ट्रेशन के लिए सम्पर्क करें।

**नोट**-रजिस्ट्रेशन फॉर्म रत्नसंघ की वेबसाइट [ratansangh.com](http://ratansangh.com) पर जाकर About us option पर Click कर आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान के पेज से डाउनलोड किया जा सकता है अथवा हमारे फेसबुक पेज <https://www.facebook.com/profile.php?id=100011420126008> से भी जुड़कर अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। अधिक जानकारी एवं रजिस्ट्रेशन हेतु सम्पर्क करें-ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 फोन नं. 141-2710946, 79762-46596 Email:-[ahassansthan@gmail.com](mailto:ahassansthan@gmail.com)

## जयपुर में उच्च अध्ययन हेतु छात्राओं को सुनहरा अवसर

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा सञ्चालित श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान बालिका छात्रावास में प्रवेश हेतु सत्र 2023-24 के लिए आवेदन पत्र आमन्त्रित हैं। कक्षा 9वीं से 12वीं तक अध्ययन की इच्छुक छात्राओं को प्राथमिकता दी जाएगी एवं उच्च शैक्षणिक अध्ययन करने वाली छात्राएँ भी आवेदन कर सकती हैं। बालिकाओं के लिए छात्रावास में निःशुल्क आवास, भोजन एवं सुरक्षा की उत्तम व्यवस्था है। शैक्षणिक अध्ययन हेतु प्रवेश लेने वाली छात्राओं को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा देना अनिवार्य है। छात्रावास में बालिकाओं के सर्वांगीण विकास का ध्यान रखते हुए समय-समय पर मोटिवेशनल क्लासेज, सेमिनार, विभिन्न गृह-कौशल, पर्सनैलिटी डवलपमेंट एवं इंग्लिश स्पीकिंग जैसी विशेष कक्षाएँ लगाई जाती हैं।

प्राप्त आवेदनों में वरीयता क्रम के अनुसार चयनित छात्राओं का साक्षात्कार लिया जाएगा, प्रवेश पाने वाली छात्राओं को संस्थान द्वारा निर्धारित नियमों का पूर्ण पालन करना अनिवार्य है। इच्छुक छात्राएँ 15 जून, 2023 तक अपना आवेदन पत्र भरकर संस्थान में जमा करा सकती हैं। आवेदन प्राप्त करने एवं जमा करने हेतु **सम्पर्क सूत्र-** अधिष्ठाता श्रीमती मंजूजी जैन, श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, 12/251 के सामने, कावेरी पथ, मानसरोवर, जयपुर -302020, मो. 9413019982

### विद्यार्थियों के जीवन-निर्माण में बनें सहयोगी

### छात्र-छात्रा संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण योजना

#### (प्रतिवर्ष एक छात्र के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, (सिद्धान्त शाला) जयपुर, संघ एवं समाज के प्रतिभाशाली छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 1973 से सञ्चालित संस्था है। इस संस्था से अब तक सैकड़ों विद्यार्थी अध्ययन कर प्रशासकीय, राजकीय एवं प्रोफेशनल क्षेत्र में कार्यरत हैं। अनेक छात्र व्यावसायिक क्षेत्रों में सेवारत हैं। समय-समय पर ये संघ-समाजसेवी कार्यों में निरन्तर अपनी सेवाएँ भी प्रदान कर रहे हैं। वर्तमान में भी यहाँ अध्ययनरत विद्यार्थियों को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की निःशुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जाती हैं। व्यावहारिक अध्ययन के साथ ही छात्रों के लिए धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। वर्तमान में संस्थान में 71 विद्यार्थियों के लिए अध्ययनानुकूल व्यवस्थाएँ हैं। संस्था को सुचारु रूप से चलाने एवं इन बालकों के लिए समुचित अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्रों के जीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में बालकों के संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

इसमें सहयोगी बनने वाले महानुभावों के नाम जिनवाणी में क्रमिक रूप से प्रकाशित किये जा रहे हैं। संस्थान के लिए पूर्व छात्रों का एवं निम्नलिखित महानुभावों का सहयोग प्राप्त हुआ है-

64. मैसर्स सुराणा एण्ड सुराणा, चेन्नई (तमिलनाडु)	35,000/-
65. श्री प्रदीपजी शर्मा, जयपुर (राजस्थान) (श्रीमती शीलाजी कोठारी, जयपुर के मार्फत)	30,000/-
66. श्रीमती मीनाजी खण्डेलवाल, जयपुर (श्रीमती शीलाजी कोठारी, जयपुर के मार्फत)	30,000/-
67. श्री चिरागजी सेहलजी जैन (हरकावत), जयपुर (राजस्थान)	24,000/-

(न्यायमूर्ति कृष्णमल लोढ़ा युवा शिक्षा प्रतिभा सम्मान प्राप्त होने के उपलक्ष्य में)

आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्रांजेक्शनस्लिप एवं सम्बद्ध जानकारी हमें अवश्य भेजें।

खाते का विवरण:-Name : **GAJENDRA CHARITABLE TRUST**, Account Type : *Saving*, Account Number : **10332191006750**, Bank Name : *Punjab National Bank*, Branch : *Khadi Board, Bajaj Nagar, Jaipur*, Ifsc Code : **PUNB0103310**, Micr Code : **302022011**, Customer ID : **35288297** निवेदक : डॉ. प्रेमसिंह लोढ़ा (व्यवस्थापक), सुमन कोठारी (संयोजक), अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-दिलीप जैन 'प्राचार्य' 9461456489, 7976246596

#### (प्रतिवर्ष एक छात्रा के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका), मानसरोवर-जयपुर, संघ और समाज की प्रतिभाशाली छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 2017 से सञ्चालित संस्था है। यहाँ इस संस्था में वर्तमान में

40 अध्ययनरत छात्राओं को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की निःशुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जा रही हैं। व्यावहारिक अध्ययन के साथ छात्राओं को धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। संस्था को सुचारुरूप से चलाने एवं इन बालिकाओं के लिए समुचित अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्राओं के जीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में तथा उनके संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्रॉजैक्शनस्लिप तथा सम्बद्ध जानकारी हमें अवश्य भेजे।

खाते का विवरण:-Name : **SAMYAGGYAN PRACHARAK MANDAL**, Account Type : *Saving*, Account Number : **51026632997**, Bank Name : *SBI*, Branch : *Bapu Bazar, Jaipur*, Ifsc Code : *SBIN0031843* निवेदक : अशोक कुमार सेठ, मन्त्री। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क फोन नं. अनिल जैन 9314635755

### विशेषांक हेतु रचनाएँ आमन्त्रित

जिनवाणी विशेषांक 'दान के विविध आयाम' विषय पर आप विद्वज्जनों के महत्त्वपूर्ण आलेख प्राप्त हो रहे हैं। जिन विद्वानों ने अभी तक आलेख नहीं भेजे हैं वे 25 जून तक टाइप किया हुआ मैटर अवश्य प्रेषित कर दें।

Email : editorjinwani@gmail.com

-सम्पादक

## सांक्षिप्त समाचार

**सूरत**-दरियापुरी संप्रदाय के आचार्य श्री 1008 श्री वीरेंद्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-6 एवं पूज्या महासती श्री पुष्पाबाईजी म.सा. आदि ठाणा-6 के सान्निध्य में जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के श्री सोहनलाल नाहर स्वाध्याय भवन में 1 से 7 मई, 2023 तक श्री दरियापुरी स्थानकवासी जैन संघ एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संयुक्त तत्त्वावधान में आवासीय धार्मिक विनय-संस्कार शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें 104 शिविरार्थियों ने परिवार के मोह से दूर 7 दिवस तक स्थानक परिसर में रहकर प्रतिदिन 8 से 13 सामायिक, एकाशन, उपवास, उभयकाल प्रतिक्रमण एवं रात्रि संवर किए। 45 बालकों और 35 बालिकाओं ने भिक्षु दया व्रत का 1 दिन पालन किया। शिविर में 25 बोल, गतागत, विभिन्न थोकडों, नमो नाणस्स पर प्रश्नोत्तरी, जम्बूद्वीप के नक्शे का ज्ञान, संस्कारों का ज्ञान, प्रतिक्रमण, धार्मिक कहानियाँ आदि का ज्ञानार्जन कराया गया। इसमें गुजरात के विभिन्न शहरों सुरेन्द्रनगर, अहमदाबाद, नवसारी, वीरमगाम, सूरत आदि स्थानों के शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविरार्थियों को ज्ञानार्जन कराने एवं संस्कार देने में सन्त-सतियों और श्रेष्ठ शिक्षकों ने विशेष पुरुषार्थ किया। शिविर के दौरान कई धार्मिक प्रतियोगिताएँ भी आयोजित हुईं। सभी शिविरार्थियों ने अनेक त्याग प्रत्याख्यान ग्रहण किये, जैसे 3 वर्ष में 1,200 सामायिक, एक साल में 100, 200, 300 सामायिक, जमीकंद का त्याग, रात्रिभोजन का त्याग, मोबाइल देखने की मर्यादा आदि प्रमुख त्याग हैं। शिविर के समापन समारोह में सभी शिविरार्थियों को पुरस्कृत किया गया और प्रतियोगिता एवं परीक्षा-परिणाम में श्रेष्ठ बालक-बालिकाओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। -राजीव नाहर, सूरत

**चेन्नई**-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-तमिलनाडु के तत्त्वावधान में स्वाध्याय भवन, साहूकारपेट में 1 मई, 2023 को संघ स्थापना दिवस श्रद्धा-भक्ति दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर भगवान महावीर स्वामी के केवलज्ञान एवं उनके द्वारा स्थापित जिनशासन चतुर्विध संघ रूपी तीर्थ पर प्रश्नोत्तरी का रोचक कार्यक्रम रखा गया।

3 मई, 2023 को पण्डित रत्न उपाध्यायप्रवर पूज्यश्री मानचन्द्रजी म.सा का 61वाँ दीक्षा दिवस जप-तप-त्यागपूर्वक मनाया गया। कोषाध्यक्ष श्री गौतमचन्द्रजी मुणोत ने उपाध्याय श्री के जन्म से लेकर चारित्रमय जीवन पर प्रकाश डाला तथा कार्याध्यक्ष आर. नरेन्द्रजी कांकरिया ने उपाध्यायश्री के ऋजुता, सरलता, कषाय मन्दता, विद्वत्ता, नियमितता, अप्रमत्तता, मधुरभाषी, प्रशान्तमना, आत्मार्थी आदि विशिष्ट गुणों के अनेक उद्घरण धर्म-सभा में रखे। स्वाध्यायी श्री विनोदजी जैन ने उपाध्यायश्री के अनेक उपकारों का वर्णन किया। श्री रूपराजजी सेठिया और धर्म-सभा में उपस्थित श्रद्धालुओं ने उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म.सा के गुणगाण रूप में मान-चालीसा एवं 'उपाध्याय मान महान हैं' प्रार्थना के साथ सामूहिक स्तुति की।

4 मई को रत्नसंघ के भावी आचार्य पूज्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा का 49वाँ दीक्षा दिवस संघ समर्पण दिवस के रूप में मनाया गया। सर्वप्रथम श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं ने भावी आचार्यश्री की महेन्द्र-चालीसा से स्तुति की। कार्याध्यक्ष आर. नरेन्द्रजी कांकरिया और कोषाध्यक्ष श्री गौतमचन्द्रजी मुणोत ने रत्नसंघ की गौरवशाली आचार्य परम्परा का उल्लेख करते हुए गुरु के हृदय में स्थान प्राप्त महान् अध्यवसायी भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा के गुणगाण करते हुए उनके जीवन पर आधारित प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस पावन प्रसंग पर श्री जैन रत्न युवक परिषद, तमिलनाडु के सञ्चालन में 'विंग्स टू फ्लाई' बालक-बालिकाओं के लिए ग्यारह दिवसीय वार्षिक ग्रीष्मकालीन धार्मिक एवं नैतिक संस्कार शिविर का शुभारम्भ हुआ।

10 मई को रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर आचार्य भगवन्त पूज्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 33वाँ आचार्य पदारोहण दिवस तीन-तीन सामायिक साधना एवं जप-तप-त्यागपूर्वक मनाया गया। आचार्य भगवन्त के गुणगाण रूप में उपस्थित श्रद्धालुओं ने आचार्य हीरा-चालीसा की सामूहिक स्तुति की। कार्याध्यक्ष आर. नरेन्द्रजी कांकरिया ने 33 वर्ष पूर्व आज ही की तिथि पर सूर्यनगरी जोधपुर के सरदार स्कूल में सम्पन्न आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. के चादर महोत्सव पर स्वयं प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित रहकर देखे हुए चादर महोत्सव के दृश्यों का चित्रण शब्दों के माध्यम से रखा। स्वाध्यायी श्री सुमेरचन्द्रजी बागमार, श्री कांतिलालजी तातेड़, श्री गौतमचन्द्रजी मुणोत, श्रीमती पुष्पलताजी गादिया ने हृदयस्पर्शी भजन के माध्यम से आचार्यश्री की स्तुति की। श्री जवाहरलालजी कर्णावट, श्री चम्पालालजी बोथरा, स्वाध्याय संघ, तमिलनाडु के संयोजक श्री नवरतनजी बागमार, आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के संयोजक श्री अशोकजी बाफना, गुरुभ्राता श्री मनीषजी उज्ज्वल, धार्मिक अध्यापक श्री विनोदजी जैन ने आचार्यश्री के चारित्रमय जीवन, मौलिक गुणों और संघ-समाज पर किये गए उपकारों का उल्लेख करते हुए गुणगाण किए। श्रद्धालुओं ने उक्त सभी दिवसों पर एकाशन, उपवास व्रत- नियम एवं सामूहिक प्रत्याख्यान किए। -आर. नरेन्द्र कांकरिया

## बधाई

### संघ लोक सेवा आयोग परीक्षा-2023 में जैन समाज के प्रतिभागियों ने बढ़ाया समाज का गौरव

संघ लोक सेवा आयोग परीक्षा-2023 के परिणामों में जैन समाज के कई विद्यार्थियों ने वरीयता सूची में श्रेष्ठ स्थान (रैंक) प्राप्त कर जैन समाज का गौरव बढ़ाया है, जिनके नाम वरीयतानुसार इस प्रकार हैं- 1.एल अंबिका जैन-69, 2. आयुषी जैन-74, 3. अयान जैन-87, 4. जतिन जैन-91, 5. जतिन जैन ओम-103, 6. शुभम जैन-152, 7. सृष्टि जैन-165, 8. अंकित जैन-173, 9. अनिरुद्ध जैन-295, 10. श्रेयांशी जैन-302, 11. अंशिका जैन-306, 12. आदित्य जैन-326, 13. प्रांजल जैन-335, 14. कुणाल जैन-356, 15. वृष्टी जैन-359, 16.

दिव्य जैन-363, 17. अक्षत जैन-415, 18. दामिनी दिवाकर-435, 19. अनुभव जैन-485, 20. आदिनाथ तमदददी, कर्नाटक-566, 21. नमन जैन-675, 22. आकांक्षा जैन-702, 23. अक्षय कुमार पाटिल-746, 24. यश कुमार जैन-753। सभी उत्तीर्ण प्रतिभागियों को बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ देते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

-सम्पादक



**मानसरोवर, जयपुर**-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के संयुक्त मन्त्री श्री राजेन्द्रजी जैन 'राजा' 27 अप्रैल, 2023 को महावीर भवन में नवनिर्वाचित सदस्यों की मीटिंग में सर्वसम्मति से श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संस्था, मानसरोवर के निर्विरोध अध्यक्ष मनोनीत हुए हैं। सुबोध शिक्षा समिति में कार्यरत श्री प्रकाशजी लोढ़ा भी निर्विरोध मन्त्री मनोनीत हुए हैं।

-अनिल कुमार जैन



**बैंकॉक**- श्री माँगीलालजी सुपुत्र श्री डालचन्दजी हिरण, बैंकॉक में भारत थाई चैम्बर ऑफ कॉमर्स के वाइस प्रेसिडेंट चुने गए। आप पिछले 20 वर्षों से विदेश में जवाहरात तथा हीरों का कारोबार कर रहे हैं। श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, जयपुर के आप पूर्व छात्र हैं। आप बैंकॉक की अनेक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। वहाँ के अनेक मन्त्रालयों एवं दूतावास से भी आपका सम्पर्क रहता है।

**जोधपुर**-श्रीमती आस्थाजी धर्मसहायिका श्री अंकितजी मेहता पुत्रवधू श्री बसंतजी-सोनलजी मेहता, सुपुत्री श्री अनिलजी-रेखाजी दक ने एनआईटी सूरत से मास्टर ऑफ टेक्नोलॉजी में प्रथम स्थान के साथ गोल्ड मेडल प्राप्त किया है। इससे पूर्व आपने बी.टेक. में भी गोल्ड मेडल के साथ प्रथम स्थान प्राप्त किया था। वर्तमान में बेंगलोर शहर में इलेक्ट्रिक व्हीकल (EV) टेक्नोलॉजी की कम्पनी में कार्यरत है। आप स्व. श्री सम्पतराजजी वैद (सन्त-सतीवृन्द के निर्दोष उपचार में सहयोगी) पीपाड़वाले-जोधपुर की सुपौत्रवधू हैं।

-प्रकाशचन्द सालेचा, जोधपुर

**मुम्बई**-श्री बाबूलालजी जैन उज्ज्वल (प्रधान सम्पादक-समग्र जैन चातुर्मास सूची) द्वारा विगत 44 वर्षों से की जा रही सराहनीय सेवाओं के उपलक्ष्य में राष्ट्र सन्त आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के सुशिष्य मुनि श्री अजीतसागरजी महाराज के 25वें संयम रजत-दिवस एवं भोपाल में आयोजित पंचकल्याणक महोत्सव के पावन अवसर पर भोपाल की महापौर श्रीमती मालतीजी राय, म.प्र. सांसद श्री आलोकजी आदि गणमान्य महानुभावों के द्वारा उनका साधु सेवक अलंकरण से सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया।

- जवेश बी. जैन



**जोधपुर**- श्रीमती सुरभिजी धर्मसहायिका श्री अविनाशजी पुत्रवधू श्रीमती नीताजी-श्री अरुणजी, पौत्रवधू श्रीमती शान्तिदेवीजी-श्री पारसराजजी मेहता की आम्र लिमिटेड, केम्ब्रिज, यूनाइटेड किंगडम में प्रिंसिपल प्रोजेक्ट मैनेजर पद पर पदोन्नति हुई है।



सुश्री निकिता जैन



कु. अनुष्का जैन



कु. मनस्वी जैन



श्री दर्शिल जैन



कु. ईशिता जैन

**जमशेदपुर**-सुश्री निकिताजी सुपुत्री श्री मनीषजी सुपौत्री डॉ. जीवराजजी जैन ने नायर कॉलेज, मुम्बई (महाराष्ट्र) से

एम.बी.बी.एस. की अन्तिम परीक्षा में स्वर्ण पदक प्राप्त किया है।

- डॉ. जीवराज जैन

**जयपुर**-कु. अनुष्का सुपुत्री श्रीमती नीतूजी- श्री मनोज कुमारजी जैन, सुपौत्री श्रीमती प्रेमदेवीजी-श्री राजेन्द्र प्रसादजी जैन (पाटोली वाले) ने सी.बी.एस.ई. बोर्ड की 12वीं कक्षा (वाणिज्य संकाय) की परीक्षा 95% अंकों से उत्तीर्ण कर अपने विद्यालय के तीनों संकायों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है।

**जयपुर**-कु. मनस्वीजी सुपुत्री श्रीमती स्मिताजी- श्री अनिल कुमारजी, सुपौत्री श्रीमती प्रेमदेवीजी-श्री राजेन्द्र प्रसादजी जैन (पाटोली वाले) ने सी.बी.एस.ई. बोर्ड की 12वीं (वाणिज्य संकाय) कक्षा की परीक्षा 94% अंकों से उत्तीर्ण कर अपने विद्यालय के तीनों संकायों में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है।

**मुम्बई**-श्री दर्शीलजी जैन सुपुत्र श्रीमती करिश्माजी-श्री प्रशान्तजी जैन ने आई.सी.एस.ई. बोर्ड की दसवीं की परीक्षा में 97.80% अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की है।

-प्रशांत जैन

**जयपुर**-ईशिता सुपुत्री श्रीमती दीपमालाजी-श्री राजीवजी सुपौत्री श्री पी.सी. जैन दोहित्री श्री एन.एम. जैन (लूंकड़) ने सी.बी.एस.ई. बोर्ड की 12वीं(विज्ञान संकाय) कक्षा की परीक्षा 96.8% अंकों से उत्तीर्ण की है।

## श्रद्धाञ्जलि

**मुम्बई**-तेरापंथ संघ के विद्वान् सन्त मुनि श्री डॉ. महेन्द्र कुमारजी का 6 अप्रैल, 2023 को संधारापूर्वक देहावसान हो गया। विज्ञान और जैनदर्शन के तुलनात्मक पक्ष पर आपका गहन अध्ययन था, जिसे आपने अनेक पुस्तकों एवं विद्वद् व्याख्यानों में अभिव्यक्त किया। आपकी एक प्रसिद्ध पुस्तक है-“Enigma of Universe”। आप जैन विश्व भारती लाडनूँ में प्रोफेसर के रूप में भी अपना अकादमिक सहयोग करते थे। अनेक जैन विद्वान् आपके सम्पर्क से प्रभावित हुए।

-डॉ अरिहंत कुमार जैन, मुम्बई

**जयपुर**-अनन्य गुरुभक्त, संघ-सेवी, धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री प्रकाशचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री केवलचन्दजी हीरावत का



3 मई, 2023 को देहावसान हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करते थे तथा जयपुर में विराजित सन्त-सतीवृन्द की सेवा-सन्निधि का लाभ लिया करते थे। आप श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जयपुर के अध्यक्ष पद पर महनीय सेवाएँ प्रदान कर रहे थे। आपने 2013-15 में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्यकारिणी सदस्य के रूप में अपनी सेवाओं से समाज को लाभान्वित किया। आप मण्डल से प्रकाशित सत्साहित्य में मुक्त हस्त से अर्थ सहयोग प्रदान करते रहते थे। आपके भ्राता आदरणीय श्री कैलाशचन्दजी हीरावत अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष पद का दायित्व बखूबी निर्वहन करने के पश्चात् संघ-संरक्षक एवं शासन सेवा समिति के सह-संयोजक के रूप में अपना दायित्व निर्वहन कर रहे हैं। आपके लघुभ्राता श्री विमलचन्दजी हीरावत रत्न व्यवसायी हैं। आपके चचेरे भाई श्री पारसचन्दजी हीरावत सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर चुके हैं। हीरावत परिवार सन्त-सतीवृन्द की सेवा एवं स्वधर्मी भाई-बहिनों के आतिथ्य सत्कार में सदैव तत्पर रहता है। -

अशोक कुमार सेठ, मन्त्री

**जोधपुर**-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती पुष्पाजी धर्मसहायिका स्व. श्री चम्पालालजी वैद मेहता का 3 मई, 2023 को



देहावसान हो गया। आपकी सन्त-सतीवृन्द के प्रति असीम आस्था थी। आपका जीवन सरलता, मधुरता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत था। आप समय-समय पर गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त करने में अग्रणी थीं। आप रत्नसंघीय दिवंगत महासती श्री प्रियदर्शनाजी म.सा. की सांसारिक भाभीजी थीं। मेहता परिवार रत्नसंघ की सभी

गतिविधियों में सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ है एवं स्वधर्मी भाई-बहिनों के आतिथ्य-सत्कार में सदैव तत्पर रहता है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

**किशनगढ़**-उदारमना धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती प्रेमलताजी धर्मसहायिका श्री विजयकुमारजी गोठी का 26



अप्रैल, 2023 को देहावसान हो गया। आपकी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। चातुर्मास काल में सदैव गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण का लाभ लेती थीं और दर्शन करके अहोभाव से भर जाती थीं। आप प्रतिदिन अधिक से अधिक सामायिक और स्वाध्याय करने का लक्ष्य रखती थीं। आगम अध्ययन एवं दान पुण्य में आपकी विशेष रुचि थी। स्वास्थ्य अनुकूल न रहने से आप स्वयं तो तप नहीं कर पाती थीं, पर तपस्वियों की भावपूर्वक अनुमोदना करती थीं। आप वीर भ्राता श्री क्रान्तिचन्दजी मेहता, अलवर वालों की सालीजी थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

-प्रमोद कुमार मोदी, किशनगढ़

**बजरिया (सवाईमाधोपुर)**-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती प्रेमबाईजी धर्मसहायिका श्री सौभागमलजी जैन (बाबई



वाले) का 21 अप्रैल, 2023 को 72 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। आपकी देव-गुरु-धर्म पर असीम आस्था थी। बाबई पधारने वाले सभी सन्त-सतियों की सेवा-सन्निधि में आप सदैव तत्पर रहती थीं। नियमित सामायिक-स्वाध्याय आपकी दिनचर्या का हिस्सा था। त्याग-प्रत्याख्यान करने में भी आप अग्रणी रहती थीं। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

-अनिल कुमार जैन, जयपुर

**अहमदाबाद**-बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न, हिन्दी साहित्य के साथ जैन विद्वान् प्रो. (डॉ.) शेखरचन्द्रजी पन्नालालजी



जैन का 11 मई, 2023 को स्वर्गवास हो गया। आपकी अन्तिम इच्छानुसार आपके परिवारजनों द्वारा आपके चक्षुदान करके समाज को एक प्रेरणा देने का उत्तम कार्य किया है। आप 'तीर्थकर वाणी' पत्रिका के सम्पादक थे। आप स्पष्टवक्ता एवं प्रत्युन्नमति के धनी थे।

-डॉ. धर्मचन्द जैन, जयपुर

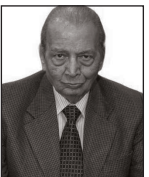
**बांसवाड़ा**-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती शकुंतलाजी धर्मसहायिका स्व. मास्टर श्री कस्तूरचन्दजी जैन (खोह वाले)



का 4 अप्रैल, 2023 को स्वर्गवास हो गया। आपकी देव-गुरु-धर्म पर असीम आस्था थी एवं सन्त-सतियों की सेवा में सदैव तत्पर रहती थीं। आप सरल स्वभावी, सेवाभावी एवं उदारमना श्राविका थीं। सामायिक-स्वाध्याय आपका नित्य क्रम था। आपके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री सत्यप्रकाशजी जयपुर में सन्त-सतीमण्डल एवं समाज-सेवा में अग्रणी हैं तथा छोटे सुपुत्र श्री विजयप्रकाशजी बांसवाड़ा में राजकीय सेवा में कार्यरत रहते हुए अपनी दैनिकचर्या में सामायिक-स्वाध्याय को प्राथमिकता में रखते हैं। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

-अनिल कुमार जैन, मानसरोवर-जयपुर

**हैदराबाद**-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री बिलमराजजी सुपुत्र स्व. श्री मोहनराजजी भण्डारी का 8 मई, 2023 को 95 वर्ष की



वय में स्वर्गगमन हो गया। आप देश-विदेश में सेवारत एवं उच्चस्थ पदों पर कार्य करने के पश्चात् जोधपुर में निवास करते थे। आपकी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा थी। आपने मात्र एक छोटे से संकेत पर जोधपुर में स्थानक हेतु एक लाख रुपये की राशि स्थान खरीदने के लिए दी थी। आपका पूरा परिवार रत्नसंघ के प्रति अगाध भक्ति एवं श्रद्धा से ओतप्रोत है। आप पूर्व महामन्त्री श्री जगदीशमल जी कुम्भट के मामाश्री थे।

**जयपुर**-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती किरणजी धर्मसहायिका स्व. श्री दशरथमलजी लोढ़ा का 15 जनवरी, 2023



को 82 वर्ष की वय में देहावसान हो गया। आप सदैव स्वस्थ रहते हुए रत्नसंघ के साधु-साध्वियों के चातुर्मास में



हमेशा चौका करके सेवा का लाभ लेते थे। आप पूर्व महामन्त्री श्री जगदीशमलजी कुम्भट की अनुज बहिन थीं। आपके दोनों पुत्रों और पुत्रवधुओं की भी पूज्य आचार्यप्रवर सहित रत्नसंघ के सन्त-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा है।

**जयपुर**-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री बाबूलालजी सुपुत्र श्री दीपचन्दजी जैन (समिधि वाले) का 16 मई, 2023 को 74



वर्ष की वय में देहावसान हो गया। आप सादगीमय जीवन के धनी तथा सामायिक-स्वाध्याय के प्रति निष्ठावान थे। सन्त-सतियों की गोचरी सेवा में आप हमेशा तत्पर रहते थे। आपके छोटे भ्राता श्री रघुवीरजी जैन एवं समस्त परिवार रत्नसंघ के प्रति समर्पित है। आप मिलनसारिता, संघनिष्ठा एवं भक्तिभाव से सम्पन्न श्रावक थे।

**मैसूर**-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती शान्ताबाईजी धर्मसहायिका स्व. श्री नेमीचन्दजी धोका (निमाज वाले) का 5



मई, 2023 को देहावसान हो गया। आपकी देव-गुरु-धर्म और सभी सन्त-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी एवं मैसूर पधारने वाले सभी सन्त-सतियों की सेवा में अग्रणी रहती थीं। आप जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता की बहिन थी। आपके सुपुत्र श्री श्रेणिकराजजी, सुनील कुमारजी भी संघ-सेवा तथा विहार-सेवा में सदैव अग्रणी रहते हैं। आप स्वभाव से बड़ी

ही मिलनसार श्राविका थी। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई है।

-सुभाषचन्द धोका

उपर्युक्त दिवगंत आत्माओं को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं सभी सम्बद्ध संस्थाओं के सदस्यों की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

## पर्युषण पर्व की आराधना द्वितीय श्रावण में

14 से 21 अगस्त, 2023 तक

आगममर्मज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, जिनशासन गौरव, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा ने इस वर्ष स्थानकवासी समाज में पर्युषण पर्व की एकता के लिए अपना मानस बनाया था। एतदर्थ उन्होंने विगत तीन शताब्दियों से चातुर्मास प्रारम्भ होने के 49/50वें दिन सम्बत्सरी मनाने की परम्परा को छोड़कर पर्युषण एकता हेतु निम्नाङ्कित दो शर्तों पर सहमति प्रदान की थी-

1. समस्त स्थानकवासी समाज के घटक यदि इस एकता में सम्मिलित होते हैं, तो वे भी सहर्ष इस एकता में सहभागी बनकर प्रमोद का अनुभव करेंगे।

2. जो भी तिथि तय हो वह सदा के लिए हो, उसमें बार-बार परिवर्तन न हो।

एकता के इस प्रयत्न में इन दिनों स्थानकवासी समाज के कुछ घटकों ने अपनी असहमति प्रकट की है। अतः रत्नसंघ भी अपनी पूर्व आगम सम्मत परम्परा के अनुसार चातुर्मास से 50वें दिन संबत्सरी पर्व मनायेगा। ऐक्य की दीर्घ प्रतीक्षा के पश्चात् अब यह निर्णय लिया गया है कि पर्युषण पर्व द्वितीय श्रावण कृष्ण 13 सोमवार, 14 अगस्त, 2023 से प्रारम्भ होंगे तथा द्वितीय श्रावण शुक्ला 5 सोमवार, 21 अगस्त 2023 को संबत्सरी महापर्व मनाया जायेगा।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

## साभार-प्राप्ति-स्वीकार

### 1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन

#### (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

- 16404 श्री आयुषजी जैन, जयपुर (राजस्थान)  
 16405 श्री कमल कुमारजी जैन, सवाईमाधोपुर (राजस्थान)  
 16406 श्री अक्षय कुमारजी कांठेड, पाली (राजस्थान)  
 16407 श्री वी. आनन्द कुमारजी, बेंगलोर (कर्नाटक)  
 16408 श्री शान्तीलालजी सुराणा, चेन्नई (तमिलनाडु)  
 16409 श्री ऋषभ कुमारजी जैन (चोरडिया), जोधपुर (राज.)

### जिनवाणी मासिक पत्रिका हेतु साभार

- 21000/-श्री श्रेणिकराजजी, सुनील कुमारजी, सौरभजी, गौरवजी धोका (निमाज वाले), मैसूर, पूज्या माताजी श्रीमती शान्ताबाईजी धर्मसहायिका स्व. श्री नेमीचन्दजी धोका की पुण्यस्मृति में।  
 11000/- श्री अचलचन्दजी जैन एवं परिवारजन, नन्दूरबार की ओर से सप्रेम।  
 10000/-श्री श्रीपालजी, श्रेयांसजी, अलकाजी, श्रेयंकाजी, श्रेयजी मेहता, जोधपुर, पूजनीया श्रीमती उगमकुंवरजी धर्मसहायिका स्व. श्री नेमीचन्दजी मेहता की चतुर्थ पुण्य तिथि 04 अप्रैल, 2023 के उपलक्ष्य में।  
 5100/- श्रीमती मंजूजी-दिलीप कुमारजी लोढा, नवसारी, स्व. श्री दिलीप कुमारजी सुपुत्र श्री सज्जनसिंहजी लोढा की प्रथम पुण्यस्मृति के उपलक्ष्य में।  
 5100/- श्री शैलेशजी, बसन्तजी डोसी, शास्त्रीनगर-जोधपुर, पूज्य पिताजी श्री जौहरीलालजी का 28 फरवरी, 2023 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।  
 5100/- श्री शैलेशजी डोसी, शास्त्रीनगर-जोधपुर, सुपुत्र श्री नितिनजी डोसी का शुभविवाह सौ. परिधिजी सुपुत्री श्री प्रवीणजी जैन-जयपुर के संग 23 अप्रैल, 2023 को सम्पन्न होने के शुभ अवसर पर।  
 5100/- श्री सुरेन्द्र कुमारजी लुंकड़, कोटा, श्री सुरेन्द्र कुमारजी-श्रीमती आशाजी लुंकड़ की 45वीं शादी की सालगिरह के उपलक्ष्य में।  
 2100/- श्री हीरालालजी, नीरजजी, धीरजजी, कार्तिकजी जैन (डेहरा वाले), भरतपुर, स्व. श्रीमती मायाजी जैन की तीसरी पुण्यतिथि 9 मई, 2023 के उपलक्ष्य में।  
 2100/- श्री शान्तीलालजी गाँधी, जयपुर की ओर से सप्रेम।  
 1100/- श्री राजेन्द्र कुमारजी, विमल कुमारजी, पदमजी, अंकितजी जैन (मोहम्मदपुरा वाले) कोटा, चि. शोभितजी जैन का शुभविवाह 29 अप्रैल, 2023 को सम्पन्न होने पर।  
 1100/- श्री महेन्द्रमलजी गांग, सूरत, धर्मसहायिका श्रीमती ललिताजी एवं सुपुत्र श्री अभिषेकजी गांग के जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में।  
 1100/- श्रीमती गीतादेवीजी-श्री अनिल कुमारजी पल्लीवाल, गंगापुरसिटी, वर्षीतप का पारणा सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।  
 1100/- श्री दिलीपजी, विनोदजी, शैलेन्द्रजी, शुभमजी, आदर्शजी जैन (कुण्डेरा वाले), छावनी-कोटा, चि. संदीपजी का शुभविवाह 20 मई को सम्पन्न होने की खुशी में।  
 1100/- श्रीमती हिमानीजी, तनिशाजी जैन, जयपुर, स्व. श्री शैलेन्द्रजी जैन (खजाञ्ची) की द्वितीय पुण्यतिथि 1 जून, 2023 के उपलक्ष्य में।  
 1100/- श्री महेन्द्र कुमारजी चौधरी, चौथ का बरवाड़ा, सुपुत्र श्री रजत कुमारजी जैन के 2 मई, 2023 को शुभविवाह के उपलक्ष्य में।  
 1100/- श्रीमती निशाजी एवं श्री अनिल कुमारजी जैन, वैशाली नगर-जयपुर, सुपुत्र चि. धवलजी का शुभविवाह 5 मई को सम्पन्न होने की खुशी में।  
 1100/- श्री रघुवीर प्रसादजी जैन (समिधी वाले), महारानी फार्म-जयपुर, अपने भ्राता श्री बाबूलालजी जैन का 16 मई को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

### सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु

- 100000/-मैसर्स हीरा ट्रेडिंग एण्ड फाइनेन्स, शिरपुर, पुस्तक चिन्तन के आयाम भाग-3 के नूतन संस्करण के प्रकाशन हेतु अर्थ सहयोग।  
 2100/- श्री शान्तीलालजी गाँधी, जयपुर, सत्साहित्य प्रकाशन हेतु अर्थ सहयोग।

### गजेन्द्र निधि/गजेन्द्र फाउण्डेशन हेतु

- श्री गौतम एस. मेहता, आशीषजी मेहता (पीपाड़ शहर वाले), मुम्बई (महाराष्ट्र)

# बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले अधिकतम 20 वर्ष की आयु के श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है। उत्तर प्रदाता अपने नाम, पते, आयु तथा मोबाइल नम्बर के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड आदि का भी उल्लेख करें।

## शान्ति का मार्ग

### संकलित

राम नगर में महीश्वर नाम का सेठ रहता था। उसके पास अपार धन सम्पत्ति थी। सब तरह का आराम था। परन्तु मन में अशान्ति रहती थी। हर घड़ी उसे कोई न कोई चिन्ता घेरे रहती थी। एक दिन उसके एक मित्र ने त्यागी-तपस्वी साधु जी महाराज के पास जाने की सलाह दी और कहा-“साधु जी महाराज तुम्हें साधना का ऐसा मार्ग बतायेंगे कि तुम्हें शान्ति प्राप्त हो जायेगी।”

एक दिन सेठ साधुजी के पास गया। अपनी सारी परेशानी सुनाकर बोला-“महाराज जी, मेरे जीवन में शान्ति और चैन का अभाव है।” साधुजी ने हिम्मत दिलाते हुए कहा-“घबराओ नहीं। तुम्हारे मन से सारी अशान्ति दूर हो जाएगी। प्रभु के चरणों में ध्यान लगाओ।” ऐसा कहकर साधुजी ने अशान्ति दूर करने का उपाय बता दिया। लेकिन सेठजी का ध्यान प्रभु की भक्ति की अपेक्षा हेरा-फेरी में रहता था। वह ज्यों ही जप या ध्यान करने बैठता, उसका मन इधर-उधर भटकने लगता। इस तरह कई दिन बीत गये। उसने पुनः साधुजी के पास आकर उनको अपनी परेशानी बताई कि प्रभु-ध्यान में मेरा मन नहीं लगता और अन्य बातों में रुचि रहती है। यह सुनकर भी साधुजी ने कुछ नहीं कहा और

चुप रह गये।

एक दिन सेठ साधुजी के साथ विहार कर रहे थे कि उसके पैर में काँटा लग गया। सेठ वहीं बैठ गया और पैर पकड़कर चिल्लाने लगा-“महाराजजी! मैं क्या करूँ? बड़ा दर्द हो रहा है।” साधुजी ने कहा-“चिल्लाते क्यों हो? काँटे को निकाल दो।” सेठ ने मन मजबूत करके काँटे को निकाल दिया। अब उसे आराम मिला।

तब साधुजी ने गम्भीर होकर कहा-“सेठ तुम्हारे पैर में जरा-सा काँटा लगा कि तुम बेहाल हो गये, लेकिन यह तो सोचो कि तुम्हारे भीतर कितने बड़े-बड़े काँटे लगे हुए हैं। लोभ, क्रोध, मोह, ईर्ष्या, द्वेष और न जाने किस किसके? जब तक तुम उन्हें निकालोगे नहीं, भला प्रभु-भक्ति में ध्यान कैसे लगेगा और शान्ति कैसे मिलेगी?” साधुजी के इन शब्दों ने सेठ के अन्तर्हृदय को झकझोर दिया और इन वचनों ने उसके अन्तर में ज्योति जगा दी। उसके अज्ञान का अन्धकार दूर हो गया। उसने यह जान लिया कि मन को स्वच्छ करने के पश्चात् ही प्रभु की भक्ति में मन लगता है और परम शान्ति की प्राप्ति होती है। अब उसे शान्ति का रास्ता मिल गया था।

**शिक्षा**-मन की मलिनता दूर करने पर ही प्रभु की भक्ति में तल्लीनता प्राप्त होती है।

-‘प्रेरक कथाएँ’ से साभार

## दादी-पोता

### श्रीमती निधि दिनेश लोढ़ा

राकेश के पिता बचपन में ही गुजर गये थे। माँ ने पढ़ा-लिखाकर उसे बड़ा किया। एक छोटी बहन भी है, जिसकी कुछ साल पहले शादी हुई है।

राकेश अपनी पत्नी मीना के साथ बेंगलोर में रहता है। यहीं पर आई.टी. कम्पनी में कार्य करता है। राकेश और मीना के एक छोटा बेटा है सार्थक।

राकेश की माँ एक सरकारी स्कूल में अध्यापिका है। कुछ साल की नौकरी शेष है, इसलिये गाँव में ही रहती है।

सार्थक हर छुट्टी में दादी के पास आ जाता। दादी-पोते की आपस में बहुत पटती। वह उसकी पसन्द का खाना बनाती और रात को नई-नई कहानियाँ सुनाती, पर जब भी कभी दादी बेंगलोर आती तो मीना के और उसके आपस में बिल्कुल नहीं बनती। मीना बिना बात उखड़ी-उखड़ी रहती और अपना गुस्सा सार्थक पर निकालती।

अब राकेश की माँ रिटायर्ड भी हो गई, परन्तु बेंगलोर नहीं जाती थी। सार्थक बड़ा हो गया। उसको कार्य क्षेत्र मुम्बई में मिला। एक छोटा फ्लेट किराये पर ले लिया और दादी को भी गाँव से बुलाकर, उनके साथ रहने लगा।

मीना भी सार्थक के पास आना चाहती थी, लेकिन सार्थक ने कहा-“माँ! दादी तो यहीं मेरे पास रहेगी। आपको उनके साथ जमता है तो आ जाओ।”

सार्थक अपनी माँ का भी दिल नहीं दुःखाना चाहता था, लेकिन कभी-कभी बच्चे भी टूटते परिवारों को अपनी समझदारी से बचा लेते हैं।

आखिर सब मिलजुल कर रहने लगे। किस्मत वाले होते हैं, जिन्हें लम्बी उम्र तक दादा-दादी का प्यार मिलता है।

-बी 2402, इण्डियाबुल्स ब्लू, डॉ. ई मोस रोड, वर्ली नाका, मुम्बई-400018 (महाराष्ट्र)

## प्रतिक्रमण-प्रश्नोत्तर

प्र. 1- सूत्रागम किसे कहते हैं?

उत्तर- तीर्थंकर भगवन्तों ने अपने श्रीमुख से जो भाव फरमाए, उन्हें सुनकर गणधर भगवन्तों ने जिन आचाराङ्ग आदि आगमों की रचना की, उस सूत्र रूप आगम को 'सूत्रागम' कहते हैं।

प्र. 2- अर्थागम किसे कहते हैं?

उत्तर- तीर्थंकर परमात्मा ने अपने श्रीमुख से जो भाव प्रकट किये, उस भाव रूप आगम को 'अर्थागम' कहते हैं अथवा सूत्रों के जो हिन्दी आदि भाषाओं में अनुवाद किये गये हैं, उन्हें भी अर्थागम कहते हैं।

प्र. 3- तदुभयागम किसे कहते हैं?

उत्तर- सूत्रागम और अर्थागम ये दोनों मिलकर तदुभयागम कहलाते हैं।

- 'श्रावक सामायिक प्रतिक्रमणसूत्र' पुस्तक से

### Wish before you eat

1. Everyday, for 5 minutes. I will keep the doors open and wait for the Guru deva to come.
2. I will repeat Namaskar Sootra five times before meals.
3. I will keep all the sachitta (with living organisms) items away from the dining table. Like : (A) Raw vegetables, (B) Fruits, (C) Mobile, (D) Watch that has cells, (E) Unboiled water, (F) Items from the fridge, (G) Whole raw almonds, raw ground nuts, raisins, mustard seeds, cumin seeds, sesame seeds etc. which are sachitta.
4. I will think that if an ascetic visits my house, I will offer food to him first and then I will eat. All those who get the opportunity to offer alms are lucky.
5. The food which I am eating is made after killing so many one sensed living beings. I ask for forgiveness from all of them. I think I should leave this food and do penance some times.

6. The energy that I get from this food should be utilized only in good and religious works.

-'Learn Jainism with Fun Part-1'

## Question Answer

*Shri Dulichand Jain*

**Q1.** What is the greatest contribution of Jainism to the world?

**Ans.** To say that ahimsā is the greatest contribution of Jainism to the world culture would not be an exaggeration. Ahimsā is the foremost principle in the evolution of Jainism.

In its various forms such as compassion, love and tolerance, ahimsā has become the life-breath of Indian culture. It has also been embraced by other religions and cultures worldwide.

As mentioned in *Daśavaikālika Sūtra* : “In the all-pervasive spirit of non-violence, other vows of truth, non-stealing, non-possession and celibacy are naturally included.”

-Chennai (Tamilnadu)

## बड़ों के साथ विनय-व्यवहार

*संकलित*

1. बड़ों और गुणीजनों को मान दें।
2. उनके चरण स्पर्श करें।
3. उनका बहुमान करें।
4. उनकी आज्ञा का पालन करें।
5. उनको सुख-साता पहुँचायें।
6. उनकी राय स्वीकारें।
7. उन्हें सम्मान के साथ देखें।
8. हमेशा उनकी प्रशंसा करें।
9. उनकी बात काटने से बचें।
10. उनकी उम्र का सम्मान करें।
11. उनका नेतृत्व स्वीकार करें।
12. खाने से पहले उनसे पूछें।
13. कहने से पहले ही उनके काम करें।

14. उनकी उपस्थिति में अपने फोन को दूर रखें।

15. उनके दोस्तों और प्रियजनों से अच्छी तरह से बोलें।

16. उनके द्वारा किये गए अच्छे कार्य सदैव याद रखें।

17. उन्हें घूरें नहीं।

18. नियमित रूप से उनके पास जायें।

19. उनके आगे अथवा सामने से न चलें।

20. उनके साथ ऊँची आवाज में बात नहीं करें।

21. उनकी सलाह और निर्देश स्वीकारें।

22. वे क्या कह रहे हैं, इस पर ध्यान दें।

23. उनकी बातचीत में सम्मिलित हों।

24. उनको अच्छे समाचार जरूर बताएँ।

25. वे यदि एक ही कहानी दोहरायें तो भी ऐसे सुनें जैसे पहली बार सुन रहे हों।

- 'ज्ञान-सुज्ञानम्' से साभार

## सभी बड़ों से लें आशीष

*डॉ. दिलीप धींग*

रोज सुबह झुकाएँ शीश।  
सभी बड़ों से लें आशीष॥

आशीर्वाद से शक्ति मिलती।  
मन को सच्ची शान्ति मिलती।  
फलती अभिलाषाएँ सारी,  
दिल में नहीं रहती है टीस॥1॥

विनय हमारा धर्म-मूल है।  
सद्गुणों का महकता फूल है।  
प्यार अपार मिलेगा हमको,  
यदि कभी हम करें न रीस॥2॥

विनयवान आगे बढ़ता है।  
सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ता है।  
चहुँ ओर चमकता जैसे,  
श्याम निशा में हो रजनीश॥3॥

फलदार वृक्ष झुक जाते।

जल भरे बादल झुक जाते।  
जो झुकता उसके आगे भी,  
सभी खड़े रहते नतशीश॥4॥

रोज सुबह झुकाएँ शीश।  
सभी बड़ों से लें आशीष॥

-7, अय्या मुदली स्ट्रीट, साहूकारपेट, चेन्नई-600001  
(तमिलनाडु)

## बहुत ऊँचा मिला है धर्म

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

तर्ज :: मिला है वीर का शासन, हमारी खुश  
नसीबी है.....

बहुत ऊँचा मिला है धर्म, हमें उसको समझना है,  
वीर के हम हैं अनुयायी, हमें कुछ कर गुज़रना है।  
बहुत ऊँचा मिला है धर्म...॥टेर॥

अहिंसा, सत्य की बातें, सदा जीवन में ढालेंगे,  
अचौर्य, ब्रह्मचर्य का भी, व्रत निष्ठा से पालेंगे।  
रहें हम दूर परिग्रह से, नहीं इसको भुलाना है,  
बहुत ऊँचा मिला है धर्म...॥1॥

बढ़ाएँ धर्म की महिमा, जगाएँ प्रीति जन-जन में,  
जगाएँ ज्योति श्रद्धा की, गुँजाएँ नाद कण-कण में।  
है ऊँची वीर की वाणी, हमें बहुमान करना है,  
बहुत ऊँचा मिला है धर्म...॥2॥

मुक्ति मञ्जिल के हम राही, बड़ा ही फक्र है हमको,  
देवताओं से भी ऊँचा, मिला मानव का भव हमको।  
मिटाएँ रोग भव-भव के, सच्चा पुरुषार्थ करना है,  
बहुत ऊँचा मिला है धर्म...॥3॥

दुबारा पाएँ इसको, बड़ा मुश्किल है यह कहना,  
कद्र कर लें हम इसकी, धर्म से दूर मत रहना।  
गुरु की शरण में जाकर, यह बेड़ा पार करना है,  
बहुत ऊँचा मिला है धर्म...॥4॥

-जन्ता साड़ी सेण्टर, फरिश्ता कॉम्प्लेक्स, स्टेशन  
रोड, दुर्ग-49001 (छत्तीसगढ़)

## पर्यावरण एवं शाकाहार

श्री सक्षम जैन

आज सम्पूर्ण विश्व के मानचित्र पर उभरने वाले  
विचारणीय मुद्दों में एक प्रमुख मुद्दा है-पर्यावरण और  
प्रकृति पर गहराते संकट का समाधान कैसे हो?  
वातावरण की शुद्धता को पुनः कैसे प्राप्त किया जाय?  
विश्वविद्यालयों तथा अन्य शिक्षण संस्थानों में पर्यावरण  
विषयक विशेष अध्ययन और अनुसन्धान हो रहे हैं,  
किन्तु आश्चर्य है कि पर्यावरण की शुद्धि में महत्वपूर्ण  
भूमिका निभाने वाला विषय 'आहार की सात्त्विकता  
और शुद्धता' की ओर किसी का ध्यान नहीं जा रहा है।  
बढ़ती तामसिक प्रवृत्ति पर्यावरण प्रदूषण का मूल कारण  
है और उसके भी मूल में है तामसिक आहार 'मांसाहार'।  
जीव जन्तु प्रकृति की सुन्दर कृति हैं, ये रहेंगे तो  
प्राकृतिक सन्तुलन बना रहेगा और यदि इनका संहार  
होता रहा तो वह दिन दूर नहीं, जब विनाश का पूरा  
काला साया हमारे सामने छा जायेगा। वर्तमान स्थिति भी  
कम चिन्तनीय नहीं है।

यह तो प्रत्यक्ष सिद्ध है कि मांसाहार के बिना  
जीवन सानन्द व्यतीत हो सकता है। मांसाहार मात्र फैशन  
और जिह्वा के स्वाद के लिए किया जाता है, न कि  
जीवनयापन के लिए। चिन्तनीय विषय यह है कि आज  
जबकि हमारा ऐसा करना पर्यावरण प्रकृति के लिए  
घातक हो रहा है तब उसका इतना आग्रह क्यों किया जा  
रहा है?

भारतीय संस्कृति और विश्व की प्रगतिशील  
संस्कृति को देखते हुए परिवार के सदस्यों को समझाना  
चाहिए कि शाकाहारी होना सभ्य प्रकृति और सुरक्षित  
शुद्ध प्रकृति की ओर कदम बढ़ाना है। ताकि हिंसा के  
बढ़ते हुए कदम रुकें, प्रकृति सुरक्षित रहे और हमारा  
अमन चैन, सुकून, शान्ति और अस्तित्व बच सके।

-ए 9, आचार्यश्री हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान,  
महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015

## रुचि का प्रभाव

श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 जुलाई, 2023 तक जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपना नाम, आयु, मोबाइल नम्बर तथा पूर्ण पते के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड इत्यादि का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

अजय पढ़ाई में होनहार बालक था। उसके स्कूल की पढ़ाई का स्तर बहुत अच्छा था। एक ही कक्षा कई विभागों में विभाजित थी। वर्णानुसार अजय 'अ' विभाग में था। सभी विभागों में वह हमेशा परीक्षा परिणाम में प्रथम स्तर पर रहता था। स्कूल का एक अच्छा नियम था, जो बच्चा कक्षा में प्रथम स्तर पर आता है उसके माता-पिता स्कूल की ओर से वार्षिक उत्सव पर उस कक्षा के बच्चों को पुरस्कार वितरित करेंगे। वार्षिक उत्सव पर सभी अभिभावकों को निमन्त्रित किया जाता था। स्कूल सजाया जाता था। उस दिन बच्चों का अच्छा-सा मेला लग जाता था। बच्चे गर्व अनुभव करते थे। उनके मुँह पर हँसी झलकती थी। दसवीं कक्षा में सी.बी.एस.ई. बोर्ड में अजय ने मेरिट में प्रथम स्थान प्राप्त किया, इसलिये उसके माता-पिता के हाथों से पुरस्कार दिलाया गया। अजय के माता-पिता फूले नहीं समा रहे थे। अजय भी स्वयं की सफलता पर आत्म विभोर हो रहा था। चारों ओर से करतल ध्वनि होने लगी।

ग्यारहवीं कक्षा में अजय को ऐच्छिक विषय का चयन करना था। अजय को डॉक्टर बनना था। इसलिये उसने जीवविज्ञान विषय चुना।

अजय-“पिताश्री! मैं डॉक्टर बनना चाहता हूँ।

मेरी इच्छा है कि मैं असाध्य रोगों का अनुसन्धान कर नई युक्ति लाकर लोगों को रोग से मुक्ति दिलाऊँ। मैं पढ़ाई का सदुपयोग कर जनता की सेवा करूँ।”

पिताश्री-“जो तू सोच रहा है वह कार्य इतना सरल नहीं है। डॉक्टरी में समय अधिक लगता है, खर्चा भी अधिक आता है। पुस्तकें बहुत महँगी हैं। मेरी आय भी इतनी नहीं है।”

अजय-“आप केवल कॉलेज शुल्क जमा करवा देना। मैं पुस्तकालय में पढ़ लिया करूँगा। वहाँ शान्त वातावरण में नोट्स तैयार कर लूँगा। घर के लिए पुस्तकें नहीं लूँगा। इससे पूरा न पड़ेगा तो ट्यूशन पढ़ा कर चला लूँगा।”

पिताश्री-“तुझे सी.ए. ही करवाऊँगा, मैंने यह निर्णय लिया है। घर की आर्थिक स्थिति सुधर जाएगी।”

पिता के मुँह से आर्थिक स्थिति का प्रश्न आया तो अजय ने अपने विचार बदलने की सोची। लेकिन वर्षों से डॉक्टर बनने के विचार संजोए हुए थे उसके उस लक्ष्य को छोड़ने के विचार से उसे बहुत धक्का लगा। उसने पुनः अपने विचार पिता के सामने रखे।

अजय-“मैं अथक परिश्रम करूँगा। मैं ट्यूशन कर आपकी आर्थिक सहायता करूँगा।” परन्तु पिता के निर्णय के कारण उसने अपनी इच्छा दबा ली और मानस

बदल लिया।

उसके पिताजी ने सी.ए. की पुस्तकें लाकर उसके सामने रख दी। अजय पुस्तकें देख बावला-सा हो गया, लेकिन पिता का निर्णय शिरोधार्य था। नियमपूर्वक पढ़ाई करता था, लेकिन मन नहीं लगता था। सी.ए. की परीक्षा समीप आ गई, लेकिन वह पुस्तक के पन्ने उलटता रहता था। व्यवस्थित रूप से पढ़ाई नहीं हुई। सी.ए. की परीक्षा का प्रथम प्रश्न-पत्र हाथ में लिया, तबीयत बिगड़ने लगी। असफल रहा।

अजय का परीक्षा परिणाम पिता ने देखा तो वे हक्के-बक्के रह गए। साहस खोकर बेटे को कहा- “साल भर तूने मक्खियाँ मारी। ऐसा परिणाम देख घिन आ रही है। लोगों को कैसे मुँह दिखाऊँ। तू! निकम्मा है, पढ़ाई छोड़कर कहीं पर छोटी-मोटी नौकरी कर ले।”

अजय अत्यन्त दुःखी था, ऊपर से पिताजी के शब्दों की बौछार से रहा-सहा धैर्य टूट गया। खाना-पीना छूट गया। मित्रों-परिजनों से मिलना-जुलना बन्द हुआ, कमरे में घुटता रहता था। उसके मुँह की चमक, हँसी ओझल हो गई। स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ने लगा।

उसके पिताजी के मित्र नवीन को जब परीक्षा परिणाम पता चला तो वे बहुत दुःखी हुए। उनसे रहा नहीं गया। वे मित्र के घर चले आए। नवीन मनोविज्ञान के प्रोफेसर थे। उनके मन में शंका हुई कि इस बच्चे के साथ गलत हुआ है।

दोनों मित्रों में अजय के अनुत्तीर्ण होने के विषय में बातें हुईं।

अजय के पिता अक्षय ने कहा- “नवीन! इस बच्चे ने पता नहीं क्या किया? समझ में नहीं आ रहा है।”

नवीन- “हर साल मेरिट में आने वाले बच्चे के साथ क्या घटी? उसे बुला, मैं उससे बात करूँगा।”

नवीन (ढाढ़स बन्धाते हुए)- “अजय! मुँह ऊपर करो, बेटा! जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। मन छोटा करने से उमंग चली जाती है। आगे बढ़ने की जिज्ञासा लाओ।”

अजय- “आगे बढ़ने के सारे रास्ते बन्द हो गए।” पिताश्री ने पढ़ाई छोड़ने के लिए कह दिया। मुझे नौकरी करनी होगी। कम पढ़े-लिखे को कैसे नौकरी मिलेगी, असमञ्जस में पड़ा हूँ।”

नवीन- “नौकरी का चक्कर मस्तिष्क से निकाल दे। आगे क्या करना है?”

अजय- “छोटेपन से ही मैंने मानस बना लिया था कि मुझे डॉक्टर बनना है। यह बू निकल नहीं रही है। मैं हतप्रभ हो गया हूँ। पापा ने सी.ए. करने का आग्रह किया। मैंने पापाजी को डॉक्टरी करने के लिए बहुत मनाया, पर उन्होंने सी.ए. करने पर ही जोर दिया। सी.ए. की पढ़ाई रास नहीं आई।”

नवीन- “अक्षय! लड़का तो बहुत होनहार है। सही दिशा नहीं मिलने के कारण विचलित हो गया है। इसको डॉक्टर बनने का अवसर दिया जाय।”

अक्षय- “पूत का पग पालने में दिख रहा है। अब समय गँवाना व्यर्थ होगा।”

नवीन- “यह साधारण बालक नहीं है। तेरी परख सही नहीं है। हीरे को काँच का टुकड़ा बना डाला। इसको पी.एम.टी. में प्रवेश दिला दे, फिर इसकी चमक आँकना। तू सुन! आजकल सबसे ज्यादा आत्म-हत्याएँ छात्रों में हो रही हैं, क्योंकि उनको सही मार्ग-दर्शन नहीं मिलता है। माता-पिता की अति महत्त्वाकांक्षा के कारण, उसे पूरी न होने पर भावावेश में आकर फाँसी लगा लेते हैं। बच्चों के संरक्षक को बच्चों की योग्यता, रुचि को ध्यान में रखकर विषय का चयन करना चाहिए। जबरदस्ती थोपा नहीं जाना चाहिए अन्यथा बच्चे भटक जाते हैं। वे बुरी लत में पड़ जाते हैं, फिर उन नवयौवनों को सम्भालना भारी पड़ जाता है। पढ़ाई के मोड़ को गूढ़ और सूक्ष्म समझ कर निर्णय लेना चाहिए। समय और बाजार की माँग का भी ध्यान रखना चाहिए। बारहवीं की अंकतालिका पर पैनी नज़र डालनी चाहिए।”

अक्षय को समझाकर, अजय को पी.एम.टी. का फार्म भरवा दिया। अजय को चाह की राह मिल गई।



पी.एम.टी. परीक्षा में अजय प्रथम मेरिट ले आया। उसके माता-पिता अवाक् रह गए। वे फूले नहीं समा रहे थे। नवीन चाचा की हार्दिक इच्छा पूर्ण हो गई। अच्छी रैंक आने से अजय को छात्रवृत्ति भी मिल गई।

अजय डटकर पढ़ाई करने लगा। वह अच्छा निपुण कार्डियोलॉजिस्ट बन गया। लक्ष्मी पाँव छूने लगी। बाईपास सर्जरी और स्टेण्ड लगाना उसके बाएँ हाथ का खेल था।

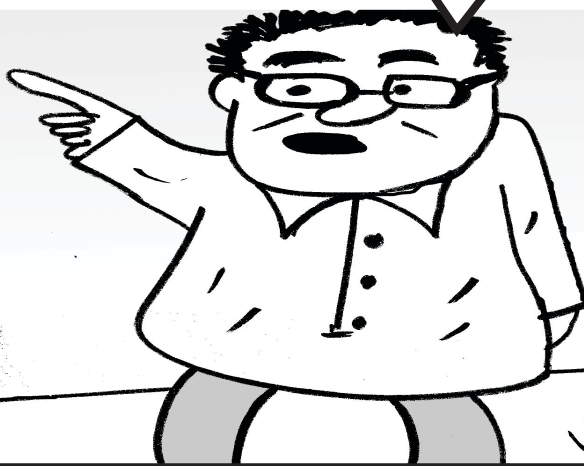
डॉक्टरी में उत्तीर्ण होने पर सबसे पहले नवीन चाचा से आशीर्वाद लिया। निर्धनों की सर्जरी निःशुल्क करने का ध्येय बनाया। उसने उन्हें बताया कि मैं आपका आभारी हूँ, आपका ऋण निर्धनों की सेवा कर उतारूँगा।

माताजी-पिताजी भी बहुत प्रसन्न हैं।

-ई-123, नेहरू पार्क, जोधपुर (राज.)

- प्र. 1 अजय के माता-पिता फूले क्यों नहीं समा रहे थे ?  
 प्र. 2 रुचि के विपरीत कार्य जीवन में किस तरह प्रभाव डालता है ?  
 प्र. 3 अजय के पिता की क्या हठ थी और क्यों ?  
 प्र. 4 अजय के परीक्षा-परिणाम पर बुरा प्रभाव किस कारण से पड़ा ?  
 प्र. 5 नवीन ने किस तरह अजय को अपनी मज्जिल दिलाने में सहयोग प्रदान किया।  
 प्र. 6 प्रस्तुत कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

जीव रूपी कपड़े पर जो कर्म रूपी मैल जम जाता है उसे ज्ञान रूपी पानी तथा तप-संयम रूपी साबुन से धोकर कर्म मैल दूर करने को 'निर्जरा' कहते हैं।



अशोक सीसीमाल

**बाल-स्तम्भ [अप्रैल-2023] का परिणाम**

जिनवाणी के अप्रैल-2023 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'स्वजन कर्मफल में हिस्सेदार नहीं होते' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	रोहित जैन, आलनपुर-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	24
द्वितीय पुरस्कार-300/-	अनिका जैन, जयपुर (राजस्थान)	23
तृतीय पुरस्कार- 200/-	मुदिता जैन, सुमेरगंजमण्डी (राजस्थान)	22
सान्त्वना पुरस्कार (5) - 150/-	रोहन राजेश अलीझाड़, नाशिक (महाराष्ट्र)	21
	अमूल्य जैन, जोधपुर (राजस्थान)	21
	वृद्धि जैन, देई-बूँदी (राजस्थान)	21
	सिद्धार्थ जैन, सरवाड़ (राजस्थान)	21
	अरनव चोरड़िया, जयपुर (राजस्थान)	21

**बाल-जिनवाणी मई, 2023 के अंक से प्रश्न (अन्तिम तिथि 15 जुलाई, 2023)**

1. संन्यासी ने युवक को आशीर्वाद स्वरूप क्या दिया और क्यों ?
2. मानवभवं को किसके समान बताया है और क्यों ?
3. बुजुर्गों को पुराने जमाने के सीसी टीवी कहने के पीछे क्या कारण है ?
4. 'स्मार्ट फोन या मीठा ज़हर' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।
5. How Jainism plays its role in environmental protection?
6. What is the real meaning of peace?
7. 'समय बड़ा बलवान' कविता में निहित सन्देश लिखिए।
8. कौनसे कार्य हमारी पुण्यवानी घटाते हैं ? कविता के आधार पर लिखिए।
9. आगम साहित्य अन्य साहित्यों से किस प्रकार भिन्न है ?
10. दिए गए शब्दों के तीन-तीन पर्यावाची लिखिए-बुर्जुग, सञ्चित, आडम्बर और कुदरत।

**बाल-जिनवाणी [मार्च-2023] का परिणाम**

जिनवाणी के मार्च-2023 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-600/-	नमिष जैन, बारों (राजस्थान)	39
द्वितीय पुरस्कार-400/-	दीक्षा सायर, भीलवाड़ा (राजस्थान)	38
तृतीय पुरस्कार- 300/-	कु. तनुजा रमेश जैन, भुसावल (महाराष्ट्र)	37
सान्त्वना पुरस्कार (3)- 200/-	झील जैन, जोधपुर (राजस्थान)	36
	मौलिक जैन, जयपुर (राजस्थान)	36
	निकिता जैन, मसूदा-अजमेर (राजस्थान)	36

**बाल-जिनवाणी, बाल-स्तम्भ के पाठक ध्यान दें**

बाल-जिनवाणी एवं बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रत्येक अंक में दिए जा रहे प्रश्नों के उत्तर प्रदाताओं से निवेदन है कि वे अपना नाम, पूर्ण पता, मोबाइल नम्बर, बैंक विवरण-(खाता संख्या, आई.एफ.एस.सी. कोड, बैंक का नाम इत्यादि) भी साथ में स्पष्ट एवं साफ अक्षरों में लिखकर भिजवाने का कष्ट करें ताकि आपका पुरस्कार उचित समय पर आपको प्रदान किया जा सके। जिन्हें अब तक पुरस्कार राशि प्राप्त नहीं हुई है, वे श्री अनिल कुमारजी जैन से (मो. 9314635755) सम्पर्क कर सकते हैं।

-सम्पादक

अहंकार के वृक्ष पर  
विनाश के फल लगते हैं।



ओसवाल मेट्रीमोनी बायोडाटा बैंक

जैन परिवारों के लिये एक शीर्ष वैवाहिक बायोडाटा बैंक

विवाहोत्सुक युवा/युवती  
तथा पुनर्विवाह उत्सुक उम्मीदवारों की  
एवं उनके परिवार की पूरी जानकारी  
यहाँ उपलब्ध है।

ओसवाल मित्र मंडल मेट्रीमोनियल सेंटर

४७, रत्नज्योत इंडस्ट्रियल इस्टेट, पहला माला,  
इरला गांवठण, इरला लेन, विलेपार्ले (प.), मुंबई - ४०० ०५६.

☎ 7506357533 📞 : 9022786523, 022-26287187

ई-मेल : [oswalmatrimony@gmail.com](mailto:oswalmatrimony@gmail.com)

सुबह १०.३० से सायं ४.०० बजे तक प्रतिदिन (बुधवार और बैंक छुट्टियों के दिन सेंटर बंद है)

गजेन्द्र निधि

# आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

Acharya Hasti Meghavi Chatravritti Yojna Has Successfully Completed 13 Years And Contributed Scholarship To Nearly 4500 Students. Many Of The Students Have Become Graduates, Doctors, Software-Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spirituals Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. We Have Launched Membership Plans For Donors.

**We Have Launched Membership Plans For Donors**

MEMBERSHIP PLAN (ONE YEAR)		
<b>SILVER MEMBER</b> RS. 50000	<b>GOLD MEMBER</b> RS. 75000	<b>PLATINUM MEMBER</b> RS. 100000
<b>DIAMOND MEMBER</b> RS. 200000		<b>KOHINOOR MEMBER</b> RS. 500000

**Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.**

The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

The Bank A/C Details is as follows - Bank Name & Address - AXIS BANK Anna Salai, Chennai (TN)  
A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund IFSC Code - UTIB0000168  
A/c No. 168010100120722 PAN No. - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनाये रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पूण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्गों एवं अर्थ सहयोग एकत्रित करने करने वालों के नाम की सूची -

विशेष आधार सहयोगी - श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन

KOHINOOR MEMBER (RS.500000)	GOLD MEMBER (RS. 75000)
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई। युवारत्न श्री हरीश जी कवाड, चैन्नई। श्रीमती इन्द्राबाई सूरजमल जी भण्डारी, चैन्नई (निमाज-राज.)।	श्रीमती पुष्पाबाई सुभाषचन्द जी बागरेचा, शिरपुर (महा.) श्रीमान् सम्पतराज जी, सपनाजी, दिनेशजी राजेशजी सुराणा, जोधपुर-बैंगलोर श्रीमान् संदीप मांगीलाल जी मुणोत, शिरपुर (महाराष्ट्र) श्रीमान् सज्जनराज जी महेन्द्रजी राजेश जी बाफना, वडोदरा (गुजरात)
DIAMOND MEMBER (RS. 200000)	PLATINUM MEMBER (RS. 100000)
M/s Prithvi Exchange (India) Ltd., Chennai श्रीमान् सुगनचन्द सा सरोजाबाई जी मुथा, डबल रोड, बैंगलोर SILVER MEMBER (RS. 50000) श्रीमती प्रेमलता सोहनलाल जी बोथरा, जलगांव (भोपालगढ़) श्रीमान् अमीरचन्द जी जैन (गंगापुरसिटी वाले), मानसरोवर, जयपुर श्रीमान् प्रकाशचन्द शायरचन्द जी मुथा, औरंगाबाद (महा.) श्रीमती लाडकंवर जी धर्मपत्नी श्रीमान् अमरचन्द जी सांड, विजयनगर, राजस्थान श्रीमान् पारसमलजी सुशीलजी बोहरा, तिरुवन्नमलई (तमिलनाडू) श्रीमान् सिद्धार्थजी भण्डारी, जागृति नगर, इन्दौर (मध्य प्रदेश) श्रीमान् हेमन्त अरविन्द जी सिधवी, चारनी रोड, मुम्बई श्रीमती लता विरेन्द्र जी सुराणा, मुम्बई (नागौर वाले) श्रीमान् मदनलाल मैनाबाई जी बोहरा, आवडी-चैन्नई	श्रीमान् दूलीचन्द बाघमार एण्ड संस, चैन्नई। श्रीमान् दलीचन्द जी सुरेश जी कवाड, पून्नामल्लई। श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् अम्बालाल जी बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई। श्रीमान् सम्पतराज जी राजकवंर जी भंडारी, ट्रिपलीकेन-चैन्नई। प्रो. डॉ. शैला विजयकुमार जी सांखला, चालीसगांव (महा.)। श्रीमान् विजयकुमार जी मुकेश जी विनीत जी गोठी, मदनगंज-किशनगढ़। श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, तमिलनाडू। श्रीमान् जी. गणपतराजजी, हेमन्तकुमारजी, उपेन्द्रकुमारजी, कोयम्बदूर (कोसाणा वाले) श्रीमती कंचनजी बापना, श्री संजीव जी बापना, कलकत्ता (जोधपुर वाले) श्रीमान् पारसमलजी सुशीलजी बोहरा, तिरुवन्नमलई (तमिलनाडू) श्रीमती शान्ता डॉ. उमरावसिंह जी लोढा, रावजी की हवेली, जोधपुर स्व. श्रीमान् रिषभराज जी सज्जनकंवर जी भण्डारी, सरदारपुरा, जोधपुर श्रीमान् राजेन्द्र झूमरमल जी बाघमार, चैन्नई

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें - M.Harish Kavad - No. 5, Car Street, Poonamallee, CHENNAI-56  
छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें - मनीष जैन, चैन्नई (+91 95430 68382)

‘छोटा सा चिन्तन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का’

## जिनवाणी-प्रकाशन-योजना के लाभार्थी बनें

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा जिनवाणी पत्रिका के प्रकाशन हेतु एक योजना प्रारम्भ की गयी है। जिसके अन्तर्गत एक-एक लाख रुपये की राशि प्रदान करने वाले दो महानुभावों के द्वारा प्रेषित प्रकाश्य सामग्री एक-एक पृष्ठ में एक माह प्रकाशित की जाती है। इसके साथ ही वर्ष भर उनके नामों का उल्लेख भी जिनवाणी में किया जाता है। सन् 2020 की जुलाई से अनेक महानुभाव इस योजना में जुड़े हैं, उन सबके हम आभारी हैं।

अर्थसहयोगकर्ता जिनवाणी (JINWANI) के नाम से बैंक प्रेषित कर सकते हैं अथवा जिनवाणी के निम्नाङ्कित बैंक खाते में राशि नेफ्ट/नेट बैंकिंग/चैक के माध्यम से सीधे जमा करा सकते हैं।

बैंक खाता नाम-JINWANI, बैंक-State Bank of India, बैंक खाता संख्या-51026632986, बैंक खाता-SAVING Account, आई.एफ.एस. कोड-SBIN0031843, ब्रांच-Bapu Bazar, Jaipur

राशि जमा करने के पश्चात् राशि की स्लिप एवं जमाकर्ता का पेन नं., मण्डल कार्यालय को प्रेषित करने की कृपा करें, जिससे आपकी सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके। 'जिनवाणी' के खाते में जमा करायी गई राशि पर आपको आयकर विभाग की धारा 80G के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगी, जिसका उल्लेख रसीद पर किया हुआ है।

### वित्तीय वर्ष 2022-23 हेतु लाभार्थी

- (1) न्यायाधिपति श्री प्रकाशजी टाटिया, जोधपुर।
- (2) श्री कनकराजजी कुम्भट, जोधपुर।
- (3) श्री पूनमचन्दजी जामड़ (किशनगढ़ वाले), जयपुर।
- (4) श्री सुशीलजी बाफना, जलगाँव।
- (5) श्री सोहनलालजी, गौतमचन्दजी हुण्डीवाल, चेन्नई।
- (6) मैसर्स अमरप्रकाश फाउण्डेशन प्रा. लि., चेन्नई।
- (7) श्री सुबाहु कुमारजी, मनोजजी, मनीषजी (सी.ए.) जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
- (8) श्री श्रीपाल मलजी-श्रीमती मधुजी, श्री चिरागजी-श्रीमती लक्ष्म्याजी सुराणा (नागौर वाले), चेन्नई
- (9) श्री कनकराजजी, महेन्द्रजी, देवांशजी कुम्भट, जोधपुर-मुम्बई
- (10) सी. आर. कोठारी मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि), जयपुर-वडोदरा-मुम्बई
- (11) नाहर परिवार मुम्बई, भोपाल, इन्दौर, बरेली।
- (12) सौ. प्रेमलताजी श्री सोहनलालजी, सौ. रंजनाजी श्री महावीरजी बोथरा, जलगाँव (महाराष्ट्र)
- (13) श्रीमती लाडुश्रीजी, राजीवजी, संजीवजी, सन्दीपजी नाहर, सूरत (गुजरात)

### वित्तीय वर्ष 2023-24 हेतु लाभार्थी

- (1) श्री जी. गणपतराजजी, हेमन्तजी, उपेन्द्र कुमारजी बाघमार, चेन्नई-कोयम्बटूर (तमिलनाडु)  
-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596

उदारमना लाभार्थियों की अनुमोदना एवं  
स्वेच्छा से नये जुड़ने वाले लाभार्थियों का  
हार्दिक स्वागत।

संसार की समस्त सम्पदा और भोग  
के साधन भी मनुष्य की इच्छा  
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती



आवश्यकता जीवन को चलाने  
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन  
को बिगाड़ने वाली है,  
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा



जिनका जीवन बोलता है,  
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :  
**Rajeev Nita Daga Foundation Houston**



# JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :

NUTRITION FOODS

BREAKFAST CEREALS

FORTIFIED RICE KERNELS

WHOLE & BLENDED SPICES

VITAMIN AND MINERAL PREMIXES

*Special Foods for undernourished Children  
Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes*

*With Best Wishes :*

## JVS Foods Pvt. Ltd.

G-220, Sitapura Ind. Area,  
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)

Tel.: 0141-2770294

Email-jvsfoods@yahoo.com

Website-www.jvsfoods.com

FSSAI LIC. No. 10012013000138





**WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T  
FORCE YOU TO CHOOSE.  
BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.**

Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.

 **022 3064 3065**



ARTIST'S IMPRESSION

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT  
**IMMENZA**  
THANE (W)  
EVERYTHING UNDER THE SUN

**TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065**

**Site Address:** Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office:** 101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | **Tel:** +91 22 3064 5000 | **Fax:** +91 22 3064 3131 | **Email:** sales@kalpataru.com | **Website:** www.kalpataru.com

In association with



This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. \*Conditions apply.

*If undelivered, Please return to*

**Samyaggyan Pracharak Mandal**  
Above Shop No. 182,  
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)  
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - अशोक कुमार सेठ द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन